उम्मेद है अक्षय पद की

—सम्पादिका—

काश्मीर-प्रचारिका आध्यात्मयोगिनी महासतीजी
उमरावकुंवर जी म. अर्चना की अन्तेवासिनी, उग्र तपस्विनी

आर्या उम्मेद कुंवरजी म. सा.

—प्रकाशक—
श्री मिश्रीमल मुणोत परिवार, ब्यावर

प्रथमावृत्ति
११००

वि. स.
२०४९

लागत से कम
मूल्य १५ रु.

उम्मेद है अक्षयपद को

सम्पादिका
आर्या उम्मेद कुवरजी म. सा

प्रकाशक
श्री मिश्रीमल मुणोत परिवार, ब्यावर

प्रथम संस्करण
वि स २०४९
जुलाई १९९२

मूल्य लागत से कम व शुद्ध भाव

प्राप्ति स्थान

मुनि श्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन
पीपलिया बाजार, ब्यावर

उम्मेद है अक्षय पद की

आशीर्वचन

जिन शासन की लाडली, सति मडंल का हार ।
महासती उम्मेदजी, जन जन ने प्रियकार ।।

संसारी वैभव तज्यो, मात-पिता परिवार ।
आतम साधना में लगी, पंच महाव्रत धार ।।

तपस्या में तन को तपा, लीनी ममता मार ।
अन्न छोड्यां १५ वर्ष हुया, समता रस भडांर ।।

ज्ञान ध्यान में रम रया, शान्त दान्त गुण सार ।
भव जीवां के कारणे, स्तवन रच्या हितकार ।।

सकल मनोरथ पूर्ण हो, पग-पग सुयश अपार ।
यही मेरी शुभ कामना, सफल करो अवतार ।।

—साध्वी उमरावकुंवर "अर्चना"



उग्र तपस्विनी महासती श्री उम्मेदकँवरजी म. सा.

उत्कृष्ट साधना की धनी, घोर तपस्विनी

महासती श्री उम्मेद कुँवरजी म. सा.

(संक्षिप्त परिचय)

☐ जैन आर्या डा० सुप्रभा 'सुधा'

विश्व वंदनीय आर्यावर्त के महामानव महाश्रमण प्रभु महावीर के पुनीत शासन रूपी उद्यान में अनेकानेक साधक रूपी पुष्प अपने सद्गुणों का सौरभ कोष लुटाते रहे हैं। साधकों की वहुत लम्बी परम्परा रही है उसी परम्परा में हमारे चारित्र चूड़ामणि मरुधरा मन्त्री स्वामीजी पूज्य श्री हजारीमल जी म. सा., शासन सेवी पूज्य गुरुदेव स्वामीजी श्री व्रजलाल जी म. सा., श्रमण-संघीय बहुश्रुत पं. रत्न युवाचार्य पूज्य श्री मिश्रीमल जी म. सा. 'मधुकर' भी आते हैं।

उनकी अन्तेवासिनी, महायोगेश्वरी, मालव ज्योति परम विदुषी महासती पूज्य गुरुवर्या श्री उमरावकुँवरजी म. सा. 'अर्चना' की सुशिष्या एवं मेरे ज्येष्ठ गुरुबहन घोरतपस्विनी महासती श्री उम्मेद कुँवर जी म. सा. ने 'उम्मेद है अक्षय पद की' नामक पुस्तक का संकलन एवं सम्पादन किया है जो स्तुत्य है। आपका श्रम सराहनीय है।

आपका जन्म ब्यावर के धर्मनिष्ठ मुणोत परिवार में समाज के श्रेष्ठ रत्न, दानवीर श्री मिश्रीमल जी सा. की धर्मपत्नी सरल-हृदया श्रीमती मिश्रीबाई की कुक्षि से संवत् १९७८ मृगसर शुक्ला चतुर्दशी को रोहिणी नक्षत्र में हुआ। आपका जन्म नाम सुरमाबाई रखा गया। बाल्यकाल लाड़-प्यार एवं आनन्द में व्यतीत होने लगा।

आपके चार भाई श्रीमान् मूलचन्द जी सा , श्री गुलावचन्दजी सा श्री लक्ष्मीचन्द जी सा , श्री केवलचन्द जी सा एव एक बहिन सौभाग्यवती श्री मोहनवाई है जिनका विवाह जयपुर मे हुआ ।

आपका विवाह बारह वर्ष की वय मे पाली निवासी माननीय सेठ केसरीमलजी सा धारीवाल के सुपुत्र कुँवर श्री कुन्दनमल जी साहब के साथ हुआ । अभी देवर श्री मोहनलाल जी सा श्री पुख राज जी सा धारीवाल धर्मनिष्ठ श्रावक हैं। ससुराल मे कुछ समय तो अत्यन्त आनन्दपूर्वक व्यतीत हुआ, चिन्ता या दु ख क्या होता है इसे आपने स्वप्न मे भी नही जाना। कर्मगति कभी टलती नही है। विवाह सवत् १९९० मे फाल्गुन शुक्ला चतुर्थी को हुआ और सवत् १९९२ मे वैशाख शुक्ला प्रतिपदा को कुँवर श्री कुन्दनमल जी सा का १५ साल की उम्र मे दिल्ली मे आकस्मिक निधन हो गया। आप बडे धर्मानुरागी, व्यापार कुशल एव दयालु थे। आपके अचानक देहावसान से ससुराल एव पीहर के सभी सदस्य हत प्रभ हो गए तथा शोक सागर मे डूब गए। उस वक्त आपकी उम्र केवल तेरह वर्ष की थी। कुछ ही समय पश्चात् ससुर जी एव पिताजी का भी देहावसान हो गया। आघात पर आघात लगा किन्तु समय घाव भरता ही है। इस प्रकार कुछ वर्ष तो बडे ही सघर्षमय रहे।

वि स २००१ मे आपने पूर्ण श्वेत खद्दर के वस्त्र पहनना प्रारम्भ कर दिया तथा त्याग-तपस्या एव व्रतादि से सादगीमय जीवन विताने लगे। जीवन की अनश्वरता एव ससार की असारता को जान दीक्षा ग्रहण करने का दृढ निश्चय कर लिया। लेकिन दीक्षा की आज्ञा मागते ही पीहर एव ससुरालवालो—दोनो पक्षो के कान खडे हो गये। यहाँ तक कि आपको अपने निश्चय से डिगाने का यत्न करने लगे। परिवार वालो का तिरस्कार एव अपमान भी

सहना पड़ा लेकिन अन्त:जागृत रहकर व्रत, उपवास, वेला, तेला अठाइयाँ आदि तपस्या करते रहे।

आपके भाई श्री गुलावचन्द जी सा. एवं श्री लक्ष्मीचन्द जी सा. मुणोत दोनों ही दीक्षित होने से इन्कार करते रहे। यहाँ तक कि उन्होंने मरुधरा मन्त्री प्रवर्त्तक पूज्य गुरुदेव स्वामीजी श्री हजारी मल जी म. सा. से वचन लिया कि जब तक सुरमावाई को पीहर व ससुराल दोनों पक्ष वाले आज्ञा नहीं देगे मैं उन्हें दीक्षा नहीं दूंगा। मैं ही नहीं, मेरे कोई शिष्य शिष्याएँ एवं राजस्थान के कोई भी साधु-साध्वी आपकी बिना आज्ञा के दीक्षा नहीं देंगे।

किन्तु संसार से विरक्तात्मा को कौन बाँधकर रख सकता है। आज्ञा न मिलने पर भी संवत् २००८ के अगहन शुक्ला प्रतिपदा को आपने अपना केशलूचन कर साध्वी के समान वस्त्र पहनकर रजोहरणादि लेकर अपना आहार स्वयं ही घर-घर से लाकर ग्रहण करने लगे। तथा साधु वृत्ति का पालन करते हुए पूज्य गुरुवर्या महासती श्री उमराव कुँवर जी म. सा. 'अर्चना' के साथ विचरण करना प्रारम्भ कर दिया।

कहा जाता है कि दृढ़ इच्छा शक्ति होने पर स्वयं भगवान् को भी भक्त की सहायता करनी ही पड़ती है। पूज्य महासती जी म. की दृढ़ इच्छाशक्ति और प्रभु भक्ति ने जैसे बाध्य कर दिया कि उनकी दीक्षा लेने की भावना वे पूर्ण करे। संयोग ऐसा बना कि जब पूज्य गुरुवर्या श्री 'अर्चना' जी म. सा. के साथ आप किशनगढ़ पधारे थे, उन्ही दिनों वहाँ परम श्रद्धेय १००८ आचार्य श्री पूज्य आत्माराम जी म. सा. के सुशिष्य श्री विमलमुनि जी म. सा. सादड़ी-सम्मेलन में सम्मिलित होकर पुनः पंजाब की ओर पधार रहे थे तो किशनगढ़ पधारे। ज्यों ही आपको मालूम हुआ तो आप दर्शनार्थ पधारीं और उनके समक्ष अपनी सारी स्थिति

वताई तथा उनसे दीक्षा देने की प्रार्थना की। तब श्री विमलमुनि जी म सा ने फरमाया—राजस्थान के कोई साधु साध्वी आपको दीक्षित नही कर सकते तो न सही, मैं आपको दीक्षा दूँगा। मैं पजाब का हूँ और मुझे किसी का भय भी नही है।

शुभ कार्य मे देर किस बात की? आपकी चाची सासूजी श्री छोटीबाई ने आज्ञा दी और शुभ समय मे सवत् २००८ के ज्येष्ठ शुक्ला पचमी गुरुवार पुष्य नक्षत्र को श्री विमलमुनि जी म सा ने आपको दीक्षा प्रदान की। सुरमाबाई नाम बदल कर श्री उम्मेद कुँवर नाम दिया गया तथा परम तेजस्वी महायोगेश्वरी विदुषी एव दिव्यात्मा महासती पूज्य गुरुवर्या श्री उमराव कुँवर जी म सा 'अर्चना' की आप शिष्या बनी। पूज्य गुरुवर्याश्री के साथ आपने भी सुदूर विचरण करते हुए सर्वप्रथम काश्मीर मे जाकर जैन शासन का प्रभाव जमाया, धर्म किस चिडिया का नाम है, इसे भी न जानने वाले अबोध प्राणियो को धर्म से परिचित कराया। अहिंसा का प्रचार किया। आपके विषय मे तो जितना लिखा जाय उतना कम ही है।

पूज्य महासती जी म की बुद्धि और ग्राह्य शक्ति बचपन से ही तीव्र रही है। आगमो का अध्ययन करते हुए आपने सिद्धान्ताचार्य की परीक्षा दी, तथा थोकडो व ढालो का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। आपकी प्रवचन शैली भी मधुर रही।

आपने 'रत्न-रश्मियाँ', 'श्री मूल मुक्तावली' 'अतरनाद' आदि पुस्तको का सकलन किया एव आपकी स्वरचित स्तुतियाँ भी हैं। इसके अलावा 'स्वाध्याय सुमन' नामक पुस्तक मे नित्य स्वाध्याय एव प्रात स्मरण हेतु स्तोत्रो का बडा सुन्दर सग्रह है। 'विकास के सोपान', एव 'सिद्धि के सोपान' मे प्राचीन ढालो का सकलन एव सम्पादन है।

संवत् २०१५ में पूज्य गुरुवर्या एवं छोटी गुरुबहन श्री कंचन कु वरजी म. सा. ठाणा ३ से आपने जयपुर चातुर्मास के पश्चात् पंजाब, कश्मीर, यू. पी., हिमाचलप्रदेश में विचरण कर धर्म का प्रचार किया। फिर राजस्थान एवं राजस्थान से पुनः मध्यप्रदेश, गुजरात होते हुए अभी ११ ठाणा से राजस्थान में विचरण हो रहा है।

तपस्या के प्रति आपकी अभिरुचि प्रारंभ से ही खूब रही है। अब तक आपने निम्न तपस्यायें की हैं—

१. मास खमण व ४० दिन की तपस्या।
२. २१ की तपस्या, सिद्धितप, सर्वतोभद्र तप,
३. एक उपवास से लेकर पन्द्रह तक की लड़ी।
४. कर्मचूर की आठ अठाइयाँ।
५. मेरु के पांच पचोले।
६. धर्मचक्र ३४ दिन की तपस्या।
७. वर्षीतप, एवं फुटकर तपस्याएँ।
८. संवत् २०३८ चेत्र शुल्का प्रतिपदा से जीवन भर एकान्तर की तपस्या का नियम।
९. संवत् २०३४ के कार्तिक कृष्णा अष्टमी से अन्नाहार का, हरी सब्जी, घी, तेल, मिठाई, दही आदि का त्याग जीवन पर्यन्त।

प्रस्तुत आपकी संक्षिप्त जीवन झांकी। आशा है। कि पाठक इसे पढ़कर आपके त्यागमय आदर्श जीवन की प्रेरणा लेकर अपना जीवन धन्य बनाएंगे।

—महायोगेश्वरी मातृस्वरूपा
पूज्य गुरुवर्या श्री उमराव कुँवरजी
म. सा. 'अर्चना' की सुशिष्या
डॉ. सुप्रभा (सुधा)

दो शब्द

'उम्मेद है अक्षयपद की' नामक पुस्तक मे महासतीजी के उदारहृदयी धर्मनिष्ठ परिजनो ने अर्थ सहयोग किया इसके लिये वे धन्यवाद के पात्र हैं आशा है भविष्य मे भी इसी प्रकार सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक मे पठनीय सामग्री पाठको के लिये उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसा विश्वास है।

उत्तमचन्द मोदी
मुनि श्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन
पीपलिया बाजार, ब्यावर



दानवीर स्व. श्रीमान् सेठ मिश्रीमलजी सा. मुणोत,
ब्यावर (राजस्थान)

प्रकाशकीय

हमारे अहोभाग्य एवं प्रबल पुण्योदय से बहुत प्रतीक्षा के बाद श्रमण-संघीय शासनसेवी पूज्य गुरुदेव स्वामीजी व्रजलाल जी म. सा. श्रमणसंघीय युवाचार्य बहुश्रुत पं. र. श्री मिश्रीमल जी म. सा. 'मधुकर' की अन्तेवासिनी अध्यात्मयोगिनी मालवज्योति काश्मीर प्रचारिका शासन चन्द्रिका परम श्रद्धेया महासती श्री उमराव कुंवर जी म. सा. 'अर्चना', उग्र तपस्विनी भूआजी श्री उम्मेद कुंवर जी म. सा., महासती श्री सेवावन्ती जी म., महासती श्री कंचन कुंवर जी म., महासती श्री डॉ. सुप्रभाजी म., महासती श्री प्रतिभाजी म., महासती श्री सुशीलाजी म., महासती श्री उदितप्रभाजी म., महासती विजयप्रभाजी म., महासती श्री हेमप्रभाजी म., महासती श्री अमितप्रभाजी म., आदि ठाणा ११ का चातुर्मास ब्यावर शहर को प्राप्त हुआ।

इस वर्षावास में अनेकानेक धार्मिक कार्य सम्पादित हुए। समय-समय पर पूज्य महासती जी म. के तलस्पर्शी, जन-कल्याण-कारी आध्यात्मिक प्रवचनों का लाभ भी संघ को मिला।

उग्रतपस्विनी श्री उम्मेदकुंवर जी म. के सांसारिक पिता जी स्व. श्रीमान् मिश्रीमलजी मुणोत एक परम गुरुभक्त, कर्मठ समाजसेवक धर्मपरायण सुश्रावक थे। जब आपके दामाद श्रीमान् कुन्दनमलजी सा. का निधन हुआ तो आपने उनकी स्मृति में ब्यावर दादावाड़ी में कमरा सामायिक भवन के नाम से बनवाया। तथा कुन्दन-विलास, जीवन सुधार की कुंजी, नित्यनियम आदि पुस्तकें अपने दामाद एवं पुत्री के नाम से निकलवाई। उनके कर्त्तृत्व को देखकर हमने भी एक पुस्तक प्रकाशित करवाने का सोचा। और भुआ सा म. से निवेदन किया।

इसका हमे परम आह्लाद है तथा चातुर्मास की खुशी के उपलक्ष्य मे सवत् २०४८ के चातुर्मास की स्मृति को चिरस्यायी रखने के लिए महासती जी श्री उम्मेद कु वरजी म सा से विनम्र निवेदन करके 'उम्मेद है अक्षय पद की' नामक पुस्तक तैयार करवाई है तथा आप ही के सासारिक पीहर पक्ष ने अपना आर्थिक योगदान देकर इस पुस्तक को प्रकाशित करवाया है ।

आत्मनिष्ठ पाठकगण प्रस्तुत पुस्तक से लाभान्वित होंगे । हृदय मे प्रसन्नता है कि हमारी भावना साकार हुई ।

विनीत
—मुणोत परिवार

श्री भक्तामर स्तोत्र

(पठन समय १२।। बजे रात्रि से ११।। बजे दिन तक)

(सर्वविघ्ननाशक)

भक्तामर–प्रणत–मौलिमणि–प्रभाणा–
मुद्योतकं दलित–पाप–तमोवितानम् ।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा–
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम् ।।१।।

(सकलरोगनाशक)

यः संस्तुतः सकल वाङ्मयतत्वबोधा–
दुद्भूत बुद्धि पटुभिः सुरलोक–नाथैः ।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय चित्त हरै रुदारैः
स्तोष्ये किला–हमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ।।२।।

(सर्वसिद्धिदायक)

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चित पाद पीठ !
स्तोतुं समुद्यत–मतिर्विगत–त्रपोऽहम् ।
बालं विहाय जल संस्थित–मिन्दु बिम्ब-
मन्यःक इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम् ।।३।।

(जल जन्तु मोचक)

वक्तु गुणान् गुण समुद्र ! शशाङ्क कान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरु प्रतिमोऽपि बुद्ध्या ।
कल्पान्त–काल–पवनोद्धत–नक्रचक्र,
को वा तरी–तुमल–मम्बु–निधि भुजा–भ्याम् ॥४॥

(लोचन कष्ट-मोचक)

सोऽहं तथापि तव भक्ति–वशान्मुनीश !
कर्तुं स्तव विगत–शक्ति–रपि प्रवृत्त· ।
प्रीत्याऽत्म वीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम् ॥५॥

(विद्याप्रसारक)

अल्पश्रुत श्रुतवता परिहास–धाम
त्वद् भक्तिरेव मुखरी कुरुते बलान्माम् ।
यत्कोकिल किल मधौ मधुर विरौति
तच्चारु–चाम्र–कलिकानिकरैकहेतु ॥६॥

(सर्व दुरित सकट क्षुद्रोपद्रव निवारक)

त्वत्सस्तवेन भवसतति सन्निबद्ध
पाप क्षणात्क्षय मुपैति शरीर भाजाम् ।
आक्रान्त-लोक मलिनोल मशेषमाशु
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वर मन्धकारम् ॥७॥

(सर्वारिष्ट निवारक)

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनुधियाऽपि तव प्रभावात् ।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु
मुक्ताफल द्युति मुपैति ननूद बिन्दुः ॥८॥

(भयनाशक)

आस्तां तव स्तवन मस्त समस्त दोषं
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति ।
दूरे सहस्र किरणः कुरुते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकास भांजि ॥६॥

(कुक्कर विष निवारक)

नात्यद् भुतं भुवनभूषण ! भूतनाथ !
भूतैर्गुणैर्भुवि भवन्त मभिष्टुवन्तः ।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भृत्या श्रितं य इह नात्म समं करोति ॥१०॥

(वियुक्त-व्यक्ति-मेलापक)

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेष विलोक नीयं,
नान्यत्र तोष मुपयाति जनस्य चक्षुः ।
पीत्वा पयः शशिकर द्युति-दुग्ध सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधे रसितुं क इच्छेत् ॥११॥

(मदोन्मत-हस्तिमदमारक)

यैः शान्त राग रुचिभि परमाणु भिस्तत्वं,
निर्मा पितस्त्रि भुवनैक-ललाम भूत ।
तावन्त एव खलु तेऽप्यणव. पृथिव्या,
यत्ते समान मपर नहि रूपमस्ति ॥१२॥

(लक्ष्मीप्राप्ति स्वशरीर रक्षक)

ववत्र क्व ते सुरनरो रगनेत्र हारि,
नि शेप–निर्जित-जगत्त्रितयोपमानम् ।
बिम्ब कलङ्क–मलिनं क्व निशाकरस्य
यद्वासरे भवति पांडु पलाश कल्पम् ॥१३॥

(आधि-व्याधि नाशक)

सम्पूर्ण मण्डल–शशाङ्क कला कलाप
शुभ्रा गुणास्त्रि भुवन तव लङ्घयन्ति ।
ये सश्रितास्त्रि जगदीश्वर ! नाथमेक
कस्तान् निवारयति सचरतो यथेष्टम् ॥१४॥

(सम्मान—सौभाग्य-प्रदायक)

चित्र किमत्र यदि ते त्रिदशागनाभि–
र्नीत मनागपि मनो न विकार–मार्गम् ।
कल्पान्त काल मरुता चलिताचलेन,
किं मन्दाद्रि शिखर चलित कदाचित् ॥१५॥

(सर्वविजय दायक)

निर्धूम वर्तिर प वर्जित-तैलपूरः
कृत्स्नं जगत्त्रय मिदं प्रकटी करोषि ।
गम्यो न जातु मरुतां चलिता चलानां,
दीपोऽपरस्त्व मसि नाथ ! जगत्प्रकाशः ।।१६।।

(सर्वरोग निवारक)

नास्तं कदाचि दुपयासि न राहु गम्यः,
स्पष्टीकरोषि सहसा युग पज्जगन्ति ।
नाम्भो धरोदर-निरुद्ध महाप्रभावः,
सूर्यातिशायि महिमाऽसि मुनीन्द्र ! लोके ।।१७।।

(शत्रुसैन्य स्तम्भक)

नित्योदयं दलित मोह महान्धकारं
गम्यं न राहु वदनस्य न वारि दानाम् ।
विभ्राजते तव मुखाब्ज मनल्प कान्ति
विद्योत यज्जगद पूर्व शशाङ्क बिम्बम् ।।१८।।

(तन्त्रप्रभाव रोधक)

किं शिर्वरीषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा ?
युष्मन्मु खेन्दु-दलितेषु तमःसु नाथ !
निष्पन्न शालि वन शालिनि जीवलोके
कार्यं कियज्जल धरैर्जल भार-नम्रैः ।।१९।।

(सन्तति-सम्पत्ति-सौभाग्य प्रसाधव)

ज्ञान यथा त्वयि विभाति कृता वकाशं
नैव तथा हरिहरा दिषु नायकेषु ।
तेज· स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्व
नैव तु काच शकले किरणा कुलेऽपि ।।२०।।

(वशीकरण व सौभाग्यसाधव)

मन्ये वर हरिहरा दय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदय त्वयि तोषमेति ।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्य,
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि ।।२१।।

(भूत-बाधा निवारक)

स्त्रीणा शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुत त्वदुपम जननी प्रसूता ।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्त्ररश्मि,
प्राच्येव दिग् जनयति स्फुर दशु जालम् ।।२२।।

(प्रेतबाधा निवारक)

त्वामामनन्ति मुनय परमं पुमास
मादित्य वर्ण ममल तमस पुरस्तात्
त्वामेव सम्य गुपलभ्य जयन्ति मृत्यु
नान्य· शिव शिव पदस्य मुनीन्द्र पन्था ।।२३।।

(शिर-रोग नाशक)

त्वामव्ययं विभु मचिन्त्यमसंख्यमाद्यं,
ब्रह्माण मीश्वर मनन्त मनङ्ग केतुम् ।
योगीश्वरं विदित योग मनेक मेकं,
ज्ञान स्वरूप ममलं प्रवदन्ति सन्तः ।।२४।।

(दृष्टि-दोप निवारक)

बुद्धस्त्व मेव विबुधार्चित ! बुद्धि–बोधात्,
त्वं शङ्करोऽसि भुवन त्रय–शङ्करत्वात् ।
धातासि धीर ! शिव मार्ग विधेर्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन् ! पुरुषोत्तमोऽसि ।।२५।।

(अर्द्ध शिर पीड़ा निवारक)

तुभ्यं नमस्त्रि भुवनार्ति हराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षिति तला मल भूषणाय ।
तुभ्यं नमस्त्रि जगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन भवो दधि–शोषणाय ।।२६।।

(शत्रुन्मूलक)

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषै
स्त्वं संश्रितो निरवकाश तया मुनीश ?
दोषै रुपात्त–विविधाश्रय–जातगर्वैः
स्वाप्नान्तरेऽपि न कदाचिद पीक्षितोऽसि ।।२७।।

(सव मनोरथ प्रपूरक)

उच्चैर शोक तरु सश्रित मुन्मयूख—
भाभाति रूप ममल भवतो नितान्तम् ।
स्पष्टोल्लसत् किरण मस्त तमो वितान
बिम्ब रवेरिव पयोधर—पार्श्व वर्ति ॥२८॥

(नेत्र पीडा विनाशक)

सिंहासने मणि मयूख शिखा विचित्रे
विभ्राजते तव वपु. कनकाव दातम् ।
बिम्ब वियद् विल सदंशुलता—वितान
तुङ्गो दयाद्रि—शिरसीव सहस्र रश्मेः ॥२९॥

(शत्रु स्तम्भव)

कुन्दा ववात—चल चामर—चारु शोभ
विभ्राजते तव वपु कल धौत कान्तम् ।
उद्यच्छशाङ्क—शुचि निर्झर—वारिधार
मुच्चैस्तटं सुरगिरे रिव शात कौम्भम् ॥३०॥

(राज-सम्मानदायक)

छत्रत्रय तव विभाति शशाङ्क कान्त
मुच्चै स्थित स्थगित भानुकर—प्रतापम् ।
मुक्ताफल—प्रकर जाल—विवृद्ध शोभं,
प्रख्यापयत्त्रि जगत. परमेश्वरत्वम् ॥३१॥

(संग्रहणी संहारक)

गम्भीर तार रव पूरित–दिग्विभाग
स्त्रैलोक्य लोक–शुभ सङ्गम–भूति दक्षः ।
सद्धर्मराज जय घोषण–घोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ॥३२॥

(सर्व ज्वरनाश संहारक)

मन्दार–सुन्दर–नमेरु–सुपारिजात
सन्तान कादि कुसुमोत्कर वृष्टिरुद्धा ।
गन्धोद बिन्दु–शुभमन्द–मरुत्प्रपाता,
दिव्या दिवः पतति ते वचसां ततिर्वा ॥३३॥

(गर्भ संरक्षक)

शुभ्रत्प्रभावलय–भूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रय–द्युति मतां द्युति माक्षि पन्ती ।
प्रोद्यद्–दिवाकर–निरन्तर भूरिसंख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम–सौम्याम् ।३४।

(इति भीति निवारक)

स्वर्गा पवर्ग गम मार्ग–विमार्ग णेष्ठः
सद्धर्म तत्व कथनैक–पटुस्त्रि लोक्याः ।
दिव्य ध्वनिर्भवति ते विश दार्थ सर्व
भाषा स्वभाव–परिणाम गुणैः प्रयोज्यः ॥३५॥

(लक्ष्मीदायक)

उन्निद्रहेम–नव पङ्कज–पुञ्ज कान्ती
पर्युल्लसन्नख मयूख शिखा भिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्त·
पद्मानि तत्र विबुधा· परिकल्पयन्ति ॥३६॥

(दुर्जन स्तम्भक)

इत्थ यथा तव विभूतिर भूज्जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशन विधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृत· प्रहतान्धकारा
तादृक् कुतो ग्रह–गणस्य विकाशिनोऽपि ॥३७॥

(हस्तिमद भजन-वैभववद्धक)

श्च्योतन्मदा विल विलोल कपोल मूल
मत्त भ्रमद्–भ्रमर नाद–विवृद्ध कोपम्।
ऐरावता भमि भमुद्धत माप तन्त
दृष्ट्वा भय भवति नो भव दाश्रिता नाम् ॥३८॥

(सिंहशक्ति महारव)

भि·नेभ–कुम्भ–गल दुज्ज्वल–शोणिताक्त
मुक्ताफल प्रकर–भूषित-भूमिभाग।
वद्धक्रम क्रमगत हरिणा धिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगा चल सश्रितं ते ॥३९॥

(अग्नि प्रकोप शामक)

कल्पान्त काल–पवनोद्धत–वन्हि कल्पं
दावानलं ज्वलित मुज्ज्वल मुत्स्फुलिङ्गम् ।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं
त्वन्नाम कीर्त्तन जलं शमयत्यशेषम् ॥४०॥

(भुजंग भय भंजक)

रक्ते क्षणं समद कोकिल–कण्ठ नीलं
क्रोधोद्धतं फणि नमुत्फ णमाप तन्तम् ।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्त शङ्क
स्त्वन्नाम नाग दमनी हृदि यस्य पुंसः ॥४१॥

(युद्धभय विनाशक)

वल्गत्तुरङ्ग गजगर्जित–भीमनाद
माजौ बलं बलवता मपि भूपतीनाम् ।
उद्यद्दिवाकर मयूख–शिखा पविद्धं
त्वत्कीर्त्तनात्तम इवाशु भिदामुपैति ॥४२॥

(सर्वशान्ति दायक)

कुन्ताग्र भिन्न गज–शोणित वारि वाह
वेगावतार–तरणा तुरयोध–भीमे ।
युद्धे जयं विजित दुर्जयजेयपक्षा
स्त्वत्पाद–पङ्कज वना श्रयिणो लभन्ते ॥४३॥

श्री कल्याणमन्दिर स्तोत्र

(पठन समय १२।। बजे दिन मे ११।। बजे रात्रि तक)

कल्याण-मन्दिर मुदार मवद्य-भेदि,
भीता भय प्रदम निन्दित मड् घ्रि-पद्मम् ।
ससार-सागर-निमज्ज दशेष-जन्तु
पोताय मान मभिनम्य जिनेश्वरस्य ।।१।।

यस्य स्वय सुर-गुरुर्गरिमाम्बुराशे
स्तोत्र सुविस्तृतमतिर्न विभु र्विधातुम् ।
तीर्थेश्वरस्य कमठ-स्मय-धूमकेतो
स्तस्या हमेष किल सस्तवन करिष्ये ।।२।।

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितु स्वरूप
मस्मा दृशा कथमधोश ! भवन्त्यधोशा ।
धृष्टोऽपि कौशिक-शिशुर्यदिवा दिवान्धो,
रूप प्ररूप यति किं किल घर्मरश्मे ? ।।३।।

मोह-क्षयादनुभवन्नपि नाथ मर्त्यो,
नून गुणान् गणयितु न तव क्षमेत ।

कल्पान्त वान्त पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्
मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः ? ।।४।।

(लक्ष्मी हेतु)

अभ्यु द्यतोऽस्मि तव नाथ ! जडा शयोऽपि,
कर्तुं स्तवं लसदसंख्य–गुणाकरस्य ।
बालोऽपि किं न निज बाहु युगं वितत्य,
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः ? ।।५।।

ये योगिना मपि न यान्ति गुणास्त वेश !
वक्तुं कथं भवति तेषु ममाव काशः ?
जाता तदेवमसमीक्षित–कारितेयं
जल्पन्ति वा निज–गिरा ननु पक्षिणोऽपि ।।६।।

(रक्षा हेतु)

आस्तामचिन्त्य महिमा जिन ! संस्तवस्ते
नामाऽपि पाति भवतो भवतो जगन्ति ।
तीव्रा तपो पहत–पान्थ–जना न्निदाघे,
प्रीणाति पद्मसरसः सरसोऽनिलोऽपि ।।७।।

(मुक्ति हेतु)

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो ! शिथिली भवन्ति,
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्म-बन्धाः ।

सद्यो भुजङ्गम-मया इव मध्यभाग

मभ्यागते वन शिखडिनि चन्दनस्य ॥८॥

(भय निवारण हेतु)

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र !

रौद्रै रुपद्रव शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि ।

गो-स्वामिनि स्फुरित तेजसि दृष्टमात्रे,

चौरैरिवाशु पशव प्रपलाय मानै. ॥९॥

(भयमुक्ति हेतु)

त्वं तारको जिन कथ भविना त एव

त्वामुद् वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्त ।

यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून

मन्तर्गतस्य मरुत स किलानु भाव ॥१०॥

(मनोवाञ्छा हेतु)

यस्मिन् हर-प्रभृतयोऽपि हत प्रभावा.,

सोऽपि त्वया रतिपति क्षपित· क्षणेन ।

विध्यापिता हुतभुज पयसाऽथ येन,

पीत न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन ॥११॥

स्वामिन्ननल्प-गरिमाण मपि प्रपन्ना

स्त्वां जन्तव कथमहो हृदये दधानाः ?

जन्मोदधिं लघु तरन्त्यति लाघवेन,
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः ।।१२।।

(क्रोध-शमन हेतु)

क्रोधस् त्वया यदि विभो प्रथमं निरस्तो,
ध्वस्तास्तदाबत कथं किल कर्म-चौरा ?
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके,
नीलद्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी ।।१३।।

त्वां योगिनो जिन ! सदा परमात्मरूप
मन्वेष यन्ति हृदयाम्बुज-कोशदेशे ।
पूतस्य निर्मल रुचेर्यदि वा किमन्य
दक्षस्य संभवि पदं ननु कर्णि कायाः ।।१४।।

(साधना हेतु)

ध्यानाज्जिनेश ! भवतो भविनः क्षणेन,
देहं विहाय परमात्म दशां व्रजन्ति ।
तीव्रा नला दुपल भाव मपास्य लोके,
चामीक रत्व मचिरा दिव धातु भेदाः ।।१५।।

(विग्रह शांति हेतु)

अन्त सदैव जिन ! यस्य विभाव्य से त्वं,
भव्यै कथ तदपि नाश यसे शरीरम् ।
एतत्स्वरूप मय मध्य विर्वातिनो हि,
यद्विग्रह् प्रश मयन्ति महानु भावाः ।। १६।।

(गृह-कलह निवारण हेतु)

आत्मा मनीषि भिरय त्वद भेद बुद्धया,
ध्यातो जिनेन्द्र ! भवतीह भवत्प्रभावः ।
पानीय मप्य मृत मित्यनु चिन्त्य मान,
किं नाम नो विष विकार मपाक रोति ।।१७।।

त्वामेव वीत तमस परवा दिनोऽपि,
नून विभो हरिहरादिधिया प्रपन्ना ।
कि काच काम लिभिरीश ! सितोऽपि शखो
नो गृहते विविध-वर्ण विपर्ययेण ।।१८।।

धर्मोपदेशसमये सविधानु भावा
दास्ता जनो भवति ते तरुरप्य शोकः ।
'अभ्युद्गते दिनपतौ सम हीरु होऽपि
किं वा विबोध मुपयाति न जीवलोक ।।१६।।

चित्रं विभो ! कथमवाङ् मुख वृन्त मेव ।
विष्वक् पतत्य विरला सुर पुष्प वृष्टिः ।
त्वद्-गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश !
गच्छन्ति नून मध एव हि बन्धनानि ॥२०॥

(मोक्ष हेतु)

स्थाने गभीर हृदयोदधि-सम्भवायाः
पीयूषतां तव गिरः समुदीर यन्ति ।
पीत्वा यतः परम सम्मद संग भाजो
भव्या ब्रजन्ति तरसाऽप्य जरा मरत्वम् ॥२१॥

(भक्ति हेतु)

स्वामिन् ! सुदूर मवनम्य समुत्पतन्तो
मन्ये वदन्ति शुचयः सुर चामरौघाः ।
येऽस्मै नतिं विदधते मुनि-पुङ्गवाय
ते नून मूर्ध्व गतयः खलु शुद्ध भावाः ॥२२॥

श्यामं गभीर-गिर मुज्ज्वल हेमरत्न
सिंहासनस्थ मिह भव्य शिखण्डि नस्त्वाम् ।
आलोक यन्ति रभसेन नदन्त मुच्चै
श्चामी कराद्रि शिरसीव नवाम्बुवाहम् ॥२३॥

उद्‌गच्छता तव शितिद्युतिमण्डलेन
लुप्तच्छदच्छविरशोकतरुर्बभूव ।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग !
नीरागता व्रजति को न सचेतनोऽपि ॥२४॥

(रोग-शोक मुक्ति हेतु)

भो भोः प्रमाद मवधूय भजध्व मेन
मागत्य निर्वृति पुरीं प्रति सार्थ वाहम् ।
एतन्नि वेदयति देव ! जगत्त्रयाय,
मन्ये नदन्नाभिनभ सुर दुन्दुभिस्ते ॥२५॥

उद्‌द्योति तेषु भवता भुवनेषु नाथ !
तारान्वितो विधुरय विहता धिकार ।
मुक्ता कलाप–कलितोल्लसितात पत्र
व्याजात् त्रिधा धृत तनुध्रुँव मभ्युपेत ॥२६॥

(विजय हेतु)

स्वेन प्रपूरित–जगत्त्रय–पिण्डितेन,
कान्ति-प्रताप-यश सामिव संचयेन ।
माणिक्य–हेम–रजत प्रविनिर्मि तेन,
साल–त्रयेण भगवन्नभितो विभासि ॥२७॥

दिव्य स्रजो जिन ! नमत्त्रि दशाधि पाना
मुत्सृज्य रत्न रचिता नपि मौलि बन्धान् ।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वा परत्र
त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त एव ॥२८॥

त्वं नाथ ! जन्म जलधेर्विपराङ् मुखोऽपि,
यत्तार यस्य सुमतो निजपृष्ठ लग्नान् ।
युक्तं हि पार्थिव-निपस्य सतस्तवैव,
चित्रं विभो ! यदसि कर्म-विपाक शून्यः ॥२९॥

(ज्ञान हेतु)

विश्वे श्वरोऽपि जन पालक ! दुर्गतस्त्वं,
किं वाऽक्षर-प्रकृति रप्य लिपिस्त्व मीश ।
अज्ञान वत्यपि सदैव कथञ्चि देव,
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व विकाश हेतुः ॥३०॥

(शुभाशुभ के उत्तर हेतु)

प्राग्भार-संभृत-नभांसि रजांसि रोषा
दुत्था पितानि कमठेन शठेन यानि ।
छायाऽपि तैस्तव न नाथ ! हता हताशो,
ग्रस्तस्त्व मीभिर य मेव परं दुरात्मा ॥३१॥

यद् गर्ज दूर्जित-घनौ घमद भ्रभीम,-
भ्रश्य-त्तडिन्मुसल मासल-घोरधारम् ।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर वारिदध्रे,
तेनैव तस्य जिन ! दुस्तर वारि कृत्यम् ॥३२॥

(विजय हेतु)

ध्वस्तोर्ध्व केश-विकृता कृति-मर्त्य मुण्ड
प्रालम्ब भृद्-मयद-वक्त्रविनिर्यदग्निः ।
प्रेतव्रज॰ प्रति भवन्तम पीरितो य,
सोऽस्या ऽभवत् प्रति भव भव दु.ख हेतु ॥३३॥

धन्यास्त एव भुवना धिप ! ये त्रिसन्ध्य
माराध यन्ति विधिवद्वि धुतान्य कृत्याः ।
भक्त्योल्लसत्-पुलक-पक्ष्मल-देह देशा॰,
पाद-द्वय तव विभो ! भुवि जन्म भाज॰ ॥३४॥

(विपदा निवारण हेतु)

अस्मिन्नपार-भव वारिनिधौ मुनीश !
मन्ये न मे श्रवण-गोचरतां गतोऽसि ।
आकर्णिते तु तव गोत्र पवित्र मंत्रे,
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति ॥३५॥

जन्मान्तरेऽपि तव पाद युगं न देव!
मन्ये मया महित मोहित दान-दक्षम् ।
तेनेह जन्मनि मुनीश ! परा भवानां
जातो निकेतन महं मथिताश यानाम् ।।३६।।

(विनय हेतु)

नूनं न मोह तिमिरा वृत लोचनेन
पूर्व विभो ! सकृदपि प्रविलोकि तोऽसि ।
मर्माविधो विधुर यन्ति हि माम नर्थाः
प्रोद्यत् प्रबन्ध गतयः कथमन्यथैते ? ।।३७।।

(सफलता हेतु)

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षि तोऽपि
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या ।
जातोऽस्मि तेन जन बान्धव ! दुःख पात्रं
यस्मात् क्रियाः प्रति फलन्ति न भाव शून्याः ।।३८।।

(दुख निवारण हेतु)

त्वं नाथ ! दुःखिजन वत्सल ! शरण्य !
कारुण्य पुण्य वसते ! वशिनां वरेण्य ।
भक्त्या नते मयि महेश ! दयां विधाय
दुःखांकुरो द्दलन-तत्परतां विधेहि ।।३९।।

नि सख्य सार शरणं शरणं शरण्यं
मासाद्य सादित रिपु–प्रथितावदातम् ।
त्वत्पाद–पङ्कज मपि प्रणि धान वन्ध्यो
वध्योऽस्मि चेत् भुवन पावन ! हा हतोऽस्मि ॥४०॥

देवेन्द्रवन्द्य ! विदिता खिल वस्तु सार !
ससार–तारक ! विभो ! भुवनाधिनाथ !
त्रायस्व देव ! करुणा हृद ! मां पुनीहि
सीदन्त मद्य भयद–व्यसनाम्बुराशे ॥४१॥

यद्यस्ति नाथ ! भवदङ्घ्रि–सरोरुहाणा
भक्ते फलं किमपि सन्तत–सचिताया ।
तन्मे त्वदेकशरणस्य शरण्य ! भूया.
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि ॥४२॥

(बधन मुक्ति हेतु)

इत्थ समाहित धियो विधि वज्जिनेन्द्र !
सान्द्रोल्लसत्पुलक कञ्चुकिताङ्ग भागाः ।
त्वद् विम्ब निर्मल मुखाम्बुज बद्ध लक्ष्या
ये सस्तव तव विभो ! रचयन्ति भव्या ॥४३॥

जन नयन कुमुद चन्द्र !

प्रभास्वराः स्वर्ग-सम्पदो भुक्त्वा ।

ते विगलित मल निचया

अचिरान् मोक्षं प्रमद्यन्ते ॥४४॥

॥ श्री सिद्धसेनदिवाकरं प्रणीतं पार्श्वनाथ स्तोत्र संपूर्ण ॥



श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्रम्

किं कर्पूरमय सुधारसमय किं चन्द्ररोचिर्मयम्,
किं लावण्य मय महामणि मय कारुण्य केली मयम् ।
विश्वानन्दमय महोदयमय शोभामय चिन्मयम् ।
शुक्लध्यानमय वपुर्जिन पतेर्भूयाद् भवा लम्बनम् ॥१॥

पाताल कलयन् धरा धवल यन्नाकाशमा पूरयन्,
दिक्चक्र क्रमयन् सुरासुर नर श्रेणी च विस्मा पयन् ।
ब्रह्माड सुखयन जलानि जलधे फेनच्छ लाल्लोलयन् ।
श्री चिन्तामणि-पार्श्व सभव–यशो-हसश्चिर राजते ॥२॥

पुण्याना विपणिस् तमो दिनमणि. कामेभ कुभे सृणि
मोक्षे नि सरणि सुरेन्द्र करणि ज्योति प्रकाशारणि ।
दाने देव मणिर्नतोत्तम जन श्रेणीः कृपा सारणि.–,
विश्वानन्द सुधा घृणिर्भव भिदे श्री पार्श्व चिन्तामणिः ॥३॥

श्री चिन्तामणि पार्श्व विश्व जनता सजीवनस्त्वं मया,
दृष्टस्तात तत श्रियः सम भवन्नाश क्रमा चक्रिणम् ।
मुक्तिः क्रीडति हस्तयोर्बहुविध सिद्ध मनोवाछितम्,
दुर्दैव दुरित च दुर्दिनभय कष्टं प्रणष्ट मम ॥४॥

यस्य प्रौढतम प्रतापतपनः प्रोद्दामधामा जगज्,
ज्जंघालः कलिकाल केलिदलनो मोहान्ध विध्वंसकः ।
नित्योद्योतपदं समस्त कमलाकेलीगृहं राजते,
स श्री पार्श्व जिनोजने हित कर चिन्तामणिः पातुमाम् ।।५।।

विश्व व्यापि तमो हिनस्ति तरणिर्बालोपिकल्पांकुरो,
दारिद्राणि गजावलीं हरिशिशुः काष्ठानि वह्नेः कणः ।
पीयूषस्य लवोऽपि रोग निवहं यद्वत्तथा ते विभो,
मूर्तिः स्फूर्ति मती सती त्रिजगती कष्टानि हर्तुं क्षमा ।।६।।

श्री चिन्तामणि मन्त्रमोंकृतियुतं ह्रीं कार साराश्रितम्,
श्री मर्हं नमिऊण–पासकलितं त्रैलोक्यवश्यावहम् ।
द्वेधा भूत विषा पहं विष हरं श्रेयः प्रभावाश्रयम्,
सोल्लासं वस हांकितं जिन फुल्लिगा नन्द दं देहिनाम् ।।७।।

ह्रीं श्रीं कारवरं नमोऽक्षर परं ध्यायन्ति ये योगिनो ।
हृत्पद्मं विनिवेश्य पार्श्वमधिपं चिन्तामणि संज्ञकम् ।
भाले वाम भुजे च नाभि करयोर्भूयो भुजे दक्षिणे,
पश्चादष्ट दलेषु ते शिवपदं द्वित्रैर्भवैर्यान्त्य हो ।।८।।

नो रोगा नैव शोका न कलह कलना नारिमारी प्रचारा ।
नैवाधिर्नासमाधिर्न च दर दुरिते दुष्ट दारिद्रता नो ।

नो शाकिन्यो ग्रहानो न हरि करि गणा व्याल वैतालजाला:
जायते पार्श्वचिन्तामणि नति वशत. प्राणिनीभक्तिभाजाम्
॥६॥

गीर्वाण द्रुमं धेनु कुम्भमण यस्तस्यांगणे रिंगिणो।
देवा दानव मानवा. सविनयं तस्मै हित ध्यायिन.।
लक्ष्मीस्तस्य वशाऽवशेव गुणिना ब्रह्माण्ड सस्थायिनी,
श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ मनिशं सस्तौति यो ध्यायति
॥१०॥

इति जिनपति पार्श्व. पार्श्वाख्य यक्ष.,
प्रदलित — दुरितौघ — प्रीणित — प्राणि — सार्थ.।
त्रिभुवन जन वाछा दान चिन्तामणिकः,
शिव पद तरु वीजं बोधि वीजं ददातु ॥११॥

॥ इति श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ स्तोत्र समाप्त ॥

श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र

नरेन्द्रं फणेन्द्रं सुरेन्द्रं अधीशं,
शतेन्द्रं सपूज्यं भजनाय शीशं।
मुनीद्रं गणेन्द्रं नमे जोर हाथं,
नमो देव देवं सदा पार्श्वनाथं ॥१॥

गजेद्रं मृगेन्द्रं ग्रह्यो तूं छुड़ावे,
माहग्राग तें नाग तें तूं बचावे।
महारोग तें बन्ध तें तूं खुलावे,
महारण तें युद्ध तें तूं जितावे ॥२॥

दुखी दुःख हरता सुखी सुख करता,
सभी सेवकों के सदानन्द भरता।
हरे यक्ष राक्षस भूत पिशाचं,
विघ्न डाकिनी के भय अवाचं ॥३॥

दरिद्री को द्रव्य दान दीने,
अपुत्र को ते भले पुत्र कीने।
गृह सर्व सेती निकाले विधाता,
सवे सम्पदा सर्व को देई दाता ॥४॥

महाचोर को वज्र को भय निवारे,
महा पवन के पुंज से तूं ही उवारे।
महा क्रोध की आग मे मेघ धारा।
महा लोभ शैल्यरा ते वज्र भारा ॥५॥
महा मोह अन्धकार को ज्ञान भानु,
महा कर्म कन्तार देहि प्रधानम्।
किये नाग नागिनी अधो लोक स्वामी,
हरयो मान दैत्य को ते भये अकामी ॥६॥
तू ही कल्प वृक्ष तू ही कामधेनू,
तू ही देव चिन्तामणि नाथ एनू।
पशु के नरक के दु.ख सेती छुडावे,
महा स्वर्ग मे मोक्ष मे तू ही वसावे ॥७॥
करे लोह ते हेम पाषाण नामी,
रटे नाम सो क्यो नहीं मोक्ष गामी।
करे सेव ताकी करे देव सेवा,
सुने बैन सोही लहे ज्ञान मेवा ॥८॥
जपे जाप ताको कहा पाप लागे,
धरे ध्यान ताको सभी दु.ख भागे।
बिना तोही जाने धरे भव घने रे,
तुम्हारी कृपा से सरे सब काज मेरे ॥९॥

॥ इति ॥

महावीराष्टक स्तोत्र

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः,
समं भ्रान्ति ध्रौव्य व्यय जनिलसन्तोऽन्तररहिताः।
जगत्-साक्षी मार्ग-प्रकट नपरो भानु रिव यो,
महावीर-स्वामी नयन–पथ–गामी भवतु मे ॥१॥

अताम्रं यच्चक्षुः कमल–युगलं स्पन्द रहितं,
जनान् कोपापायं प्रकटयति वाऽभ्यन्तर मपि।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमित मयी वाति विमला,
महावीर स्वामी नयन............॥२॥

नमन्ना केन्द्राली–मुकुट मणिभा–जाल जटिलं,
लसत् पादाम्भोऽजद्वय मिह यदीयं तनु भृताम्।
भव ज्वाला–शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि,
महावीर स्वामी नयन............॥३॥

यदर्चा भावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह,
क्षणादासीत् स्वर्गी गुण–गण समृद्धः सुख निधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः शिव सुख समाजं किमुतदा ?,
महावीर स्वामी नयन............॥४॥

कनत्स्वर्णाभासो ऽप्यपगत—तनुःज्ञान—निवहो,
विचित्रात्मा ऽप्येको नृपति वर—सिद्धार्थ—तनय ।
अजन्माऽपि श्रीमान् विगत भव रागोऽद्भुत गति,
महावीर स्वामी नयन ·· · ॥५॥

यदीया वाग्गंगा विविध नय कल्लोल—विमला,
बृहज्-ज्ञानाम्भोभिर्जगति जनता या स्नपयति ।
इदानीमप्येषा बुधजन मरालै. परिचिता,
महावीर स्वामी नयन — ॥६॥

अनिर्वारोद्रे कस्त्रिभुवनजयी काम—सुभट',
कुमारावस्थायामपि निजबलाद् येन विजित. ।
स्फुरन्नित्यानन्द—प्रशमपदराज्याय स जिन,
महावीर स्वामी नयन ॥७॥

महामोहातक — प्रशमनपराऽऽकस्मिक — भिषग्,
निरापेक्षो बन्धुर्विदित महिमा मगल करः ।
शरण्य' साधूना भव भयमृतामुत्तम गुण',
महावीर स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे ॥८॥

॥ इति ॥

श्री तिजय पहुत्त स्तोत्र

[आचार्य श्री मानदेव]

तिजय पहुत्त पयासय–अट्ठ महापाडिहेर जुत्ताणं ।
समयक्खित्त ठियाणं, सरेमिचक्कं जिणं दाणं ॥१॥

पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवर समूहो ।
नासेउ सयल दुरियं, भवियाणं भत्तिजुत्ताणं ॥२॥

बीसा पणयाला वि य, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा ।
गहभूअ-रक्ख साइणि, घोरुवसग्गं पणासंतु ॥३॥

सत्तरि पणतीसा वि य, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो,
वाहि-जल-जलण हरि-करि-चोरारि-महाभयं हरउ ॥४॥

पणपन्ना य दसेव य, पन्नट्ठी तह य चेव चालीसा ।
रक्खतु मे सरीरं, देवासुर पणमिया सिद्धा ॥५॥

ओ३म् हरहुं हः सर सुंस हरहुंहःतह य चेव सरसुंस ।
आलिहिय-नाम-गब्भं चक्कं किर सब्बओ भद्दं ॥६॥

ओ३म् रोहिणि पन्नत्ति वज्जसिखला तहय वज्जंअंकुसिया ।
चक्केसरि नरदत्ता, कालि महाकालि तह गोरी ॥७॥

गधारी महजाला, माणवि वइरुट्ट तह य अच्छुत्ता ।
माणसि महामाणसिया, विज्जादेवीओ रक्खंतु ॥८॥

पंचदस कम्मभूमिसु, उप्पन्नं सत्तरि जिणाण सयं ।
विविह-रयणाइ वन्नो-वसोहिय हरउ दुरियाइ ॥६॥

चउतीस अइसय जुआ, अट्ठ महा पाडिहेर-कयसोहा ।
तित्थयरा गयमोहा,-झाएअव्वा पयत्तेण ॥१०॥

ॐवर कणय सख-विद्दुम-मरगय-घण-सन्निह विगय मोह ।
सत्तरिसय जिणाण, सव्वामर पूइय वन्दे स्वाहा ॥११॥

ओ३म् भवणवइ वाणवतर जोइसवासी विमाणवासीअ ।
जे के वि दुट्ठ देवा, ते सव्वे उवसमतु मम स्वाहा ॥१२॥

चदण कप्पूरेण, फलए लिहिऊण खोलिय पीयं ।
एगंतराइ गह भूअ, साइणि मुग्ग पणासेई ॥१३॥

इय सत्तरिसयजतं सम्मं मत दुवारि पडिलिहिय ।
दुरिआरि-विजयवत, निब्भत निच्चमच्चेह ॥१४॥



उपसर्गहर स्तोत्र

(आचार्य भद्रबाहु स्वामी)

उवसग्गहरं पासं पासं वंदामि, कम्मघण मुक्कं ।
विसहर विस निन्नासं, मंगल-कल्लाण आवासं ।।१।।

विसहर फुलिंग मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ ।
तस्स गह रोग मारी-, दुट्ठ जरा जन्ति उवसामं ।।२।।

चिट्ठउ दूरे मन्तो, तुज्झ पणामो वि बहु फलो होइ ।
नर तिरिए सु वि जीवा, पावन्ति न दुक्ख दोगच्चं ।।३।।

तुहं सम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि कप्पपाय वब्भहिए ।
पावन्ति अविग्घेण, जीवा अयरा मरं ठाणं ।।४।।

इअ संथुओ महायस !, भत्तिब्भर-निब्भरेण हियएण ।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिण चन्द ।।५।।

।। इति ।।

घण्टा कर्ण मन्त्र

ॐ घण्टा कर्णो महावीर, सर्व व्याधि विनाशकः ।
विस्फोटक भय प्राप्ते, रक्ष रक्ष महाबल· ॥१॥

यत्र त्व तिष्ठसे देव, लिखितोऽक्षर पक्तिभि· ।
रोगास्तत्र प्रणश्यन्ति, वात पित्त कफोद् भवा· ॥२॥

तत्र राज भय नास्ति, यान्ति कर्णे जपात्क्षयम् ।
शाकिनी भूत वेताला, राक्षसा· प्रभवन्ति न ॥३॥

ना काले मरण तस्य, न च सर्पेण दश्यते ।
अग्नि चोर भयं नास्ति, ॐ ह्रीं श्रीं घण्टा कर्ण ।
नमोस्तु ते ! ॐ नर वीर ! ठ. ठ. ठ. स्वाहा ॥४॥

॥ इति ॥

इस मन्त्र का २१ वार जप करने से राज भय, चोर भय, अग्नि भय और सर्प का भय दूर होता है और सब प्रकार की भूत प्रेत की बाधा भी दूर होती है ।

श्री सिद्ध स्तुति

१–तुम तिरण तारण दुःख निवारण,
भविक जीव आराधनं।
श्री नाभि नन्दन जगत वन्दन,
नमो सिद्ध निरंजन ।।

२–जगत भूषण विगत दूषण,
प्रणव प्राण निरूपकं,
ध्यान रूप अनुप उपमं ।। नमो.........

३–गगन मण्डल मुक्ति पदवी,
सर्व उर्ध्व निवासनं।
ज्ञान ज्योति अनन्त राजे ।। नमो...... ..

४–अज्ञान निद्रा विगत वेदन,
दलित मोह निरायुषं।
नाम गोत्र निरंतरायं ।। नमो.........

५–विकट क्रोधा मान योधा,
माया लोभ विसर्जनं
राग द्वेष विमर्द अंकुर ।। नमो.........

६—विमल केवल ज्ञान लोचन,
ध्यान शुक्ल समीरितं ।
योगिनाऽति गम्य रूप ।। नमो ...

७—योग न समोशरण मुद्रा,
परि पल्यक आसन ।
सर्व दिसे तेज रूप ।। नमो

८—जगत जिनके दास दासी,
तास आस निरासन ।
चन्द्र पे परमानन्द रूप ।। नमो ..

९—स्व समय समकित दृष्टि जिनकी,
सोय योगी अयोगिक ।
वेख तामा लीन होवे ।। नमो .

१०—चन्द्र सूर्य दीप मणि की,
ज्योति येन उलघित ।
ते ज्योति थी अपरम ज्योति ।। नमो

११—तीर्थ सिद्धा अतीर्थ सिद्धा,
भेद पञ्च दशाधिक ।
कर्म विमुक्त चेतन ।। नमो ...

१२—एक मांही अनेक राजे,
अनेक मांही एकीकं ।
एक अनेक की नाही संख्या ।। नमो........

१३—अजर अमर अलख अनंत,
निराकार निरंजनं ।
पर ब्रह्म ज्ञान अनन्त दर्शन ।। नमो..... ..

१४—अतुल सुख की लहर में,
प्रभु लीन रहे निरन्तरं ।
धर्म ध्यान थी सिद्ध दर्शन ।। नमो.........

१५—ध्यान धूपं मनः पुष्पं,
पंचेन्द्रिय हुताशनं ।
क्षमा जाप संतोष पूजा,
पूजो देव निरंजनं ।।

१६—तुम मुक्ति दाता कर्म धाता,
दीन जानी दया करो ।
सिद्धार्थ नन्दन जगत वन्दन,
महावीर जिनेश्वरं ।।

पन्द्रह का यन्त्र

८	१	६
३	५	७
४	९	२

तर्ज—काई रे प्रभाव

काई रे प्रभाव कहू नवपद को ।। टेर ।।

१–भाव कहूला प्रभाव कहूला तो ।
नवपद का चरणा मे ध्यान धरूंला ।। १ ।।

२–चारित्र की महिमा है निराली, तो ।
जिण रो पालन कर मुक्ति पाली ।। काई ।।

३–बारह गुणा करी, अरिहन्त ज्ञानी, तो ।
चौतीस अतिशय पैतीस वाणी ।। काई ।।

४–ज्ञान बिना जग मे, अन्धेरो, तो ।
प्राप्त ज्ञान केवल, शिव सुख वारो ।। काई ।।

५–आचार्य छत्तीस गुण पालक, तो ।
सघ शिरोमणि, सघ संचालक ।। काई ।।

६–गुण सत्ताइस दीपे मुनिराया, तो ।
मोक्ष को पंथ बतावन आया ।। कांई ।।

७–श्रद्धा बिना सब काम अलुना, तो ।
प्राप्त श्रद्धा कर्म क्षय कीना ।। कांई ।।

८–उपाध्याय पच्चीस गुण धारी, तो ।
ज्ञान सीखावे पर उपकारी ।। कांई ।।

९–तप कर जीर्ण कर्म क्षय होवे, तो ।
आत्मा उज्जवल निर्मल होवे ।। कांई ।।

१०–आठ गुण करी सिद्ध अन्तर्यामी, तो ।
अजर अमर अक्षय पद पामी ।। कांई ।।

११–नव पद का सब ध्यान लगाओ तो ।
आप ही नवपद सम बन जाओ ।। कांई ।।

१२–साध्वी उम्मेद तव गुण गावे, तो ।
हर धड़कन मांहे ध्यान लगावे ।। कांई ।।

।। इति ।।

पैंसठिया यन्त्र

६	१२	१८	२४	५
२३	४	१०	११	१७
१५	१६	२२	३	९
२	८	१४	२०	२१
१९	२५	१	७	१३

: रविवार :

तर्ज—जय बोलो महावीर

जय हो जय पद्म जिनेश्वर की,
जय पाप विनाशक सुखकर की ।।टेर।।

१—श्री वासुपूज्य अरह ज्ञानी,
शासनपति वर्द्धमान स्वामी ।
केवल कमला के प्रियवर की ।।जय ।।

२—श्री सुमत पार्श्व अभिनन्दन की,
शीतल श्रेयास कुन्थु जिन की ।
जय धर्म शांति शांति कर की ।।जय ।।

३–श्री नेमी सम्भव सुविधि देवा,
अजित चन्द्र अनन्त की सेवा।
मुनि सुव्रत नमि हित धर की ॥ जय...॥

४–मल्लि जिन है मंगलकारी,
धनुष पच्चीस जिन देह धारी।
नील कमल उपमाधर की ॥ जय...॥

५–श्री ऋषभ सुपार्श्व विमल ज्ञानी,
मेटी तन मन की सब खामी।
'उम्मेद' शरण ली जिनवर की ॥ जय...॥

६–रवि दिन शुद्ध मन से ध्यान धरे,
अज्ञान तिमिर को दूर करे।
कट जावे भव बाधा हर की ॥ जय...॥

पैसठिया यन्त्र

८	१४	२०	२१	२
२५	१	७	१३	१९
१२	१८	२४	५	६
४	१०	११	१७	२३
१६	२२	३	९	१५

: सोमवार :

तर्ज—धुसो बाजे रे

जय बोलो जय बोलो रे,
चन्द्र जिनेश्वर की ।। टेर ।।

१—चन्द्रपुरी का महासेन राया,
लक्ष्मीदेवी की उदर मे आया ।
जग तारक जय जिनवर की ।। जय.. ।।

२—अनन्त ज्ञानी अनन्त जिन ध्याऊ,
मुनि सुव्रत जिन शीश झुकाऊ ।
श्याम वर्ण जय प्रभुवर की ।। जय. ।।

३–नमिनाथ अजित गुण धामी,
पच्चीस कषाय तज शिव गति पामी ।
शिव रमणी के प्रियवर की ।। जय...।।

४–रिषभ सुपार्श्व विमल जग त्राता ।
मल्लि वासुपूज्य अरह् विधाता ।
वर्धमान शासन वर की ।। जय...।।

५–सुमत पद्म अभिनन्दन ध्याओ,
शीतल श्रेयांस कुन्थु गुण गाओ ।
पार्श्व नाग उद्धारक की ।। जय...।।

६–शांति नेमी सम्भव नाम सुहावे ।
सुविधि धर्म मेरे मन भावे
'उम्मेद' कहे जय गुणधर की ।। जय...।।

७–सोमवार को जिन गुण गावे,
पाप टले आत्म धन पावे ।
चरण शरण हो सुख कर की ।। जय...।।

पैंसठिया यन्त्र

१२	१८	२४	५	६
४	१०	११	१७	२३
१६	२२	३	९	१५
८	१४	२०	२१	२
२५	१	८	१३	१९

: मंगलवार :

तर्ज—दूर कोई गाए

वासु पुज्य करिये जाप, दु:ख टले कटे पाप ।
बनो अविकारी हो, जय जय कारी हो ॥ टेर ॥

१—चम्पा नगरी मे आया है,
वसु राजा के जाया है ।
मा जया को खुशी भारी हो ॥ जय...॥

२—अरह नाथ अन्तर्यामी,
वर्धमान शासन स्वामी ।
सुमत पद्म श्रेयकारी हो ॥ जय...॥

३—अभिनन्दन शीतल जग त्राता,
श्रेयांस कुन्थु जिन रिपु घाता ।
श्री पार्श्व नाथ उपकारी हों ।। जय...।।

४—शान्ति नेमी यादव नन्दा,
सम्भव सुविधि धर्म चन्दा ।
अनन्त की जाऊं बलिहारी हो ।। जय...।।

५—मुनि सुव्रत नमि नाथ,
अजित जिनेन्द्र जोडूं हाथ ।
पच्चीस कषाय निवारी हो ।। जय...।।

६—ऋषभ सुपार्श्व जग भान,
करदो विमल मुझ कल्याण ।
मल्लि ब्रह्मचारी हो ।। जय...।।

७—मंगलवार ने जिन ध्यावे,
ग्रह पीड़ा तो नहीं आवे ।
'उम्मेद' कहे भय हारी हो ।। जय...।।

पैंसठिया यन्त्र

१६	२२	३	९	१५
८	१४	२०	२१	२
२५	१	७	१३	१९
१२	१८	२४	५	६
४	१०	११	१७	२३

: बुधवार :

तर्ज कमली वाले ने

ॐ शान्ति शान्ति शान्ति कहो,
अचिरा नन्दन जय शान्ति कहो ।। टेर।।

१–अचिरा की कुक्षी मे आया है,
मृगी रोग को दूर भगाया है।
हर घर मे सुख शाति रहो ।। अचिरा ।।

२–अरिष्ट नेमी सम्भव सुविधि प्रभो,
धर्म शशि अनन्त मुनि सुव्रत विभो ।
नमि अजित विजया नन्द अहो ।। अचिरा ..।।

३–मिथ्यात्व पच्चीस हटाया है,
श्री आदिनाथ मन भाया है।
सुपार्श्व विमल का शरण गहो ।। अचिरा... ।।

४–मल्लि वासुपुज्य अरह सोहे,
श्री वर्द्धमान मन को मोहे।
त्रृशला के नन्दन वन्दन हो ।। अचिरा... ।।

५–श्री सुमत पद्म अभिनन्दन के,
शीतल श्रेयांस कुन्थु जिनके।
चिन्तामणि पार्श्व रटते रहो ।। अचिरा... ।।

६–बुधवार को जो नर ध्याएगा,
सुख सम्पत्ति शिव पद पाएगा।
'उम्मेद' हृदय में प्रतिपल रहो ।। अचिरा... ।।

पैंसठिया यन्त्र

१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४
२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८

: बृहस्पतिवार :

तर्ज—पनिहारी जी

१—ऋषभ सुपार्श्व विमल नमूं,
जिनवर जी हे लो, सुखकारी जी हे लो।
ब्रह्मचारी मल्लि नाथ, जिनवर जी॥

२—पच्चीस कषाय निवारनें, जिनवर .
पाया है, केवल ज्ञान॥ जिनवर

३—अरह नमू वर्धमान जी, जिनवर. .
सुमत पदम वासुपुज्य जिनवर जी...

४–शीतल श्रेयांस कुन्थु, वन्दु जिनवर ..
चिन्ता चूरण पार्श्व नाथ । जिनवर...

५–अभिनन्दन श्री नेमिजी, जिनवर
तारी है राजुल नार । जिनवर जी...

६–सम्भव सुविधि धर्म नाथ जी, जिनवर...
शांति वरताई शांति नाथ। जिनवर...

७–अनन्त मुनि सुव्रत जपो, जिनवर...
नमि अजित शशि राय ।। जिनवर...

८–प्रातः समय गुरु दिन पढ़ो, जिनवर...
ग्रह दशा टल जाय ।। जिनवर जी...

९–साध्वी 'उम्मेद' शरण लई, जिनवर...
भव दुःख दुष्कृत टार ।। जिनवर...

पैंसठिया यन्त्र

९	१५	१६	२२	३
२१	२	८	१४	२०
१३	१९	२५	१	७
५	६	१२	१८	२४
१७	२३	४	१०	११

: शुक्रवार :

तर्ज—नाथ कैसे गज को.......

सुविधि जिन अब मोय पार उतारो,
मैं तो लिनो हैं शरण तिहारो ।। टेर ।।

१—सुग्रीव नृप को कुल दीपक तूं,
रामा राणी को कुमारो ।
सयम लेकर केवल पाया तो,
जिन शासन उज्जवारो ।। सुविधि ..

२–धर्म शान्ति नेमि सम्भव नमि,
अजित चन्द्र दाता रो ।
अनन्त मुनिसुव्रत विमल मल्लि,
पच्चीस धनुष देहा कारो ।। सुविधि...

३–ऋषभ सुपार्श्व सुमत पदम प्रभो,
वासुपुज्य जयकारो ।
अरह नाथ ने नित उठ वन्दु तो,
वीर शासन सरदारो ।। सुविधि...

४–कुन्थु पार्श्व अभिनन्दन शीतल,
श्रेयांस हार हियारो ।
पलक न विसरूं चितारूं न प्रभुवर,
चित्त है चरण मझारो ।। सुविधि...

५–शुक्कर टुक्कर हो कर्मों का,
दुःख जावे जन्मारो ।
साध्वी 'उम्मेद' अरज करत है,
वेग मिटाओ भव फेरो ।। सुविधि...

पैंसठिया यन्त्र

२०	२१	२	८	१४
७	१३	१९	२५	१
२४	५	६	१२	१८
११	१७	२३	४	१०
३	९	१५	१६	२२

: शनिवार :

तर्ज—पायल की झकार

हाथ जोड कर करू विनति,
कर लेना स्वीकार ।
अब तो म्हाने पार लगा दो,
नाव पडी मझधार ॥ टेर ॥

१—लख चौरासी भटक २ कर आई हू,
अबके मानव जन्म धर्म शुभ पाई हूं ।
तुम मम रूप है एक समाना,
बाहिर का देवो निवार ॥ अबके

२—सुमति नराधिप मां पदमावती का जाया है,
राग द्वेष ने नष्ट करी ने शिव रमणी को पाया है।
मुझे भी तारो पार उतारो,
क्या लगता—तुम्हें भार ।। अबके...

३—मुनि सुव्रत नमि अजित शशि जिन ध्यावांला,
अनन्त सुपार्श्व विमल मल्लि जिन गावांला।
पच्चीस धनुष की काया सुन्दर,
नील वरण सुखकार ।। अबके...

४—प्रथम ऋषभ अन्तिम वीर शासन ज्योति है,
सुमत पद्म वासुपुज्य अरह जिन मंगल मोती है।
श्रेयांस कुन्थु पार्श्व चिन्तामणि,
चिन्ता चूरण हार ।। अबके...

५—अभिनन्दन शीतल सम्भव प्रियकारी है,
सुविधि धर्म शान्ति नेमी बल धारी है।
तोरण से रथ मोड़ चले प्रभु,
दी राजुल ने तार ।। अबके...

६—शनिवार ने जो जिनवर गुण गावेला,
रोग शोक चिन्ता नेड़े नहीं आवेला।
साध्वी 'उम्मेद' जन्म मरण मिटे,
पल में मोक्ष मझार ।। अबके...

पैंसठिया यन्त्र

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

: शनिवार :

तर्ज—तुम से लागी लगन

प्रभो ! नेमी जिनन्द,
धन्य यादव चन्द ।
करुणा लाया,
प्रभु तोरण से रथ को फिराया ।। टेर ।।

१—समुद्र विजय जी के प्राण प्यारे,
शिवा देवी-के-नन्द दुलारे ।
तुम हो त्रिलोकी नाथ,
रक्खू चरणो मे माथ ।
अक्षय पद पाया ।। प्रभु तोरण...

२–सम्भव सुविधि धर्मसुख कन्दा,
शान्ति अनन्त मुनि सुव्रत दुःख निकन्दा।
नमि अजित चन्द्र स्वाम,
ऋषभ सूपार्श्व शिव धाम।
विमल मन भाया ।। प्रभु तोरण...

३–मल्लि पच्चीस कषाय निवारी,
अरह वीर सुमति हितकारी।
श्री पद्म वासु पूज्य,
शीतल श्रेयांस कुन्थु जय।
जग यश छाया ।। प्रभु तोरण...

४–प्रभु पार्श्व की महिमा है न्यारी,
नाम में जादू भरा है चमत्कारी।
पल में करदे निहाल,
अभिनन्दन मंगल माल।
शिव सुख पाया ।। प्रभु तोरण...

५–शनि को जिनन्द गुण गावे,
मन वांछित सुख प्रकटावे।
राहु न लागे कदा,
'उम्मेद' जपले सदा।
मरण मिटाया ।। प्रभु तोरण...

२३	४	१०	११	१७
१५	१६	२२	३	९
२	८	१४	२०	२१
१९	२५	१	७	१३
६	१२	१८	२४	५

: शनिवार :

तर्ज—नवकार मत्र है महामत्र

चिन्तामणि चिन्ता दूर करो,
मैं शरण तुम्हारे आई हू ।
श्री पार्श्वनाथ मेरे कष्ट हरो,
मै शरण तुम्हारी आई हू ।। टेर ।।

१—लक्कड को तुमने चिराया था,
नाग नागण का प्राण बचाया था ।
धरणेन्द्र पद दिलवाया था ।। मै शरण

२–अभिनन्दन शीतल निरूपम हो,
श्रेयांस कुन्थु पुरुषोत्तम हो।
श्री धर्म शान्ति पुरुषोत्तम हो ।। मैं शरण...

३–अरिष्ट नेमी सम्भव जिन सुविधि,
अजित चन्दा अनन्त सिद्धि ।
मुनि सुव्रत नमि करो वृद्धि ।। मैं शरण..

४–मल्लि पच्चीस धनुष देहा कारे,
उपदेश देय राजाओं तारे ।
सवा पहर में केवल प्राप्त करे ।। मैं शरण...

५–श्री आदिनाथ आदि करता,
सुपार्श्व विमल निर्मल करता ।
श्री पद्म वासु पुज्य दुःख हरता ।। मैं शरण...

६–श्री अरहनाथ अन्तर्यामी,
प्रभो महावीर शासन स्वामी ।
श्री सुमितनाथ सुमति धामी ।। मैं शरण...

७–शनि को जिनवर नाम रटे,
केतु आदि ग्रह दूर हटे ।
'उम्मेद' शरण से मरण कटे ।। मैं शरण...

चौंतीस का यन्त्र

१	१४	७	१२
८	११	२	१३
१०	५	१६	३
१५	४	९	६

तर्ज—हा सगी जीने पेडा भावे

हा सती सोलह गुण गाओ ।
नित उठ चरणो मे शीश झुकाओ ।
मिटे कर्म दु ख रोग शोक
सुख समृद्धि पाओ रे ।। टेर ।।

१—ऋषभ देव पुत्री धन्य ब्राह्मी,
सुलसा द्रोपदी महा गुण खानी ।
चम्पा द्वार ने खोल सुभद्रा—
सुयश जग छायो रे ।। सती ..

२–शील सुरंगी चन्दन बाला,
प्रथम शिष्या प्रभु वीर की आला ।
प्रभावती सती सुन्दरी––
शिव सुख धन पायो रे ।। सती...

३–दमयन्ती चेलणा सुख कारी,
राजमती की जाऊं बलिहारी ।
चौपन दिन के पूर्व सती––
अक्षय पद पायो रे ।। सती...

४–पद्मावती कौशल्या जयकारी,
शिवा सीता जगत जहारी ।
अग्नि कुण्ड थयो नीर––
देव नर सुयश गायो ।। सती...

५–मृगावती खंती अपनाई,
केवल पा मुक्ति में सिधाई ।
धन्य सती कुन्ती––
अमरा पद पायो रे ।। सती...

६–मम गुरुणीसा अर्चना जी प्रसादे,
साध्वी उम्मेद सुख आनन्दे ।
प्रातः उठ गुण गावतां––
इण सम बन जाओ रे ।। सती...

भगवान महावीर की तपस्या

तर्ज—साथणिया म्हारो रातडली सपनो ..

सुनिये भव्य प्राणी, महावीर के जीव ने
तपस्या यू कीनो ॥
सुनिये भव प्राणी, कर्म द्वन्द्व ने काट लिया
शिव सुख स्थानो ॥ टेर ॥

१—चक्रवर्ती के जन्म मे, सुख वैभव दिया छोड़ ।
संयम पाला करोड़ वर्ष, वज्र कर्म दिया तोड़ ॥
अजी वीर प्रभु ने चक्रवर्ती के भव मे तपस्या
यूं कीनो ॥ सुनिये...

२—११ करोड इकसठ लाख, तीस सहस्र परिमान
वत्तीस कीना ऊपरे, मास मास तप ठान ।
अजी वीर प्रभु ने आतम बल जाग्रित कर
ज्योति जगा लीनो ॥ सुनिये .

३—नन्दराय भव पच्चीसवें, सयम ले प्रभु ध्यान,
११ लाख ६१ सहस्र, दो शत मास तप जान ।
अजी वीर प्रभु ने वीस बोल कर गोत्र तीर्थंकर
पालीनो ॥ सुनिये...

४–कुण्डलपुर में राय सिद्धार्थ, तृशला उदर अवतार
चौसठ इन्द्र महोत्सव कियो, घर २ मंगलच्चार ।
अजी वीर प्रभु संयम ले, कर्म बीज जलावन
ठालीनो ।। सुनिये...

५–नव चौमासी तप किया, एक करी छ मास ।
अभिग्रह दूजी ६ मासी में, तेरह बोल विमास ।।
अजी चन्दन बाला पारणा दे प्रभु वीर को
आत्म उज्जवल की ।। सुनिये...

६–अढ़ाई मास तीन मास दो, दोय मास खट जान ।
डेढ़ मास वलि दो करी, मास द्वादश मान ।।
अजी वीर प्रभु अभद्र महाभद्र शिवभद्र तपस्या
यूं कीनी ।। सुनिये...

७–पक्ष बहोत्तर प्रभु किया, बेला किया गुनतीस ।
भिक्षु प्रतिमा अष्टम करी, प्रतिपल नमाऊं शीश ।।
अजी वीर प्रभु ने घोर परिषह सहकर मुक्ति
पालीनी ।। सुनिये...

८–साढ़ी ११ वर्ष के ऊपरे, पच्चीस दिन तपधार ।
एक सो गुनपच्चास दिन, पारणे किये दातार ।।
अजी वीर प्रभु के कानों में कील्ले ठोके समता
कीनी ।। सुनिये...

९--आप विराज्या मोक्ष मे, मैं इण भरत मे माय ।
किन्तु अब ना रह सकू, ज्योत मे ज्योत मिलाय ।।
अजी द्वैत कल्पना, मिटा जिनेश्वर एक ही
कर दीनी ।। सुनिये...

१०--गुरुणीसा वरदान दो, ढाऊ कर्म पहाड़ ।
कृपा होय जो आपकी तो, सहु न जग की पछाड़ ।।
सतो उम्मेद की अरजी पर मरजी करदीनी ।।
सुनिये .

११--दोय हजार छतीस मे, उदयपुर शहर मझार ।
आषाढ सुद दशमी भली, सिद्ध योग गुरुवार ।।
अजी मदनपोल मे गाकर आज सुना दीनी । सुनिये ..

।। इति ।।

: जय गुण महिमा :

तर्ज—रघुपति राघव........

जयमल गणिका प्यारा नाम,
जपले वन्दे सुबह और शाम ।। टेर ।।

१—वर्ष बावीस में हो गई शादी,
अर्ध वर्ष में भये वैरागी ।
भेंटे गुरुवर भूधर स्वाम ।। जपले .. ।।

२—गुरु भूधर थे घोर तपस्वी,
आत्म ध्यानी महा यशस्वी ।
पांच पांच का तप प्रधान ।। जपले... ।।

३—आपकी महिमा जय वर भारी,
छोड़ी नव परणिता नारी ।
कामदेव का मिटा निशान ।। जपले... ।।

४—सोलह वर्ष एकान्तर धार,
कर्म रिपु पर किया प्रहार ।
वर्ष बावन नहीं सोये स्वाम ।। जपले... ।।

५–आप नाम मे जादू भरा है,
जो ध्यावे सब कष्ट टरा है।
तत्क्षण पावे सुख का धाम ॥ जपले . ॥

६–साध्वी 'उम्मेद' तव गुण गावे,
शत शत चरणो मे शीश झुकाये।
शिव शक्ति का दो वरदान ॥ जपले ॥



श्री बड़ी साधु-वन्दना

नमूँ अनन्त चौबीसी, ऋषभादिक महावीर ।
आरज क्षेत्र माँ घाली, धर्म नी शीर ।।१।।

महा अतुल बली नर, शूर वीर ने धीर ।
तीरथ प्रवर्तावी, पहुंचा भव जल तीर ।।२।।

सीमंधर प्रमुख, जघन्य तीर्थंकर बीस ।
छे अढ़ाई द्वीप माँ, जयवँता जगदीश ।।३।।

एक सौ ने सत्तर, उत्कृष्टा पद जगीश ।
धन्य म्होटा प्रभुजी, तेहने नमाऊँ मारो शीश ।।४।।

केवली दोय कोड़ी, उत्कृष्टा नव कोड़ ।
मुनि दोय सहस्त्र कोड़ी, उत्कृष्टा नव सहस्त्र कोड़ ।।५।।

विचरें विदेह में म्होटा तपसी घोर ।
भावे करी बँदू, टाले भव नी खोड़ ।।६।।

चौबीसे जिन नां; सगला ही गणधार ।
चवदह सौ ने बावन, ते प्रणमूँ सुखकार ।।७।।

श्री 'उत्तराध्ययन' माँ, जिनवर कर्या वखान ।
शुद्ध मन से ध्यावो, मन मे धीरज आण ।।२६।।

वलि 'खदक' संन्यासी, राख्यो गौतम स्नेह ।
महावीर समीपे, पच महाव्रत लेह ।।२७।।

तप कठिन करीने झौंसी आपणी देह ।
गया अच्युत देवलोके, चवि लेसी भव-छेह ।।२८।।

वलि 'ऋषभदत्त' मुनि सेठ 'सुदर्शन' सार ।
"शिवराज' ऋषीश्वर, धन्य 'गांगेय' अणगार ।।२९।।

शुद्ध सयम पालो, पाम्या केवल सार ।
ये चारो मुनिवर, पहुँत्या मोक्ष मभार ।।३०।।

भगवत नी माता, धन्य धन्य सती 'देवानंदा' ।
वली सती 'जयती' छोड दिया घर फदा ।।३१।।

सती मुगति पहुँत्या, वली वीर नी नद ।
महासती 'सुदर्शना', घणी सतियो ना वृन्द ।।३२।।

वलि 'कार्तिक' सेठे पड़िमा वहीशूरवीर ।
जीम्यो मोरा ऊपर, तापस बलती खीर ।।३३।।

पछी चारित्र लीधूँ, मित्री एक सहस्र आठ धीर ।
मरी हुआ 'शक्रेन्द्र', च्यवि लेसे भव-तीर ।।३४।।

वलिराय 'उदायन' दियो भाणजा ने राज ।
पछी चारित्र लईने, सार्या आतम काज ।।३५।।

'गंगदत्त' मुनि 'आनंद', तारण तरण जहाज ।
मुनि 'कौशल' 'रोहो', दियो घणा ने साज ।।३६।।

धन्य 'सुनक्षत्र' मुनिवर, 'सर्वानुभूति' अणगार ।
आराधक हुई ने, गया देव लोक मँझार ।।३७।।

चवि मुगते जासी, वलि 'सिंह' मुनीश्वर सार ।
बीजा पण मुनिवर; भगवती माँ अधिकार ।।३८।।

'श्रेणिक' ना बेटा, म्होटा मुनिवर 'मेघ' ।
तजी आठ अँतेउर, आण्यो मन सँवेग ।।३९।।

वीर पै व्रत लेईने, बाँधी तपनी तेग ।
गया विजय विमाने, चवि लेसे शिव वेग ।।४०।।

धन्य 'थावच्चा पुत्र', तजी बत्तीसों नार ।
नेनी साथे निकल्या, पुरुष एक हजार ।।४१।।

'शुकदेव' संन्यासी, एक सहस्त्र शिष्य लार ।
पांचसो से 'शेलक', लीधो संजम भार ।।४२।।

सब सहस्त्र अढ़ाई, घणा जीवों ने तार ।
पुंडरिक गिरि ऊपर, कियो पादोपगमन संथार ।।४३।।

आराधक हुईने, कीधो खेवो पार ।
हुआ मोटा मुनिवर, नाम लिया निस्तार ।।४४।।

धन्य 'जिनपाल' मुनिवर, दोय 'धन्ना' हुआ साध ।
गया प्रथम देव लोके, मोक्ष जासे आराध ।।४५।।

'श्री मल्लीनाथ' ना छह मित्र, 'महाबल' प्रमुख मुनिराय ।
सर्वे मुक्ति सिधाव्या, म्होटी पदवी पाय ।।४६।।

वलि 'जित शत्रु' राजा, सुबुद्धि नामे प्रधान ।
पोते चारित्र लई ने, पाम्या मोक्ष निधान ।।४७।।

धन्य 'तेतली' मुनिवर, दियो छकाय ने अभयदान ।
'पोटिला' 'प्रतिबोध्या' पाम्या केवल ज्ञान ।।४८।।

धन्य पाँचे 'पाडव', तजी 'द्रौपदी' नार ।
स्थिरा नी पासे, लीधो सयम भार ।।४९।।

श्री नेम वदन नो एहवो अभिग्रह कीध ।
मास मास खामण तप, शत्रुंजय जई सिद्ध ।।५०।।

'धर्मघोष' तणा शिष्य, 'धर्मरूचि' अणगार ।
कीडियोनी करूणा, आणी दया अपार ।।५१।।

कडवा तूंबा नो, कीधो सगलो आहार ।
सर्वार्थ सिद्ध पहुँत्या, चविलेसे भवपार ।।५२।।

बली 'पुंडरिक' राजा, कुंडरिक डिगियो जाण ।
पोते चारित्र लेईने, न घाली धर्म मां हाण ॥५३॥

सर्वार्थ सिध पहुँत्या, चविलेसे निर्वाण ।
श्री ज्ञाता सूत्र मां, जिनवर कर्या बखाण ॥५४॥

'गौतमादिक' कुंवर, सगा अठारे भ्रात ।
"अंधक वन्हि' सुत, धारणी ज्यांरी मात ॥५५॥

तजी आठ अतेउर, काढ़ी दीक्षा नी बात ।
चारित्र लईने, कीधो मुक्ति नो साथ ॥५६॥

श्री 'अनीक सेनादिक' छयों सहोदर भाय ।
वसुदेव ना नंदन, देवकी ज्यांरी माँय ॥५७॥

भद्दिल पुर नगरी, नाग गहावई जाण ।
सुलसा घर वधिया, साँभली नेमिनी वाण ॥५८॥

तजी बत्तीस बत्तीस अंतेउर, निकल्या छिटकाय ।
नलकूबेर समाना, भेटिया श्री नेमिना पाय ॥५९॥

करि छठ छठ पारणा, मन में वैराग्य लाय !
एक मास संथारे; मुक्ति विराज्या जाय ॥६०॥

वलि 'दारुक' 'सारण'; 'सुमुख' 'दुमुख' मुनिराय ।
वलि कुँवर 'अनाधृष्ट', गया मुक्ति गढ़ माँय ॥६१॥

वसुदेव ना नंदन, धन्य धन्य 'गजसुकुमाल' ।
रूपे अति सुन्दर, कलावंत वय बाल ॥६२॥

श्री नेमि समीपे, छोड्यो मोह जजाल ।
भिक्षुनी पड़िमा, गया मसाण महाकाल ॥६३॥

देखी 'सोमल' कोप्यो, मस्तक बांधी पाल !
खेरा ना खीरा, शिर धरिया असराल ॥६४॥

मुनि नजर न खंडी, मेटी मन नी झाल ।
परीषह सहीने, मुक्ति गया तत्काल ॥६५॥

धन्य 'जाली' 'मयाली' 'उवयाली' आदिक साध ।
'साब' ने 'प्रद्युम्न', 'अनिरुध' साधु अगाध ॥६६॥

वलि 'सत्यनेमि' 'दृढनेमि' करणी कीधी निर्बाध ।
दशे मुक्ति पहुँत्या, जिनवर वचन अराध ॥६७॥

धन्य 'अर्जुन माली' कियो कदाग्रह दूर ।
वीर पे व्रत लईने, सत्यवादी हुआ सूर ॥६८॥

करी छठ छठ पारणा, क्षमा करी भरपूर ।
छह मासा माही, कर्म किया चकचूर ॥६९॥

कुँवर 'अइमुत्ते' दीठा गौतम स्वाम ।
सुणि वीरनी वाणी, कीधो उत्तम काम ॥७०॥

चारित्र लेईने, पहुँत्या शिवपुर ठाम ।
धुर आदि 'मकाई' अंत 'अलक्ष' मुनि नाम ॥७१॥

वलि 'कृष्ण' रायनी' 'अग्रमहीषी' आठ ।
'पुत्र बहू' दोय, संच्या पुण्य ना ठाठ ॥७२॥

जादव कुल सतियां, टाल्यो दुख उचाट ।
पहुँती शिवपुर मां, ऐ छे सूत्र नो पाठ ॥७३॥

श्रेणिक नी रानी; 'काली' आदि दश जाण ।
दशे पुत्र वियोगे, साँभली वीर नी वाण ॥७४॥

'चंदन बाला' पे, संयम लेई हुई जाण ।
तप करी देह झौंसी पहुँती छे निर्वाण ॥७५॥

'नंदादिक' तेरह, श्रेणिक नृपनी नार ।
सगली चंदनबाला पे, लीधो संयम भार ॥७६॥

एक मास संथारे, पहुँती मुक्ति मँझार ।
ए नेऊं जणानो अंतगड़ मां अधिकार ॥७७॥

श्रेणिक ना बेटा; 'जाली' आदिक तेबीस ।
वीर पे व्रत लेईने पाल्यो बिसवाबीस ॥७८॥
तप कठिन करीने, पूरी मन जगीश ।
देवलोके पहुँत्या, मोक्ष जासे तजीं रीश ॥७९॥

काकदीनो 'धन्नो', तजी बत्तीसो नार ।
'महावीर' समीपे, लीधो सयम भार ॥८०॥

करी छठ छठ पारणा आयविल उज्झित आहार ।
श्री वीर वखाण्यो, धन्न 'धन्नो' अणगार ॥८१॥

एक मास सथारे, सर्वार्थ सिद्ध पहुँत ।
महाविदेह क्षेत्र मा, करसे भव नो अत ॥८२॥

धन्ना नी रीते, हुआ नवे ही सत ।
श्री 'अणुत्तरोववाई' मा भाखि गया भगवत ॥८३॥

'सुबाहु' प्रमुख, पांच पांच सौ नार ।
तजी वीर पे लीधा, पाच महाव्रत सार ॥८४॥

चारित्र लेईने, पाल्या निरतिचार ।
देवलोके पहुँच्या, सुखविपाके' अधिकार ॥८५॥

श्रेणिक ना पोता 'पौमादिक' हुआ दश ।
वीर पे व्रत लेईने काढ्यो देहनो कस ॥८६॥

सयम आराधी, देवलोके मा जई वस ।
महा विदेह क्षेत्र मा, मोक्ष जासे लई जस ॥८७॥

बलभद्र ना नदन, 'निषधादिक' हुआ बार ।
तजी पचास अतेउरी, त्याग दियो ससार ॥८८॥

सहुनेमि समीपे, चार महाव्रत लोध ।
सर्वार्थ सिद्ध पहुँत्या, होसे विदेह में सिद्ध ॥८९॥

'धन्नो' ने 'शालिभद्र' मुनीश्वरोंनी जोड़ ।
नारीना बंधन तत्क्षण नाख्या तोड़ ॥९०॥

घर कुटुम्ब कबीलो, धन कंचन नी कोड़ ।
मास मास खमण तप, टालसे भवनी खोड़ ॥९१॥

श्री 'सुधर्म' स्वामीना शिष्य धन्य धन्य 'जंबू' स्वाम ।
तजी आठ अंतेउरी, मात पिता धन धाम ॥९२॥

'प्रभवादिक' तारी, पहुँत्या शिवपुर ठाम ।
सूत्र प्रवर्तावी, जगमो राख्यूँ नाम ॥९३॥

धन्य 'ढ़ंढ़ण' मुनिवर, कृष्णराय ना नंद ।
शुद्ध अभिग्रह पाली, टाल दियो भव फंद ॥९४॥

वलि 'खंदक' ऋषिनी, देह उतारी खाल ।
परीषह सहीने, भम फेरा दिया टाल ॥९५॥

वलि 'खंदक' ऋषिना, हुआ पांचसौ शीस ।
घाणी मां पील्या, मुक्ति गया तज रीष ॥९६॥

'संभूति विजय' शिष्य, 'भद्रबाहु' मुनिराय ।
चौदह पूर्व धारी, 'चंद्रगुप्त' आण्यो ठाय ॥९७॥

वलि 'आर्द्रकुंवर' मुनि, 'स्थूलभद्र' 'नदिषेण' ।
'अरणक' 'अइमुत्तो', मुनिश्वरो नी श्रेण ॥९८॥

चौवीसे जिनना, मुनिवर सख्या अठावीस लाख ।
ऊपर सहस्र अडतालीस, सूत्र परपरा भाख ॥९९॥

कोई उत्तम वाचो मोढे जयणा राख ।
उघाडे मुख वोल्या, पाप लागे इम भाख ॥१००॥

धन्य 'मरूदेवी' माता ध्यायो, निर्मल ध्यान ।
गज होदे पायो, निर्मल केवल ज्ञान ॥१०१॥

धन्य 'आदेश्वरनी' पुत्री, 'ब्राह्मी' सुंदरी दोय ।
चारित्र लेईने, मुक्ति गई सिद्ध होय ॥१०२॥

चौवीसे जिननी, वडी शिष्यणी चौवीस ।
सती मुगते पहुंत्या, पूरी मन जगीस ॥१०३॥

चौवीसे जिनना, सर्व साधवी सार ।
अडतालीस लाखने, आठ सो सत्तर हजार ॥१०४॥

चेड़ानी पुत्री, राखो धर्म नी प्रीत ।
'राजिमती' विजया', 'मृगावती' सुविनीत ॥१०५॥

'पद्मावती' 'मणयरेहा', द्रोपदी' 'दमयती' 'सोत' ।
इत्यादिक सतियां, गई जमारो जीत ॥१०६॥

चौवीसे जिनना, साधु साधवी सार ।
गया मोक्ष देवलोके, हृदय राखो धार ।।१०७।।

इण अढ़ाइद्वीप मां, कचरड़ा तपसीं बाल ।
शुद्ध पंच महाव्रत पालीं, नमो नमो त्रिकाल ।।१०८।।

इण यतियों सतियों ना, लींजे नित प्रति नाम ।
शुद्ध मन थीं ध्यावो, एह तिरणनो ठाम ।।१०९।।

इण यतियों सतियों सूं राखो उज्ज्वल भाव ।
इम कहे ऋषि 'जयमलजी' एह तिरण नो दाव ।।११०।।

संवत अठारे ने वर्ष, साते सिरदार ।
गढ 'जालोर' मांहि, एह कह्यो अधिकार ।।१११।।

चौबीसी

तर्ज—कुटुम्ब तज शरण राम

भविक जन चौबीस जिनवर ध्याओ,
कर्म द्वन्द को दूर हटा कर
आतम ज्योति जगाओ ।। टेर ।।

१–ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन,
सुमत पद्म जिन गाओ ।
सुपार्श्व चन्द्र जिन शुक्ल वर्ण है,
शुक्ल ध्यान प्रभु पायो ।। भविक...

२–सुविधि शीतल श्रेयांस वासुपुज्य,
विमल अनन्त सुख पायो ।
धर्म शान्ति जिन शान्ति करीने,
मृगी रोग हटायो ।। भविक .

३–कुन्थु अरह मल्लि मुनि सुव्रत,
नमि नेम शिव पायो ।
तोरण से रथ मोड चले प्रभु,
पशुओको अभय दिरायो ।। भविक

४–पार्श्व प्रभु की महिमा निराली,
नाग नागिन प्राण बचायो ।
महा बलधारी आत्मा तारी,
वीर जन्मत मेरु कम्पायो ।। भविक...

५–वीस विहर मुनि ग्यारह ही गणधर,
सोलह सती शील सवायो ।
गुरुवर्या अर्चना जी प्रसादे,
सती उम्मेद जिन गुण गायो ।। भविक...

चौबीसी

तर्ज—मेरे घर पर बिजली लगा दो

चौवीस जिनेन्द्र को ध्याते चलें,
घाति कर्मों के वृन्द उड़ाते चलें ।। टेर ।।

१–ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दना,
सुमत पद्म सुपार्श्व को वन्दना ।
चन्द्र प्रभो चरण चित धरते चलें ।। चौबीस

२–सुविधि शीतल श्रेयास वासु प्रभो,
विमल अनन्त धर्म शान्ति नाथ विभो ।
शान्ति शान्ति की ध्वनिया गु जाते-चलें ॥ चौबीसी

३–कुन्थु अरह् मल्लि मुनि सुव्रत जी,
नमि नेमी पार्श्व महावीर जो ।
उन के पद चिह्नो पर चलते चलें ॥ चौबीसी

४–गुरणीसा आपकी महिमा मैं कह् न सकू
लाखो जीभ मिले फिर भी गा न सकू ।
श्वासो श्वास मे रटन लगाते चलें ॥ चौबीसी

५–अरजी मानो न मानो, मै दरपे खडी,
मोक्ष देवो न देवो मै, चरणो पडी ।
'उम्मेद' आशा से वक्त विताते चलें ॥ चौबीसी

चौबीसी

तर्ज—मन डोले मेरा दिल

पक्खी खमाऊ जन्म घटाऊ,
सफल करू अवतार रे ।
अब तार दे मेरे जिनवरियां ॥ टेर ।

१—ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन,
सुमत जिनेश्वर प्यारा ।
पद्म सुपार्श्व चन्द्र प्रभ जिनवर,
लागे मोहन गारा अजी हा लागे मोहन गारा ।
सुविधि शीतल श्रेयांस वासु पुज्य,
अधम उधारण हार रे ।। अब तारदे…

२—विमल अनन्त धर्म नाथ शान्ति प्रभो,
शान्ति-शान्ति वरतावे ।
कुन्थु अरह मल्लि मुनि सुव्रत,
भव्य जनों मन भावे ।
अजी हा भव्य जनों मन भावे ।
नमि नेम श्री पार्श्व वीर प्रभु,
भवोदधी पार उतार रे ।। अब तारदे…

३—बीस विहर मुनि ग्यारह हो गणधर,
सोलह सती गुण गाओ ।
गुरु गुण धारी पर उपकारी
नैया पार लगाओ, अजी हां नैया पार लगाओ…
द्वेष हटाओ प्रेम बढ़ाओ,
हो जावे उद्धार रे ।। अब तारदे मेरे जिनवरिया…

४—पक्खी सम्बन्धी क्षमत क्षमापना,

सब से करती भाई।
लक्ष चौरासी को मै क्षमाती,
यही मेरे मन आई।
अजो हा यहो मेरे मन आई।
जिन गुण गाती हर्ष मनाती,
उगताई भव जार रे ।। अब तारदे मेरे जिनवरिया

५–हे प्रभो आओ पार लगाओ, बीच भवर है नैया।
करुणा लाओ स्रोत बहाओ, पतितो के तरैया,
अजी हा पतितो के तरैया।
सती उम्मेद घबराई, बहु दुःख पाई।
अब चौरासी फन्द टार रे ।। अब तारदे

चौबीसी

तर्ज—धुसो बाजे रे

जय बोलो जय बोलो रे
चोवीसो जिनवर की ।।
१–ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन,
सुमत पद्म सुपार्श्व को वन्दन।
चन्द्र प्रभो चित सुमरण को ।। जय

२—सुविधि शीतल श्रेयांस को मनाऊं,
वासु पुज्य विमल गुण गाऊं।
अनन्त धर्म शान्ति कर की ॥ जय...

३—कुन्थु अरह मल्लि ब्रह्मचारी,
मुनि सुव्रत जी की जाऊं बलि हारी।
नमि नेमी करुणा कर की ॥ जय...

४—नाग उद्धारक पार्श्व स्वामी,
शासन पति वृद्धमान सुज्ञानी।
विहरमान और गणधर की ॥ जय...

५—दोय हजार चालीस का आया,
शहर इन्दौर चौमासा ठाया
उम्मेद शरण ली जिनवर की ॥ जय...

चौबीसी

तर्ज—जय बोलो महावीर......

मन चरण नमो चौबीस जिन के,
सब दुःख हरे प्रभु भव वन के ॥ टेर ॥

श्री सिमन्दर स्वामी

तर्ज—घूसो बाजे रे

वन्दन कर लो वन्दन कर लो रे,
सिमन्दर जिनवर को ।। टेर ।।

१–कंचन वरणी प्रभु जी की काया,
धोरी लछन जिनवर पाया ।
पुण्डरिक गिरि के नर वर को ।। वन्दन...

२–तीन भवन के हैं वे नायक,
चौसठ इन्द्र चरण के पायक ।
ज्ञान दर्शन चारित्र को ।। वन्दन

३–प्रभु तुम सेवा नी मैं छूँ रसिका,
भरत क्षेत्र माही छूँ (मै) बसी का ।
सती उम्मेद वन्दन शिववर को ।। वन्दन

———

विहरमान

तर्ज—पायल की झनकार.....

क्षेत्र विदेह में विराजो प्रभुवर,
श्री सिमन्दर स्वाम ।
भरत क्षेत्र सूं करूं वन्दना,
जग तारन सुख धाम ।। टेर ।।

१–बारह परिषदा सुनी देशना जिनवर की,
चौतिष अतिशय पैतीस वाणी सुखकर की ।
भव्य प्राणी प्रति बोधित होकर,
लहे अविचल मंगल स्थान ।। क्षेत्र विदेह...

२–निश दिन चाहुं पुनित चरण की सेवा में,
देव मित्र नहीं आऊं कैसे देवा में ।
आडे पर्वत बांको नदियां कैसे सारु काम ।। क्षेत्र...

३–इतनी प्रभु जी कृपा मोपर कर दीजो,
पावन चरण शरण में मुझ ने ले लीजो ।
प्रतिपल यहां से करूं वन्दना,
दो शिव सुख का वरदान ।। क्षेत्र विदेह...

४–गुरुवर्या महा महिम अर्चना जी का मैं,
आशीर्वाद सदैव साथ रहे चाहुं मैं ।
साध्वी उम्मेद जन्म मरण मिटा, मैं पाऊं पद निर्वाण ।। क्षेत्र...

श्री सिमन्दर

तर्ज—दिल लूटने वाले जादूगर

ओ ! चन्दा तू सन्देश, एक मेरा लेकर के जाना रे ।
और हाथ जोड वन्दन कहना,
यह विनति मेरी सुनाना रे ।। टेर ।।

१–श्रेयांस राय के नन्दन को,
शान्ति माता कुल चन्दन को ।
पुण्डरिकनी नगरी के नायक को ।। विनती मेरी

२–धनु पाचसो सुन्दर काया,
धोरी लञ्छन जिनवर पाया ।
अनन्त बलि कहलाया है ।। विनती मेरी

३–त्रय रत्न अतिशय धारक है,
भव्य जीवो के उद्धारक है ।
प्रभु कर्म शत्रु सहारक है ।। विनती मेरी

४–तुम चरणो मे मन मेरा है,
अन्तराय कर्म ने घेरा है ।
'उम्मेद' आसरा तेरा है ।। विनती मेरी यह

—

विहरमान

तर्ज—मन डोले मेरा दिल····

गुण गाऊं तोये बलि जाऊं,
तुझ पद अटके नैन रे, अब पार लगादे नावरिया...

१–सिमन्दर युगमन्दर स्वामी, बाहु सुबाहु प्यारे ।
सुजात स्वामी स्वयं प्रभुजी,
है नैनों के तारे, अजी हां है नैनों के तारे ।
ऋषभा नन्दन अनन्त वीर्य जी,
सूर प्रभु शिव गामी रे ।। अब पार लगादे...

२–वज्रधर अरु विशाल धर प्रभु, चन्द्रा नन्दन ज्ञानी ।
चन्द्रबाहु भुजंग ईश्वर, नेमनमूं शिरनामी ।
अजी हाँ नेम नमूं शिरनामी ।
वीर सेन महाभद्र देवयश,
अजित वीर्य जिनराय रे ।। अब पार लगादे...

३–आप विराजो महा विदेह में,
मैं इण भरत के मांही ।
प्रतिपल अखियाँ तरस रही हैं;

तुम दर्शन के ताही । अजी हाँ
किरपा करदो शक्ति देदो,
करु साधना आऊ तुम पाय रे ।। अब पार ..

४–दोय हजार के पन्द्रह मे हम,
शहर जयपुर मे आये ।
गुरुणीसा की कृपा हुई तब,
'उम्मेद' जिन गुण गाये । अजी हा उम्मेद .
अरजी करती चरण फरसती,
जन्म मरण भय टार रे ।। अब पार लगादे ..

विहरमान

तर्ज—रूमाल

पाखण्ड प्रपंचो मे भूला प्राणी, सिमन्दर का ध्यान ।
सिमन्दर का ध्यान, करता आतम का कल्याण ।।टेर।।

१–क्षेत्र विदेह मे अभी विचरते, जैसे गगन मे भान ।
माता शान्ति के नन्दन नीके, तात श्रेयास सुजान ।।
पाखण्ड .

२–चोसट मघवा इन्द्राणी सह, आये बैठ विमान ।
जन्म महोत्सव कर छप्पन कुमारी, गाया मंगल गान ।।
पाखण्ड ..

३–चारित्र रत्न ले विचरण लागा, कर करणी परधान ।
कर्म रिपु को मार गिराया, पाया केवल ज्ञान ।।
पाखण्ड...

४–'अर्चना' अज्ञान के वश से भूली, निज आतम का भान ।
मोह तिमिर को दूर हटा कर, ज्ञान ज्योति दो महान ।।
पाखण्ड...

गोतम गणधर स्तुति

तर्ज—बीरा लुम्बा झुम्बा....

म्हाने लागे गोतम स्वामी प्यारा,
जो रिद्ध सिद्ध के दातारा जी ।। टेर ।।

१–वसुभूति के कुल चन्दा । माता पृथ्वी के नन्दा जी ।।

२–श्री वीर के शिष्य कहाये । त्रिपदी से सूत्र रचाये जी ।।

३–है कंचन वरणी काया । प्रभु गणधर पदवो पाया जी ।।

४–'गो' मे सुर धेनु तुम जानो । सुर तरु 'त' में मानो जी ।।
५–चिन्तामणि रत्न है भारी । वह 'म' में है सुखकारी जी ।।
६–इन्द्रभूति नाम के धारी । मन वाछित पूरण कारी जी ।।
७–जो गोतम ध्यान लगावे । वो सब सुख सम्पति पावे जी ।।
८–शुभ लब्धिधारी नामी । 'मधुकर' के अन्तर्यामी जी ।।
९–सब मिल कर के गुणगावो । शिव सुख के आनन्द पावो जी ।

गोतम गणधर स्तुति

तर्ज—जय बोलो महावीर

भज गोतम गणधर गुण खानी,
आगम मे गुथी जिनवाणी ।। टेर ।।
१–चतुज्ञान पूर्व चवदह ज्ञाता,
जो सुमरे पावे सुखसाता सनिध कारी,
शिव सुख दानी ।। भज गोतम .
२–सुरनर का मन मोहते हैं,
और पाप कालिमा धोते हैं ।
भवि तारे मन करुणा आनी ।। भज.
३–केई प्रसन्न पूछ सशय टाले,
जग त्राता शरणा गत पाले
अब आश 'अर्चना' को ज्ञानी ।। भज...

गोतम गणधर स्तुति

ऋद्धि सिद्धि के दाता रे, गोतम गुण भरिया ।
सेव्या से सुख साता रे, देवे दिल दरिया ।।टेर ।।

१–कामधेनु चिन्तामणि जैसे,
काम कुम्भ सुरतरु के जैसे,
सारा विघ्न हटाता रे ।। देवे दिल...

२–भक्त सकल के काज संवारे,
उन्नति पथ ले जाने वाले
करे ज्ञान से खाता रे ।। देवे दिल...

३–भजन किया भव दुःख को चुरे,
तन मन की वे आशा पुरे
एक चित्त ध्यान लगाता रे ।। देवे दिल...

४–कही जनों को विपदा टारी,
ए गोतम प्रभु अब मुझ बारी ।
चरणों शीस झुकाता रे ।। देवे दिल...

५–संवत् वीसा प्रारम्भ प्यारा,
चैत्र शुक्ल प्रतिपदा शशि वारा ।
मिश्री मुनि गुण गाता ।। देवे दिल...

सुधर्मा गणधर स्तुति

धन्य धन्य हो अन्तरयामी,
प्यारा लागो सुधर्मा स्वामी ।। टेर ।।

१–पिता धम्मिल पुरुष कहाया,
माता धारणी जी के जाया ।
चवदह पूर्व का पारगामी ।। प्यारा लागो .

२–ज्यारा त्रिशला नन्द गुरुजी,
ज्यारी महिमा कहु कहां लग जी ।
सुरा सुर करे परणामी ।। प्यारा लागो .

३–ज्यारा गोतम स्वामी गुरु भाई
ज्यारी कहा लग करु रे बडाई ।
क्रोध मान दियो है भाभी ।। प्यारा लागो...

४–ज्यारा शिष्य आलीजा वैरागी,
जम्बू स्वामी जी बड़ भागी ।
ज्ञान ध्यान रा पारगामी ।। प्यारा लागो ..

५–साल बासठ केरे खास,
रावलपिण्डी शहर चौमामें
देवीलाल को देवो आरामी ।। प्यारा लागो .

गणधर

कैसी महिमा प्रभु की गाई,
गणधर मन भर के ।। टेर ।।

१–जब गर्भ में आए प्रभु जी,
रत्नों की वर्षा वर्षी ।
माता की सेवा करती,
देवी आ आके ।। कैसी...

२–जब जन्म भयो प्रभु जी को,
इन्द्र जी को सिंहासन कम्प्यो ।
सज लाए ऐरावत हाथी,
मन में हर्ष धर के ।। कैसी...

३–माया मयी बालक बना कर,
माया से मां को सुला कर ।
प्रभुजी को हाथ उठाया,
पंच रूप धर के ।। कैसी...

४–मेरु गिरी पे ले जायो,
प्रभु जी को अभिषेक करायो ।
सब देव बहुत हरषाए,
जय जय कार करके ।। कैसी...

५–अहिंसा के अवतारी,
महावीर महाबल धारी ।
मैं चरण कमल बलिहारी
जाऊं जिनवर के ।। कैसी...

ब्राह्मी और सुन्दरी का बाहुबली से कहना

कहे ब्राह्मी ने सुन्दरी पुकारी,
सुन भैया अरज हमारी ।। टेर ।।

१–तुम राजतखत तज दीना,
और संयम मारग लीना जी ।
फिर क्यो करी गज असवारी ।। सुन भैया

२–तुम वन मे ध्यान लगाया,
देखो कैसा कष्ट उठाया जी ।
जरा दिल मे करो विचारी ।। सुन भैया

३–जो गज असवारी होय जावे,
वह कभी न मुक्ति पावे जी ।
फिर चारो गति ना दातारी ।। सुन भैया

४–सुन बहिनो की वाणी,
बाहुबली समता आणी जी ।
गुरु आज्ञा दिल मे धारी ।। सुन भैया

५–वे तत्क्षण केवल पाया,
श्री आदि जिनन्द पे आया जी ।
कहे चोथमल बलिहारी ।। सुन भैया अरज ..

सती राजीमती

तर्ज—मरगई मरगई·······

फिर गये फिर गये फिर गये,
अरर···तोरणिये लग आकर के—
यादवपति धोका कर गये जी कर गये जी । टेर ॥

१–छप्पन क्रोड़ यादव से जानी,
नीका साज सजाए जी ।
कारे गोरे हरि बलदेवा,
हद बिन हर्ष मनाए जी ॥ फिर गये··

२–क्रोड़ों जन के बीच नेम जी,
इन्द्र समो दर्शाया जी ।
गज पैरों से धुजे धरनी,
कायर मन कंपाया जी ॥ फिर गये···

३–चन्द्र वन्दन वत् वदन विलोकी,
राजुल सुख मुल काया जी ।
रोम रोम में भरा प्रेम रस,
हृदय ‘आनन्द छाया जी ॥ फिर गये···

४–उस विरिया प्रभु सारथी को,
मधुर वेंण वतलाया जो ।
किस कारण पशुओ को लाए,
सारा हाल सुनाया जो ।। फिर गये ''

५–मूल भेद सुन नेम जिनन्द का,
धर हर दिल कंपाया जो ।
करुणा सागर झुलत वहा से,
रथ को तुरन्त फिराया जो ।। फिर गये ''

६–देख व्यवस्था राजुल जी का,
अनहद दिल दहलाया जो ।
मुरछा खाकर ढली धरन पर,
कायर मन कपाया जो ।। फिर गये ''

७–रूप रग चतुराई करके,
क्या अवगुन मम पाया जी ।
अधर वम्व छोडी अवला को,
गिरनारी पे धाया जो ।। फिर गये ''

८–'अमर कुंवर' कहे धन्य,
राजमति अविचल प्रेम निभाया जी ।
चोपन दिन पहले प्रभु के,
शिवपुर नगर सिधाया जो ।। फिर गये

सती अंजना

तर्ज—पनिहारी जी ए.......

सुण माता कहे अंजना हूं आई ए २ ।
जानी जनम देवाल, कीनी मनाई ए ।। टेर ।।

१—मैं नहीं जानी मायड़ी छेह देसी ए २ ।
निकली कीध बेहाल, वैरण जैसी ए ।।

२—सुख दुख नी जे बातड़ी नहीं पूछी ए २ ।
नहीं कयो पीले नीर, चढ़ गई ऊँची ए ।।

३—तूं निर्दयी किम निसरी मोरी जननी ए २ ।
एक अचरज एक पीर, मोरे मन नी ए ।।

४—कमल नयन से नीर नी, झर छुटी ए २ ।
मानो मोतियन की माल, तट के टूटी ए ।।

५—मूर्छित हो धरनी ढ़ली अति रोवे ए २ ।
कहे बसन्तजमाल, क्यों तन खोवे ए ।।

६—बाईसा रोवो मती रहो गाढा ए २ ।
ए भावित नहीं आज आवे आड़ा ए ।।

७—बांह पकड़ बैठी करी, झट चाली ए २ ।
अब भोजाई घर जाय, भावज भाली ए ।।

राती चन्दनबाला

तर्ज—जिया बेकरार है

चन्दना पुकारती,
नैना आसू डारती ।
आओ स्वामी लौट कर,
मारग नैन पसारती ॥ टेर ॥

१–कहा जन्म कहा लाड लडाया,
कहा पर जाय विकाई जी ।
क्या जाने क्या कर्म किये जो,
देव गये पलटाई हो ॥ चन्दना

२–क्या तेरे दरबार मे स्वामी,
दुखियो को नहीं सारा जी २ ।
हा अँखिया अब तरस रही हैं,
वर्षे अश्रुधारा हो २ ॥ चन्दना

३–आओ आओ स्वामी आओ,
विपदा बादल हर दो जी २ ।
ले हाथो से दान मान से,
अबला सबला कर दो हो ॥ चन्दना

४–चन्दन बाला के हाथो से,
प्रभु ने पारणा पाया जी २ ।
अशोक मुनि कहे देव गणो ने,
जय जय नाद सुनाया हो ॥ चन्दना

—

सती सीता

तर्ज—गणगोर की·······

राम का कहना—

१–मत चालो वन लार,
सियाजी थे तो मत चालो वन लार ।
हां ए सिया वन में है विपत अपार,
सियाजी थे तो मत चालो वन लार ।।

२–सुख लायक सुकुमार,
सियाजी थे तो सुख लायक सुकुमार ।
हां ए सिया वन में दुःख अपार,
सिया जी थे तो मत चालो वन लार ।।

३–विषमी आहार विहार,
सिया जी ओ तो विषमी २···
हां ए सिया वन है खाड़ा री धार ।।
सिया जी थे तो···

४–ओ हठ देवो निवार,
सिया थे तो ओ हठ २···
हां ए म्हारी मानो बात विचार ।।
सिया जी थे तो···

सीता का उत्तर

१—चालण दो वन लार,
प्रभु जी माने चालण दो वन लार ।
ओजी म्हारा प्राणा रा आधार ।। प्रभु जी म्हाने ··

२—आडी होय अंगार, प्रभु जी आतो आडी २
ओजी तो भी नाह तजे नहीं नार ।। प्रभु जी म्हाने ·

३—सारा सुख ससार, प्रभु जी एतो सारा २··
ओजी वे तो आप विना है असार ।। प्रभु जी म्हाने···

४—स्वर्गा रा विमल विहार, प्रभु जी एतो स्वर्गा २···
ओजी विना कन्त नरक का है द्वार ।। प्रभुजी म्हाने

५—रत्न जटित शृंगार, प्रभु जी एतो २
ओ जी विना कन्त, वदन पर भार ।। प्रभु जी म्हाने ·

६—जो उगे सूरज हजार, प्रभु जी एतो २
ओ जी विना कन्त छे अन्धकार ।। प्रभु जी म्हाने ··

—

स्वभाव दशा में आना

तर्ज—मानव की पूजा कौन करे·······

१–विभाव दशा को तज चेतन,
स्वभाव दशा में आना है।
विभाव से आत्मा पतन होवे,
स्वभाव से मुक्ति पाना है ।। विभाव···

२–तूं क्रोध को तज रे चेतन,
क्षमा गुण को अपनाना है।
मान से हट कर के चेतन,
विनम्र तुम्हें बन जाना है ।। विभाव···

३–तूं माया जाल से बाहिर आ,
प्रवेश सरलता में पाना है।
लोभ तो सर्व विनाशक है,
सन्तोष आत्मगुण लाना है ।। विभाव···

४–राग द्वेष षट् रिपु दल से,
मुंह मोड़ के आगे बढ़ना है।
'उम्मेद' बन्ध क्षण में तूटे,
फिर ज्योत में ज्योत समाना है ।। विभाव···

—

प्रभु भक्ति करतां छूटे कर्म

भक्ति करता छुटे मारा पाप,
प्रभु जी एवु मागु छू ।
रहे जन्म जन्म तारो साथ,
प्रभु जी एवु मागु छू ॥ टेर ॥

१–तारुं मुखडो मनोहर जोया करू,
रात दिवस रटण तारु किया करू ।
रहे अन्त समय तारु ध्यान ॥ प्रभु जी एवु "

२–म्हारी आशा निराशा करशो नहीं,
म्हारा अवगुण हियामा धरसो नहीं ।
श्वासो श्वास रहे तारु नाम ॥ प्रभु जी एवु "

३–म्हारा पाप ने ताप समावो जो,
तारा साधक ने दास बनावो जो ।
दिजो आवी ने दर्शन नो दान ॥ प्रभु जी एवु "

४–तारी भक्ति नो रग मने लागी गयो,
भय जन्म जन्म नो लागी गयो ।
रहे चरण कमल मां वास ॥ प्रभु जी एवु

—

भक्त सिंह की घोड़ी

१–जदो वीर भक्त सिंह साहब नूं ।
दित्ता फांसी हुक्म सुना २ ॥

२–होवन वाली नार नूं ।
किसे पिण्ड विच दसिया जा २ ॥

३–टुर पई खातिर प्रेम दी ।
आखे रब्बा वै मेल करा २ ॥

४–जा पहुँची बीच लाहौर दे ।
मिली जेल दरोगे नूं जा २ ॥

५–जदों हुक्म होया सरकार दा ।
तुसी देवो एदा मेल करा २ ॥

६–जदो सीखां विच तकिया शेर ने,
खड़ी सुन्दरी आस लगा २ ॥

७–ओदे आखां विच अथरू वे[illegible]
देवी कौन हो [illegible] २ ॥

पत्नी

८–होवन वाली नार मे,
मेरे दिल दिया शाह न शाह २ ॥

९–मेरी संदरा (तमन्ना) मौजिया रह गइया ।
मेरा दिल होया दरिया २ ॥

१०–मैं हत्थ विच चूडा न वेखिया ।
मेरा पुरा न होया चा २ ॥

११–मेरी मेहदी विजडी रह गई ।
मैंने रह गया डोली दा चा २ ॥

भगतसिंह का कथन

१२–अग्गो भारत मा दे लाल ने ।
देखो हँस के क्या सुना २ ॥

१३–मेरी मगनी कदे दी हो गई ।
कल होना मेरा व्याह २ ॥

१४–घोड़ी चढनगी कल दोपहर नूं ।
अज चढनगी घुमा पा २ ॥

१५–मेरे सोहने वीर पंजाब दे ।
मेंनु देहनगे सेहरा सजा २ ॥

१६–माता मेरे देश दी ।
मैंनूं लेनगी छाती नाल ला २ ॥

पत्नी का कथन

१७–ओह केहड़ी कर्मा वालड़ी ।
जिन्हें तेनू लया भरमा २ ॥

१८–ओहने मेरा दर्द न वेखिया,
लया अपना दर्द बंडा २ ॥

१९–ओहने टुकड़ा मेरे कलेजे दा,
लया अपने कलेजे पा २ ॥

भक्तसिंह

२०–ओह सुन्दरी अजब जहान ते,
ओहदा कोई-कोई करदा ए चा २ ॥

२१–ओहदे नाल मैं नाता जोड़ के,
लया अपना दर्द बंड़ा २ ॥

२२–ओ नारी मेरे देश दी ।
आ मेरे गले लग जा २ ॥

पत्नी का कथन

२३–मैं कल्ली इत्थे नहीं रहवाना,
मैंनूं अपने नाल ले जा २ ।।
२४–सो गल्ला दी एको गल्ल हे,
तूं वैन ते मै हा भरा २ ।।
२५–तू मेरे रस्ते चल्ल के,
कर देश दी सेवा मन ला २ ।।

स्वप्ना

साथनियाँ माणी रातडली
सपनो तो माने यू आयो ।
सुण कायर दिल री स्वपने री,
वाता सपने मे रह जासी ।। टेर ।।
१–स्वप्नो देख्यो हे नरा ऽ ऽ ऽ देख्यो एक निवाण,
राजा दशरथ को लग्यो, श्रवण सीने वाण ।
अजी कुण जाणे छा,
दशरथ रा वाणा सू श्रवण मर जासी ।
अजी कुण जाणे छा,
बुढा री आँख्याँ सूं आसूं ढल जासी ।। साथणियाँ

२–सपनों देख्यों हे नरा ऽ ऽ ऽ दशरथ युद्ध रचाय ।
युद्ध जब पूरा हुआ, राजा के लग गये घाव ।
अजी कुण जाणे छा,
कैकेयी रा वचना सूं दशरथ छल जासी ।। साथणियाँ...

३–सपनों देख्यों हे नरा, ऽ ऽ ऽ देख्यों एक अनन्त ।
मन्थरा आ बहका गई, कैकेयी को एकान्त ।
अजी कुण जाणे छा,
कैकेयी रा बचना सूं राज बिगड़ जासी ।। साथनियाँ...

४–सपनों देख्यों हे नरा, ऽ ऽ ऽ राम चले वनवास ।
संग में लक्ष्मण भ्रात है, और सत्यवन्ती पास ।
अजी कुण जाणे छा,
विश्वामित्र की बाता झूठी हो जासी ।। साथनियाँ...

५–सपनों देख्यों हे नरा ऽ ऽ ऽ देख्यो एक लंगुर ।
बाग विनास्यों नव लखों, तो कर दियो चकना चूर ।
अजी कुण जाणे छा,
लंका को लंकेश विभीषण हो जासी ।। साथनियाँ ..

६–सपनों देख्यों हे नरा ऽ ऽ ऽ आये अयोध्या राम ।
घर-घर हर्ष बधावणा, खुशी हुई चऊँ धाम ।
अजी कुण जाणे छा,
बुझियोड़ा नैणा री ज्योति आ जासी ।। साथनियाँ...

७–अनीति से जात है, धर्म राज अरु वंश ।
तीनो ताला दे गये ऽ, रावण कोख कश ।
अजी कुण जाणे छा,
माया और महिमा मिट्टी मे मिल जासी ।। साथनियाँ...

जय बोलो

[मधुकर मुनि]

तर्ज—जय बोलो महावीर स्वामी की

जय बोलो जयमल गणिवर की ।
आशा के धन परमेश्वर की ।। ध्रुव ।।
जो सन्त–शिरोमणि साधक थे ।
जिन–वाणी के समुणसक थे ।
उन 'महिमा–मण्डन' मुनिवर की ।। जय० १ ।।
माया ममता मद विपयो पर ।
जय–विजय मिली थी जीवन भर ।
मन 'मोहन'–नन्दन प्रियवर की ।। जय० २ ।।
जय—प्रभाव कितना भारी है ।
सुख सम्पत साता—कारी है ।
जय जयकारी उन जयवर की ।। जय० ३ ।।

जो नाम–जाप करता जय का,
संकट टलता उसके भय का।
सुख–शान्ति–सुधा के सागर की ।। जय० ४ ।।

इक माला जय की नित फेरे,
दूर भागते भव के फेरे।
त्याग–मूर्ति जय सुख कर की । जय० ५ ।।

महा महिम ! जय पूज्य ! वरो,
मेरा बेड़ा अब पार करो।
अरजी है यह मुनि मधुकर की ।। जय० ६ ।।

सायंकालीन स्तुति

तर्ज—जय जगदीश हरे……

जयमल ! पूज्य ! सरे, जग जयमल ! पूज्य सरे।
परम पवित्र चरित्र तुम्हारा, अघ सब अलग हरे। ध्रुव।

सायंकाल नाम जो तेरा,
शुद्ध मन से सुमरे ।। स्वामी ।।

वर नर आतम शान्ति को पाकर,
भव जल तुरन्त तिरे ॥ ॐ जय० १ ॥
धन्य भाग मरुधर भूमि का,
जिसमे जन्म धरे ॥ स्वामी० ॥
निर्भय होकर गुण पूजा का,
सत्य प्रचार करे ॥ ॐ जय० २ ॥
हम भी कभी तुम्हारे जितने,
त्यागी वन विचरे ॥ स्वामी० ॥
विश्वमात्र मे जैन धर्म का,
आस्तिक भाव भरे ॥ ॐ जय० ३ ॥
यही एक है विनय हमारी,
विश्व प्रेम पसरे ॥ स्वामी० ॥
सर्व तुम्हारे मिल अनुयायी,
एक छत्र विहरे ॥ ॐ जय० ४ ॥
स्वावलम्बी निर्दम्भी तुम सम,
हो न किसे अखरे ॥ स्वामी० ॥
सघ भावना सुफलित होकर,
सब विधि सिद्धि करे ॥ ॐ जय० ५ ॥

आचार्य श्री जयमल गच्छ के पट्टधर…

तर्ज—साता कीजो जी……

जय जय कारी रे जय जय कारी रे ।
पूज्य जयमल गच्छ जगत में जहारी रे ।। टेर ।।

१—पूज्य प्रवर आचार्य जयमलजी,
त्यागी तपस्वी भारी रे ।
वर्ष बावन नही सोहे ज्ञानी,
रचि कविताएँ श्रेयकारी रे ।। जय…

२—रायचन्दजी की करी सगाई,
ब्याह की हुई तैयारी रे ।
पूज्य बोल्या नवकार भणो,
गुरु दीक्षा दो उपकारी रे ।। जय…

३—आसकरणजी आज्ञा लेकर,
कहे पूज्य में वारी रे ।
संयम दीजे ढील न कीजे,
करू कर्म निवारी रे ।। जय…

४–सबल चन्दजी सबल मन करी,
बालक वय सयम धारो रे ।
पाट दिपायो पूज्य गुरु को,
बने हित कारी रे ।। जय…

५–हीरा मुनिजी हीरा सम चमके,
शुद्ध आत्मा वारी रे ।
कस्तुर चन्दजी की सौरम्भ फैली,
हुए यश धारी रे ।। जय…

६–भीकमचन्दजी महा बडभागी,
कान मुनि की छवि न्यारी रे ।
चवदह वर्ष मे सयम ले,
सत्तरह मे पदवी धारी रे ।। जय…

७–अष्टम पट मधुकर मुनिवरजी,
जग को वल्लभ कारी रे ।
शान्त दान्त गम्भीर गुणाकार,
प्रतिपल वन्दना मारी रे ।। जय…

८–जय गच्छ के आठो ही पट्टधर,
हुए बाल ब्रह्मचारी रे ।

जिन शासन की ज्योति जगा,
निज आतमा तारी रे ।। जय…

६-पूज्य गुरुणीसा श्री अर्चना—
जी की ख्याति भारी रे ।
तस्य शिस्या उम्मेद की नैया,
दो अब तारी रे ।। जय… ।।

श्री युवाचार्य शत शत वन्दन

तर्ज—दिल लूटने वाले जादूगर……

श्री युवाचार्य शत शत वन्दन,
अभिवादन है तुम्हें हरवारी ।
तुम चरण कमल की बलिहारी,
प्रतिपल वन्दना है गुरु म्हारी ।। टेर ।।

१-उन्नीसौ सितर में जन्म लिया,
तिंवरी के भाग्य को चमकाया ।

पिता जमना लाल घर आनन्द छाया,
माता तुलछा खुशियां भारी ।। श्री युवा ...

२—बचपन मे लीला करते थे,
ऐवन्ता मुनि सम बनते थे ।
बच्चो को शिक्षा देते थे,
बनो माता पिता आज्ञाकारी ।। श्री युवा ...

३—उन्नीसौ अस्सो मे ग्रह त्याग किया,
जोरावर गुरुवर भेट लिया ।
अरु क्रोध लोभ मोह जीत लिया,
गुरु अनुशासन मे श्रेयकारी ।। श्री युवा

४—आप शान्त दान्त गभीर गुणाकर,
मधुर सरस सरल स्वभावी हैं ।
अरु महान विभूति ज्योतिर्धर,
वाणी मे जादू भारी है ।। श्री युवा

५—आनन पर आभा चमक रही,
दर्शन से मन को मोह रही ।
जन्म जन्मान्तर दु ख भाँज रही,
मिले आत्म शान्ति सुखकारी है ।। श्री युवा ...

६—आप नाम मिश्री मधुकर प्यारा,
आचार्य सघ के मन भाया ।

तुम्हें चुन के जन मन हरषाया,
सबके मन आनन्द अनपारी ।। श्री युवा…

७–कागद कर दूं धरती सारी,
अरु नीर करुं स्याही सारी ।
तो भी म्हारा युवाचार्य श्री रा,
गुण वर्णन में अनजारी ।। श्री युवा…

८–जब तक दिनकर शशि रहे,
तुम नाम की सौरभ अखण्ड रहे,
साध्वी 'उम्मेद' कर जोड़ कहे,
गुरु करदो नैया भवपारी ।। श्री युवा…

---

९ गुरुगुण गान

तर्ज—मनाओ महावीर……

सब ही मिलकर गुण गाओ रे,
थांरे चरणां में शीश झुकाओ रे ।
है तारण तरण जहाज ।। टेर ।।

१–उप-प्रवर्तक जी सयम लेने,
जुटे विजय कर्म पे करने ।
भेंटे जोरावर गुरु ने रे,
है तारण तरण जहाज ।। सब ही …

२–है ज्ञान ध्यान मे पूरा,
और वचन दृढ मे सूरा ।
अक्षर मोती सम नूरा रे,
है तारण तरण जहाज ।। सब ही …

३–युवाचार्य की महिमा निराली,
जिन धर्म की ज्योति जगाली ।
साहित्य मे कियो उजालो रे,
है तारण तरण जहाज ।। सब ही …

४–आप ज्ञान गुणा का दरिया,
और वचन अमोलक भरिया ।
सुनते ही अमृत झरिया रे,
है तारण तरण जहाज ।। सब ही…

५–आनन चमके है भारी,
दर्शन से दुःख निवारी ।
हो आत्म शांति अनपारी रे,
है तारण तरण जहाज ।। सब ही…

६–गुरु क्रोध लोभ मद त्यागी,
संयम रस रा अनुरागी ।
शिव रमणी सूं लौ लागी रे,
है तारण तरण जहाज ।। सब ही…

७–गुरु शतः शतः वन्दना म्हारी,
'उम्मेद' की करो स्वीकारी ।
वरदान देवो हितकारी रे,
है तारण तरण जहाज ।। सब ही…

गुरुणीसा के गान

तर्ज—जय बोलो महावीर… …

जय बोलो अर्चना सती वर की,
जय स्नेह सुधा के सागर की ।। टेर ।।

१–आओ हृदय के पट खोलो,
अर्चना सतीजी की जय बोलो ।
जय श्रमण संघ की सतीवर की ।। जय… ।।

२–गांव दादिया जन्म लिया,
जन जन के मन को मोह लिया ।
सद्ज्ञान गुणो के आगर की ।। जय '' ।।

३–त्यागो तपस्वो थे अविकारी,
धन्य मागी मुनीसा उपकारी ।
सग सयम ले आत्मा तर की ।। जय ' ।।

४–जन जन के प्राणो का प्यारा,
सरदार कु वर गुरुणीसा धारा ।
उन्नीसौ चौराणवें सयम धर की ।। जय ।।

५–काश्मीर, पजाब खरा,
हिमाचल राजस्थान धरा ।
जिन भेरी बजाई जिनवर की ।। जय ।।

६–है शात दात सुन्दर मुखडा,
दर्शन करते जाता दुखडा ।
सयम के सच्चे अनुचर की ।। जय ।।

७–ज्यारी वाणी मे जादू भरियो,
जाणे अमृत को झरणो झरियो ।
जिन शासन ज्योति उजागर की ।। जय ।।

८—दो हजार चौतीस का आया,
चौमासा दादिया में ठाया।
सात ठाणे से आये सतीवर की ॥ जय··· ॥

९—धर्म ध्यान का ठाठ रहे,
चौमासे का रंग जमा रहे।
'उम्मेद' शरण ली गुरूवर्या की ॥ जय··· ॥

गुरूणीसा के गान

तर्ज—तुमको लाखों प्रणाम·······

पुज्य गुरुणीसा महाराज तुमको लाखों प्रणाम,
तुमको कोटि प्रणाम ॥ टेर ॥

१—उन्नीसौ गुणयासी आया,
जन्म दादिया नगरी पाया।
सब जन मन हरषाया ॥ तुम··· ॥

२—मांगीलालजी पिता तुम्हारे,
मां अनुपा के दिव्य सितारे।
तातेड़ कुल उजियारे ॥ तुम··· ॥

३–सात दिवस के जब हो पाये,
माता छोडकर स्वर्ग सिधाये ।
सब मन दु:ख न समाये ।। तुम··· ।।

४–जिसने कर्म बलि को जीता,
उनके पुण्य सदैव पुनीता ।
द्वितीय चन्द्र जिम बढता ।। तुम ·· ।।

५–ग्यारह वर्ष के जब हो पाये,
बन कुल वधु दौराई आये ।
हींगड कुल चमकाये ।। तुम ·· ।।

६–वज्रपात हुआ वर्ष तेरह मे,
पति वियोगा बालक वय मे ।
परिजन झूलत दु ख मे ।। तुम ·· ।।

७–पिता श्री से अर्ज कराई,
सयम लेसू यही मन आई ।
छोडू जगत दु:खदाई ।। तुम ·· ।।

८–चौराणू नोखे मे पधारे,
पिता पुत्री सग संयम धारे ।
गुरु हजारी प्यारे ।। तुम ·· ।।

९–सरदारकुंवरजी की शिष्या प्यारी,
'उमराव' सूरत है मोहन गारी ।
बुद्धि विलक्षण वारी ॥ तुम··· ॥९

१०–सरस्वती तुम कण्ठ विराजे,
उच्च नाम सती पद में छाजे ।
जन मन के दुःख भाजे ॥ तुम··· ॥१०

११–आप नाम की माला फेरे,
दूर भागते भव के घेरे ।
मिटे जन्म मरण के फेरे ॥ तुम··· ॥११

१२–पचपन मां जन्म दिवस मनाया,
जन्म भूमि में हर्ष सवाया ।
त्याग नियम अपनाया ॥ तुम··· ॥१२

१३–साध्वी 'उम्मेद' तव गुण गावे,
शतः शतः चरणों में शीस झुकावे ।
निश दिन ध्यान लगावे ॥ तुम··· ॥१३

गुरुणीसा के गुणगान

तर्ज—ओ थारी मुरली मनडो मोयो

ओ थारो दर्शन मनडो मोयो गुरुणीसा,
बलि बलि जावा थारा दर्शन की ॥ टेर ॥

१—मा अनुपा की कोख उजाली,
तातेडो की गोत पूजाली ।
जन जन के मन भाया गुरुणीसा ॥ बलि ·· ॥

२—मागीलालजी तात कहाया,
सग लें सयम तन को ताया ।
सद्गुण सभी सराया गुरुणीसा ॥ बलि ·· ॥

३—जन्म भूमि है गाव दादिया,
बन कुल वधु दोराई आया ।
हींगड़ कुल चमकाया गुरुणीसा ॥ बलि ॥

४—सरदारकु वरजी की चरण-शरण मे,
शान्ति मिली मन के कण-कण मे ।
हृदय-कमल विकसाया गुरुणीसा ॥ बलि · ॥

५–उत्तराखण्ड पंजाब हिमांचल,
काश्मीर मरुधर के अंचल।
धर्म का रंग चढ़ाया गुरुणीसा ।। वलि··· ।।

६–दुर्लभ दर्शन थांरो पायो,
निरख २ मन मोद भरायो।
सुर तरु आंगन छाया गुरुणीसा ।। वलि··· ।।

७–उमरावकुंवर महिमा मही-मण्डन,
उपनाम 'अर्चना' पातक खण्डन।
साधना में जीवन रमाया गुरुणीसा ।। वलि··· ।।

८–गुण अनेक पर जीभ एक है,
पार उतारो यही टेक है।
श्वास श्वास में बसाया गुरुणीसा ।। वलि··· ।।

९–दोय हजार सत्ताईस आया,
बिजयनगर चौमासा ठाया।
सती 'उम्मेद' हर्ष गुण गाया गुरुणीसा ।। वलि ।।

सामायिक प्रतिक्रमण

प्रश्नोत्तर

॥ भावना ॥

दोहा

साम्य भाव को प्राप्त कर, लखें आत्म का रूप ।
सामायिक उसको कहे, जो है शिव सुख रूप ॥१॥

कब सामायिक सत्य की, होय प्राप्ति सुखकार ।
कब सबको समदृष्टिसे, देखू मै अविकार ॥२॥

सब जीवो मे होय कब, मेरे मैत्री भाव ।
सकल पाप तज कब बनूँ, सम्यग् दृष्टि स्वभाव ॥३॥

पहिला प्रकरण

जैन धर्म

१ प्रश्न—जैन किसे कहते हें ?

उत्तर—क्रोध, लोभ, मद, मोह आदि अन्दर के शत्रुओं को जीतने का प्रयत्न करे सो जैन ।

२ प्र.—जिन किसे कहते हैं ?

उ.—जिन्होंने क्रोध, लोभ, मद, मोह आदि अन्दर के शत्रुओं का सर्वथा नाश करके अनन्त ज्ञान अनन्त सुख प्रगट किया है।

३ प्र.—जिनेन्द्र किसे कहते हैं ?

उ.—जिन अर्थात् सर्वज्ञ वीतराग देवों में (इन्द्र) श्रेष्ठ हो उन्हें जिनेन्द्र तीर्थंकर या अरिहन्त कहते हैं।

४ प्र.—धर्म किसे कहते हैं ?

उ.—उन्नति का साधन, सो धर्म।

५ प्र.—धर्म के कितने मुख्य भेद हैं ?

उ.—दो पहिला ज्ञान और दूसरा सदाचार (सदाचार का दूसरा नाम चारित्र या क्रिया भी है)

६ प्र.—उन्नति के उपाय कितने हैं ?

उ.—उन्नति का असली साधन धर्म है और धर्म के दो भेद हैं इसलिये उन्नति के भी दो ही साधन हैं ज्ञान व सदाचार।

७ प्र.—ज्ञान किसे कहते हैं ?

उ.—जिससे हित और अहितका वोधहो वही ज्ञान है

८ प्र—सदाचार किसे कहते हैं ?

उ—अच्छे आचरण को सदाचार कहते हैं।

९ प्र—ज्ञान के कितने भेद हैं ?

उ.—ज्ञान के दो भेद हैं ? एक व्यवहारिक ज्ञान दूसरा धार्मिक ज्ञान अर्थात् आत्मिक ज्ञान

१० प्र—व्यवहारिक ज्ञान किसे कहते हैं।

उ.—जिसके द्वारा आरोग्य, आजीविका, परिवार, समाज और देश आदि की भलाई बुराई का ज्ञान हो उसे व्यवहारिक ज्ञान कहते हैं।

११ प्र—धार्मिक ज्ञान किसे कहते है।

उ—जिससे आत्मा का शुद्ध स्वरूप अर्थात् मोक्ष प्रगट करने के उपाय जाने जावें उसको धार्मिक ज्ञान कहते है।

१२ प्र—सदाचार के कितने भेद है ?

उ—सदाचार के मुख्य दस भेद है १ अहिंसा. २ सत्य ३ अचौर्य ४ ब्रह्मचर्य ५ अपरिग्रह ६ क्षमा ७ नम्रता. ८ सरलता ९. निर्लोभता और १० समभाव।

१३ प्र.—अहिंसा किसे कहते है ?

उ.—किसी को मन, बचन या काया से दुःख नहीं पहुँचाना।

१४ प्र.—जगत में कितनी प्रकार के जीव हैं ?

उ.—दो-एक त्रस जीव जो चलते फिरते हैं और दूसरे स्थावर जो चल फिर नहीं सकते।

१५ प्र.—जगत् में तत्व पदार्थ कितने हैं ?

उ.—मुख्य दो तत्व-जीव अजीव तथा विशेष भेद से नव तत्व भी हैं।

१६ प्र.—नव तत्व कौन कौन से हैं ?

उ.—१ जीव. २ अजीव. ३ पुण्य. ४ पाप. ५ आश्रव. ६. संवर. ७. निर्जरा. ८ बंध. और ९ मोक्ष।

१७ प्र.—नव तत्वों का अर्थ समझाइए।

नवतत्व-चौपाई

जीव वही जो सुख दुख जाने।
लक्षण जिसका ज्ञान बखाने॥
है अजीव सुख दुःख हीना।
जड़ता लक्षण उसको दीना॥ १॥

पुण्य सुकार्य परम सुख दाता।
पाप कुकार्य सभी दु.ख लाता ॥
शुभ अरु अशुभ कर्म जो आवे।
आश्रव नामक तत्त्व कहावे ॥ २ ॥

संवर तत्त्व कर्म रुकवावे।
अंशो मे निर्जरा खिरावे ॥
राग द्वेष अरु मोह विकारा।
बांधे जीव कर्म दल भारा ॥ ३ ॥

बंध तत्त्व है इसका नामा।
करता है यह जीव निकामा ॥
कर्म छूट सुख मिले अनन्ता।
मोक्ष कहे उसको सब सन्ता ॥ ४ ॥

दूसरा प्रकरण

सामायिकः—

१८ प्र—सामायिक किसे कहते है ?

उ—समभाव रखने को सामायिक कहते हैं।

१९ प्र—समभाव किसे कहते हैं ?

उ—क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेष, विषय वासना के त्याग को समभाव कहते हैं।

२० प्र.—नवकार किसे कहते हैं ?

उ.—नमस्कार को ।

२१ प्र.—अरिहन्त प्रभु बड़े या सिद्ध भगवान् बड़े ?

उ.—सिद्ध भगवान् बड़े हैं । कारण कि, अरिहन्त भगवान् ने चार कर्म क्षय किये हैं और सिद्ध भगवान् ने आठों कर्म क्षय किये हैं ।

२२ प्र.—पहिले अरिहन्त भगवान् को क्यों नमस्कार करते हैं ?

उ.—अरिहन्त प्रभु सिद्ध भगवान् की पहिचान कराते हैं व धर्म प्रचार करते हैं इसलिये उपकार मानने के लिये ।

२३ प्र.—मुनि महाराज मौजूद हैं उन्हें पहिले क्यों नमस्कार नहीं करते ?

उ.—मुनि महाराज सर्वज्ञ वीतराग नहीं हुए हैं ।

२४ प्र.—आचार्य किसे कहते हैं ?

उ.—ज्ञान व सदाचार का खूब प्रचार करे व जिस देश काल में जो बुराइयाँ घुस गई हों उन्हें नाश करे ।

२५ प्र.—उपाध्याय किसे कहते हैं ?

उ.—ज्ञान का अभ्यास स्वयं खूब करे व औरों को करावे ।

२६ प्र.–साधुजी किसे कहते हैं ?

उ –स्व-पर हित साधन करे व करावे तथा अहिंसा आदि पच महाव्रत पाले ।

२७ प्र.–तिखुत्तो का क्या अर्थ हे ?

उ –तीन वार (तिखुत्तो के पाठ मे वन्दना करने की विधि बतलाई गई है ।)

२८ प्र.–तीन वार वन्दना क्यो करते हैं ?

उ –ज्ञान, दर्शन व चारित्र की प्राप्ति करने के लिये ।

२९ प्र –इच्छाकारेण का पाठ किस विषय का हे ?

उ.–आते जाते या कोई कार्य करते छोटे वडे जीव को दुख हुआ हो उनको माफी माँगने का है ।

३० प्र.–तस्स उत्तरी मे क्या विषय हे ?

उ.–लगे हुए पापो को याद कर के कार्योत्सर्ग मे पश्चात्ताप से पापो की शुद्धि करूंगा तथा कार्योत्सर्ग (ध्यान) मे स्वासोच्छवास खासी छींक आदि १२ आगार हैं सो बतलाये हे ।

प्र –लोगस्स मे क्या विषय है ?

उ –२४ तीर्थङ्कर प्रभु के नाम व स्तुति है ।

३२ प्र.—चउवीसत्थो किसे कहते हैं ?

उ.—२४ तीर्थंकर प्रभु की स्तुति को ।

३३ प्र.—सावज्ज जोग का क्या अर्थ ?

उ.—पाप कारी मन, बच्चन, काया को सावज्ज जोग कहते हैं । (सावद्य = पाप सहित)

३४ प्र.—सामायिक कितने करण व योग से होती है ?

उ.—दो करण, पाप करूं नहीं व कराऊं नहीं तीन योग, मन वचन और काया से ।

३५ प्र.—पच्चक्खाण किसे कहते हैं ?

उ.—छोड़ना, त्याग करना ।

३६ प्र.—तस्समिच्छामिदुक्कडं का क्या अर्थ है ?

उ.—मैंने किया हुआ दुष्कृत-बुरा काम नाश हो तथा अब कभी ऐसा काम नहीं करूंगा ।

३७ प्र.—नमोत्थुणं में क्या बात बताई है ?

उ.—सिद्ध भगवान् व अरिहन्त भगवान् के गुणों का वर्णन कर के स्तुति की है ।

३८ प्र.—अतिक्रमादि का क्या अर्थ है ?

उ.—इच्छा होना अतिक्रम । उस कार्य के लिये थोड़ा उद्योग व्यतिक्रम । व्रत भंग की तैयारी अतिचार व्रत भंग कर देना अनाचार ।

३९ प्र—सामायिक का क्या फल ?

उ—समभाव से नये कर्म नहीं बंधते। पुराने कर्म क्षय होते हैं व आत्मा सच्ची शांति प्राप्त करता है। समभाव सच्चा सुख है अतः सामायिक का फल सच्चे सुख की प्राप्ति है।

तीसरा—प्रकरण

प्रतिक्रमण

४० प्र—प्रतिक्रमण किसे कहते है ?

उ—पापो से पीछे फिरने को अर्थात् किये हुए पापो को याद करके पश्चात्ताप व प्रायश्चित्त से शुद्धि करने को प्रतिक्रमण कहते हैं।

४१ प्र—प्रतिक्रमण मे ऐसा कौनसा पाठ है कि जिस एक को अर्थ पूर्वक विचारने से सक्षेप मे सारा प्रतिक्रमण हो जाय ?

उ—इच्छामि ठामि आलोउ जोमे देवसिओ, अइयारो कओ काइओ, वाईओ, माणस्सिओ उसुत्तो का पाठ।

४२ प्र—इच्छामि खमासमणो का पाठ किस बात का है ?

उ—गुरु महाराज की स्तुति पूर्वक वन्दना करके की हुई आसातना-अपराध की माफी मागने का।

४३ प्र.—दंसण समकित व व्रतों के पहिले आग में तिविहे का पाठ क्यों कहा ?

उ.—वह ज्ञान पढ़ने के दोषों की शुद्धि करने वाला पाठ है ज्ञान हो तब ही समकित व चारित्र प्राप्त होता है।

४४ प्र.—व्रतों के पहिले दंसण समकित का पाठ क्यों कहा ?

उ.—समकित हो तब ही चारित्र प्राप्त होता है। इसलिये।

४५ प्र.—चारित्र के कितने भेद हैं ?

उ.—दो-एक सकल चारित्र दूसरा देश चारित्र।

४६ प्र.—सकल चारित्र किसे कहते हैं ?

उ.—पंच महाव्रत धारण करे सो सकल चारित्र।

४७ प्र.—देश चारित्र किसे कहते हैं ?

उ.—श्रावक के बारह व्रत धारण करे सो देश चारित्र।

४८ प्र.—स्थूल किसे कहते हैं ?

उ.—बड़ा हो सो स्थूल।

४९ प्र.—स्थूल हिंसा का क्या अर्थ ?

उ.—चलते फिरते प्राणी को दुख हो ऐसा कार्य। प्रत्यक्ष सामने मारना। परोक्ष मानकर तैयार की हुई चीज

काम मे लाना जैसे विदेशी कपडा, विदेशी दवाइयां, हाथी दात, विदेशी शक्कर, विदेशी केसर आदि हिसा स्थूल हिंसा है।

५० प्र–मोट का बडा झूठ किसे कहते हे ?
उ–जिससे त्रस–चलते–फिरते जीवो को दुख हो।

५१ प्र–छोटा झूठ किसे कहते हे ?
उ–स्थावर–मिट्टी, पानी, आग वायु, वनस्पति के जीवो को दुख हो–जैसे मिट्टी, खोदो पानी लाओ आदि।

५२ प्र–वडी चोरी किसे कहते हैं ?
उ–जिस चीज के लेने से किसी त्रस चलते फिरते जीव को दुख हो।

५३ प्र–छोटी चोरी किसे कहते है ?
उ–किसी को भी दुख न हो ऐसी चीज भी विना पूछे लेना या स्थावर चीजो को दुख देना।

५४ प्र–मैथुन का क्या अर्थ है ?
उ–गुप्त इन्द्रिय से किसी प्रकार वीर्य क्षय करना।

५५ प्र–मैथुन से क्या हानि ?
उ–शरीर, वुद्धि, वल, पुण्य, धर्म, आयु, सुख और सौभाग्य का नाश होता है।

५६ प्र.—ब्रह्मचर्य का क्या अर्थ है ?

उ.—मन, बचन, व काया को पवित्र रखना।

५७ प्र.—ब्रह्मचर्य का क्या फल ?

उ.—शरीर, बुद्धि, बल पुण्य, धर्म, आयु सुख और सौभाग्य की रक्षा व वृद्धि होती है।

५८ प्र.—परिग्रह का क्या अर्थ ?

उ.—बंधन का कारण सो परिग्रह। द्रव्य परिग्रह धनादि भाव परिग्रह ममता [सम्पत्ति को अपनी मानना] या राग द्वेष करना सो भाव परिग्रह है।

५९ प्र.—छट्ठे व्रत में दिशा की मर्यादा क्यों की जाती है ?

उ.—तृष्णा वश अमुक क्षेत्र से दूर नहीं जाने की शिक्षा देने के लिये।

६० प्र.—सातवें अणुव्रत में २६ बोल की मर्यादा क्यों बताई ?

उ.—इससे सादगी व संयम गुण प्रकट होता है।

६१ प्र.—कर्मादान का क्या अर्थ ?

उ.—त्रस जीवों की अति हिंसा हो ऐसे कार्य को कर्मादान कहते हैं।

६२ प्र.—अनर्था दण्ड किसे कहते हैं ?

उ–जो कार्य शरीर रक्षा आजीविका या स्वपर हित मे उपयोगी न हो लेकिन फिजूल किया जाय।
जीव को व्यर्थ ही दण्डपात्र अपराधी वनावे सो अनर्था दण्ड है।

६३ प्र–व्यर्थ अपराधी वनने के काम वतलाओ ?

उ–वुरे विचार, अति भोजन, निन्दा, क्रोध, गर्व आदि किसी को दुख हो ऐसी प्रवृत्ति, वुरी इच्छा हो ऐसा उपदेश या फिजूल वातें करना अनर्था दण्ड है।

६४ प्र–सामायिक करना इतना पीछे नववें व्रत मे क्यो लिया ?

उ–अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य संतोष आदि गुण आवे व लोभ के वश विदेश जाना, चीजो की लालसा, व्यर्थ दोष छूटे तव समभाव [सामायिक] गुण प्रकट हो सकता है।

६५ प्र–दशमा व्रत किसे कहते हैं ?

उ–सादा भोजन करके १८ पाप त्याग कर ज्ञान ध्यान मे रात दिन बिताने को दशवा पौषध [दया] कहते हैं।

६६ प्र.–पौषध व्रत किसे कहते हैं ?

उ.—चारों आहार व १८ पाप छोड़ कर ज्ञान, दर्शन, चारित्र व ध्यान से आत्मा को निज गुणों में पुष्ट ताकतवर बनावे सो पौषध।

६७ प्र.—अतिथि संविभाग व्रत किसे कहते हैं ?

उ.—जिसके आने की तिथि मुकर्रर नहीं है सो अतिथि, मुनि, श्रावक, विद्यार्थी आदि सुपात्र सब अतिथि हैं। संविभाग = उचित पांति कमाई, भोजन वस्त्र, आदि का अच्छा हिस्सा सुपात्रों को दे सो बारहवां व्रत की आराधना है।

६८ प्र.—संथारा किसे कहते हैं ?

उ.—बिछौने को।

६९ प्र.—अनशन किसे कहते हैं ?

उ.—चारों आहार के त्याग को।

७० प्र.—संलेहणा किसे कहते हैं ?

उ.—उतम रीति से जीवन भर के पापों की शुद्धि करने को।

७१ प्र.—पंडित, मरण किसे कहते हैं ?

उ.—ज्ञान व वैराग्य से जीवन भर के पापों की आलोयणा

करके १८ पाप ४ आहार और निरुपयोगी जीर्ण देह को आनन्द पूर्वक छोडे।

७२ प्र—सलेखणा की पाटी रोज क्यो पढें ?

उ—जैसे सिपाही रोज कवायत करते हैं जिससे युद्ध के समय विजयी वने इसी तरह हमेशा सलेखणा की भावना से उसकी आराधन सुगम होती है।

७३ प्र—१८ पापो मे सव से वडा पाप कौनसा ?

उ—मिथ्यात्व।

७४ प्र—मिथ्यात्वी किसे कहते हैं ?

उ—मिथ्या अर्थ झूठ है, त्व से झूठा, असत्यता अर्थ वनता है। जो झूठ वोले से प्रेम करे, झूठी वस्तु धन, भोग, वैभव ममता रक्खे सो मिथ्यात्वी।

७५ प्र—समकित (सम्यक्त्व) किसे कहते है ?

उ—सत्य मान्यता, आत्मा और जगत के सच्चे स्वरूप को समझ कर धन वैभव और भोग से अलिप्त रहे, सत्य का आनन्द सो सम्यक्त्व। निश्चय मे आत्मा ही सत्य है। इसलिये आत्मानन्द आत्मानुभव निश्चय सम्यक्त्व है।

७६ प्र०—मङ्गल किसे कहते हैं ?

उ०—मं = पाप, गल = गाले पापों को गाले दूर करे सो मंगल। मंग = कल्याण, लाति = लावे, कल्याण श्रेय सुख लावे सो मंगल।

७७ प्र०—क्या अरिहन्त, सिद्ध, केवली साधु, प्ररूपित (कहा हुआ धर्म का स्मरण, बोलना या सुनना मंगल करता है) ?

उ०—नहीं जैसे भूखा मनुष्य भोजन के नाम से तृप्त नहीं होता लेकिन भोजन को प्राप्त कर के खावे तो भूख दूर होती है। इसी प्रकार अरिहन्तादि के गुणों का स्मरण कर के उन्हें अपनी आत्मा में प्रकट करे तो अवश्य दुःख व पापों का नाश और सुख व श्रेय की प्राप्ति होती है।

७८ प्र०—तो फिर रोज मङ्गलिक क्यों सुनते हो ?

उ०—सुनकर गुण प्रकट करने के लिये।

७९ प्र०—पञ्च पदों की वन्दना क्यों करते हैं ?

उ०—उन महापुरुषों के गुणों की याद करके उनके तुल्य-गुण प्रकट करने की भावना के लिये।

८० प्र०—केवल भावना से गुण प्रकट होते हैं ?

उ०—नहीं, केवल भावना से कार्य नहीं होता भावना के के साथ पुरुषार्थ करे तो गुण प्रकट होते हैं।

८१ प्र०—कायोत्सर्ग किसे कहते हैं ?
उ०—काया (शरीर) की प्रवृत्ति व ममता छोड़ना।

८२ प्र०—प्रतिक्रमण मे दो कार्योत्सर्ग क्यो किये जाते है ?
उ०—पहिला किये हुए पापों (अतिचारों) को स्मरण करके पश्चात्ताप करने का दूसरा पापो की शुद्धि के प्रायश्चित मे २४ तीर्थंकर प्रभु के गुण करके उन्हे प्रकट करने की भावना का।

८३ प्र०—दूसरे कार्योत्सर्ग मे ४-८१२-२० या लोगस्स के सिवाय अन्य ध्यान कर सकते हैं ?
उ०—हां, कर सकते हैं—कई जगह धर्म-ध्यान का कार्योत्सर्ग होता हे व अन्य कोई आत्मा के विषय कषाय घटे ऐसी १२ अनित्यादि भावना आदि का ध्यान कर सकते हैं। समय लोगस्स के जितना या कुछ अधिक लेना अच्छा है।

८४ प्र०—चारो आहार के ही पच्चक्खान क्यो होते है ?
उ०—ये पच्चक्खान तुरन्त ही पालन हो जाते है, यदि कोई अपने दूसरे दुर्गुण त्यागने के नियम ले तो ले सकता हैं, असली बात तो पापो को याद करते जो पाप लगा हो उसका त्याग करना अधिक हितकर है।

८५ प्र०—प्रतिक्रमण करके खमाते क्यों हैं ?

उ०—खमाने का अर्थ क्षमा मांगना, माफी मांगना है, जिनका दिल भी दुखाया हो उनकी शुद्ध हृदय से मांफी मांगनी चाहिये। क्षमा मांगने के पश्चात पुरानी बात कभी याद नहीं करनी चाहिये। जैसे मल मूत्र छोड़ कर पुनः ग्रहण नहीं करते हैं।

८६ प्र०—प्रतिक्रमण का क्या फल ?

उ०—जैसे कांटा, तीर या गोली शरीर में से निकल जावे तो बहुत सुख होता है इसी प्रकार दुर्गुण रूपी भयङ्कर शल्य [शस्त्र] आत्मा में से दूर करने से अपार शांति व सच्चा सुख प्राप्त होता है।

८७ प्र०—प्रतिक्रमण कितनी बार करना चाहिये ?

उ०—हमेशा नियम से दो बार करना चाहिये एक सुबह—रात्रि के दोषों की शुद्धि के लिये और दूसरा सायंकाल को दिन के दोषों की शुद्धि के लिये।

८८ प्र०—विस्तार पूर्वक प्रतिक्रमण न बन सके तो क्या करना ?

उ०—थोड़ी देर एकांत में बैठकर अपने कर्तव्य याद करके भूल के लिये पश्चाताप करना और भविष्य में ऐसे दोष न लगे ऐसी भावना व कोशिश करना और

पन्द्रह दिन का पक्खी प्रतिक्रमण अवश्य करने का लक्ष्य रखना।

८६ प्र०—दोष बारम्बार क्यों लगते हैं?

उ०—मन की कमजोरी व विषयों का लालच होने से दोष लगाने के असली कारणों को ढूंढ कर दूर नहीं करने से दोष बारम्बार लगते रहते हैं।

६० प्र०—प्रतिक्रमण किनको करना चाहिये?

उ०—मनुष्य मात्र को प्रतिक्रमण करना चाहिये, जैसे शरीर का मैल व मल-मूत्र दूर करने से शरीर निरोग व आनन्ददायी बनता है इसी प्रकार आत्मा का मैल दुर्गुण अर्थात् पाप है उसे दूर करने से सच्चा आनन्द मिलता है।

प्रत्याख्यान का फल

१—एक नमोकारसी करने से १०० वर्ष के अशुभ कर्मों का क्षय होता है और देव शुभ आयु का बन्ध होता है।

२—एक पहरसी करने से हजार वर्ष के अशुभ कर्मों का क्षय होता है और देव शुभ आयु का बन्ध होता है।

३—डेढ पहरसी से दश हजार वर्ष के अशुभ कर्मों का क्षय, देव शुभ आयु का बन्ध होता है।

४—दो पहरसी करने से एक लाख वर्ष के अशुभ कर्मों का क्षय। देव शुभ आयु का बन्ध होता है।

५—एक एकासना करने से दश लाख वर्ष के अशुभ कर्मों का क्षय। देव शुभ आयु का बन्ध होता है।

६—एक एकल ठाणा करने से एक करोड़ वर्ष के अशुभ कर्मों का क्षय। देव शुभ आयु का बन्ध होता है।

७—एक नीवी करने से दश करोड़ वर्ष के अशुभ कर्मों का क्षय। देव शुभ आयु का बन्ध होता है।

८—एक आयम्बिल करने से सो करोड़ वर्ष के अशुभ कर्मों का क्षय। देव शुभ आयु का बन्ध होता है।

९–एक उपवास करने से एक हजार करोड वर्ष के अशुभ कर्मों का क्षय होता हैं।
देव शुभ आयु का बन्ध होता है।

१०–उपवास पर अभिग्रह करने से दश हजार करोड वर्ष के अशुभ कर्मों का क्षय होता है।
देव शुभ आयु का वन्ध होता है।

११–उपवास पर पहर करने से दो उपवास का फल होता है।

१२–वेला करने से ५ उपवास का फल होता है।

१३–वेले पर पहर करने से २५ उपवास का फल होता है।

१४–तेला करने से १२५ उपवास का फल होता हैं।

१५–तेले पर पहर करने से ६२५ उपवास का फल होता है।

१६–चोला करने से ३१२५ उपवास का फल होता है।

१७–चोले पर पहर करने से १५६२५ उपवास का फल होता है।

१८–पचोला करने से ७८१२५ उपवास का फल होता है।
आगे एक एक उपवास वढाने से उसका पाच गुना अधिक फल होता है।

प्रश्नोत्तर

१–इलायची कुमार को नाचते नाचते केवलज्ञान की प्राप्ति हुई।

२–आषाढ़ भूति को नाटक करते करते केवलज्ञान प्राप्त हुवा।

३–कपिल मुनि को आत्म चिन्तन करते करते केवलज्ञान प्राप्त हुआ।

४–गौतम स्वामी को विप्रलाप करते करते केवलज्ञान प्राप्त हुवा।

५–मरुदेवी माता को हाथी पर बैठे बैठे केवलज्ञान प्राप्त हुवा।

६–भरत चक्रवर्ती को रूप निहारते निहारते केवलज्ञान प्राप्त हुवा।

७–प्रसन्नचन्द्र राजर्षि को ध्यान करते करते केवलज्ञान प्राप्त हुवा।

८–गजसुकुमार मुनि को शिर पर अंगारे धराते धराते केवलज्ञान प्राप्त हुवा।

९–स्कन्दक मुनि के ५०० शिष्य को घानो मे पीलते पीलते केवलज्ञान प्राप्त हुवा ।

१०–खंधकमुनि को राज सेवको द्वारा चमडी उतारते-उतारते केवलज्ञान प्राप्त हुआ ।

११–ढढणमुनि को लड्डू चूरते-चूरते केवल ज्ञान प्राप्त हुवा

१२–धर्म रुचि अणगार को कोडियो की दया पालते-पालते केवल ज्ञान प्राप्त हुआ ।

१३–कुरगडूक मुनि को आहार करते-करते केवलज्ञान प्राप्त हुवा ।

१४–मेतार्य मुनि को क्षमाभाव से उपसर्ग सहते-सहते केवल-ज्ञान प्राप्त हुआ ।

१५–मृगावतीजी को उपालम्भ सहते-सहते केवलज्ञान प्राप्त हुवा ।

१६–पुष्पचूला साध्वी को गोचरी लाते-लाते केवलज्ञान प्राप्त हुवा ।

१७–चन्द्रयश मुनि को गुरुदेव की ताडना सहते-सहते केवल-ज्ञान प्राप्त हुवा ।

१८–पन्थक मुनि को गुरुदेव की प्रताडना सहते-सहते केवल-ज्ञान प्राप्त हुवा ।

१९—रुद्राचार्य को ताडना का पश्चात्ताप करते-करते केवल-ज्ञान प्राप्त हुवा ।

२०—शैलकराय ऋषि को केवलियों को उपालम्भ देते-देते केवलज्ञान प्राप्त हुआ ।

२१—चन्दन बालाजी को आसातना का पश्चात्ताप करते-करते केवलज्ञान प्राप्त हुवा ।

२२—माता मरुदेवी को केवली को देख कर केवलज्ञान प्राप्त हुवा ।

२३—बाहुबली को शब्द सुनते-सुनते केवलज्ञान प्राप्त हुआ ।

२४—पाप भीरु सर्वार्थ सिद्ध में ? धर्मरुचि अगणार ।

२५—मामा मुक्ति में – भगवान महावीर ।
भाणजा भटके – जमाली ।

२६—ससुर मोक्ष में – भगवान महावीर ।
जंवाई भटके – जमाली ।

२७—माता मोक्ष में – सुदर्शना ।
पुत्र भटके – जमाली ।

२८—भगवान महावीर का भक्त नरक में ? – श्रेणिक ।
शत्रु देवलोक में – गोशालक

२९–किस साधु ने श्रावक को खमाया ?
गोतम स्वामी ने ।

३०–किस गुरु ने शिष्य को खमाया ?
शैलक ऋषि ने ।

३१–किस गुरुणी जी ने शिष्या को खमाया ?
चन्दनबाला ने ।

३२–मरते-मरते माफी किसने मागी ?
गोशालक ने ।

३३–प्रश्न पूछ कर सयम पथ पर कौन बढी ?
जयन्ती श्राविका ।

३४–पुकार सुनकर प्रवज्या पथ पर कौन बढे ?
भ० नेमी नाथ ।

३५–पुत्र को देखकर संयम किस ने अपनाया ?
ऋषभदत्त देवानन्दा ने ।

३६–पिता को ढू ढकर दीक्षा किसने ली ?
मनक ने ।

३७–एक बार के उपदेश से वैराग्य किस को आया ?
जम्बु कुमार को ।

३८–शिकार खेलते वैराग्य किसको आया ?
संयति राज ऋषि को ।

३९—पुष्ट सांड को दुर्बल देखकर वैराग्य किसको आया ?
करकण्डु को ।

४०—पानी की बूंद से वैराग्य किसको आया ?
धन्ना जी को ।

४१—मेरे शिर पर भी बड़े हैं ऐसे चिन्तन से वैराग्य किसको हुआ ?
शालीभद्र को ।

४२—शब्द सुनकर केवल ज्ञान किसको हुआ ?
बाहुबली को ।

४३—प्रण का पालन कर प्राण रक्षा किसने की ?
मेगरथ राजा ने ।

४४—संहार करते-करते सिद्ध मार्ग पर कौन बढ़े ?
अर्जुन माली ।

४५—स्तंभ देख कर सन्त बने ?
दुमोही राजा (दुमुख)

४६—पांचों पाण्डवों ने आलोचना करते-करते केवलज्ञान प्राप्त किया ।

४७–वगर औघा और मुखवस्त्रिका के केवल ज्ञान किसने पाया ?

मरु देवी माता और भरत चक्रवर्ती ने ।

४८–सन्तो को आहार करते देखकर वैराग्य किसे आया ?

देवभद्र यशोभद्र को ।

४६–सचित पर सिद्ध कौन हुए ?

मरुदेवी माता ।

५०–माता के हाथ से आहार लेकर सथारा किसने किया ?

शालिभद्र मुनि ने ।

५१–प्रेरणा देते स्वय का पतन हुआ किसका ?

स्कन्धक मुनि का ।

५२–एकान्त स्थान मे सावधानी किसनें रक्खी ?

राजीमति ने ।

५३–भूले हुए को सत्पथ किसने बतलाया ?

राजीमति ने ।

५४–काया की कुर्बानी से केवलज्ञान किसको प्राप्त हुआ ?

गजसुकुमार को ।

५५–चोर को देख कर कौन चेते ?

समुद्रपाल ।

५६–अदत्तादान सेवन करतें अदत्तादान का त्याग किसनें किया ?

प्रभव चोर नें।

५७–हिंसा करते हुए अहिंसा का पालन किसने किया ?

संयति राजा ने।

५८–परठने जाते परमात्मा कौन बने ?

ढ़ंढणमुनि।

५९–भोग नहीं फिर भी भोगी कौन ?

भिखारी।

६०–रोग नहीं फिर भी रोगी कौन ?

देवता (भवरोगी)

६१–१६ सतियों में ११ सतियां मोक्ष में गई—१. ब्राह्मी २. सुन्दरी ३. चन्दनबाला ४. राजीमती ५. कौशल्या ६. मृगावती ७. पुष्पचूला ८. पद्मावती ९. कुन्थी १०. शिवा ११ प्रभावती।

५–देवलोक में गई—१. सीता २. सुभद्रा ३. द्रोपदी ४. सुलसा ५. दमयन्ती।

६२–कौनसी पत्नी ने पति को तारा ?

कमलावती ने।

६३–कौनसे पति ने पत्नी को तारा ?

नेमीनाथ ने।

६४–कौन से भाई ने बहन को तारा ?

भगवान् महावीर स्वामी ने।

६५–कौनसी बहिनो ने भाई को तारा ?

ब्राह्मी और सुन्दरी ने ।

६६–कौनसे पिता ने पुत्रो को तारा ?

भगवान् ऋषभ देवने ।

६७–कौन से पुत्र नें माता-पिता को तारा ?

भ महावीर स्वामी और जम्बू स्वामी नें ।

६८–कौन से पुत्र नें माता-पिता को तारा ?

देवभद्र यशोभद्र ने ।

६९–देवता के प्रतिबोध से कौन तिरे ?

तेतलीपुत्र ।

७०–पिता के प्रतिबोध से कौन तिरे ?

अभय कुमार ।

७१–माता के प्रतिबोध से कौन तिरे ?

अरणककुमार ।

७२–पत्नी के प्रतिबोध से कौन तिरे ?

इक्षुकार राजा ।

७३–वेदना से बोध किसने पाया ?

अनाथी मुनि ने ।

७४–भाभी से बोध किसने पाया ?

रथनेमी ने ।

७५—पत्नी मिटकर शत्रु कौन बनी ?

सुरीकान्ता राणी।

७६—शिष्ट मिटकर शत्रु कौन बना ?

गौशालक।

७७—शत्रु मिटकर मित्र कौन बना ?

गौतम स्वामी।

७८—खूनी मिटकर मुनि कौन बने ?

अर्जुनमाली।

७९—साधु मिटकर संसारी कौन बने ?

नन्दीषेण।

८०—वैभव लेने गये और वैराग्य किसे आया ?

प्रभव चोर को।

८१—रूप में रागी बनकर वीतरागी कौन बने ?

भरत चक्रवर्ती।

८२—रागी को त्यागी किसने बनाया ?

स्थूलिभद्र ने कोशा वेश्या को।

८३—बन्धन में रहकर बन्धन किसने तोड़े ?

चन्दन बाला ने।

८४—स्वाद को आसक्ति में अनन्त संसार किसने बढ़ाया ?

कुण्डरिकजी ने।

८५–मुखवस्त्रिका देखकर वैराग्य किसको हुआ ?
आर्द्र कुमार को ।

८६–दुर्गति मे रहकर दुर्गति किसने टाली ?
चण्ड कौशिक ने ।

८७–स्वाद की विरक्ति से अनन्त ससार किसने घटाया-?
धन्ना अणगार ने ।

८८–प्रेरणा देने वाले का पतन हुआ, किसका ?
स्कन्ध मुनि का ।

८९–प्रेरणा लेने वालो का मोक्ष हुआ ?
स्कन्ध मुनि के ५०० शिष्यो का ।

९०–जगल मे कौन-से राजा को रत्न मिला ?
श्रेणिक राजा को सम्यक्त्व रत्न ।

९१–भगवान् अरिष्टनेमी के शासन मे ४ प्राणियो ने तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया–
श्रीकृष्ण और कृष्ण की माता देवकी ने ।
वलभद्र और वलभद्र की माता रोहिणी ने ।

९२–भगवान् महावीर के शासन मे ९ प्राणियो ने तीर्थंकर गोत्र उपार्जन किया ।
१ श्रेणिक राजा, २ सुपास भगवान् महावीर के चाचा, ३ राजा उदाई कोणिक का बेटा, ४ पोटिल

अणगार भगवान् महावीर के शिष्य, ५. शंखजी, ६. शतकजी भगवान् महावीर के श्रावक, ७. सुलसा, ८. रेवति, भगवान् महावीर की श्राविका, ९. दृढ़ आयु

९३–कायम में कंगाल कौन ?

अभव्य जीव।

९४–२४ तीर्थंकर के शासन में ८ अभव्य हुए–

१. संगम, २. कालिक, ३. कपिला दासी, ४. अंगार मर्दन आचार्य, ५. सोमिल ब्राह्मण, ६. नमुची प्रधान ७. पालोक, ८. विनय रत्न।

९५–ऐसी कौन सी वस्तु है जो एक जावे और दो आवे ?

छद्मस्थपन जावे और केवलज्ञान, केवलदर्शन आवे।

९६–लोक भीरु नरक में ? नाग श्री।

९७–अग्निमित्राचार्य ने नदी में डुबकियें खाते-खाते केवल-ज्ञान प्राप्त किया।

९८–६३ श्लाघनीय पुरुष कौन-कौन से हैं ?

२४ तीर्थंकर १२ चक्रवर्ती ९ बलदेव ९ वासुदेव ९ प्रतिवासुदेव।

९९–ये ६३ कौन-कौनसी गति में गये ?

४२ मोक्ष में गये २० नरक में गये, १ स्वर्ग में गये।

२३ तीर्थंकर १० चक्रवर्तो ८ वलदेव ये ४७ मोक्ष में
२ चक्रवर्तो ६ प्रतिवासुदेव ६ वासुदेव ये २० नरक
मे, वलदेव जो पांचवे स्वर्ग मे ।

१००—१ पति पत्नी दोनो मोक्ष मे ?
ऋषभदत्त और देवानन्दा ।
२—पति मोक्ष मे पत्नी नरक मे ?
चक्रवर्ती मोक्ष मे, पत्नी नरक मे ।
३—पत्नी मोक्ष मे, पति नरक मे ?
कृष्ण की पत्नियें मोक्ष मे, कृष्ण नरक मे ।
४—पति पत्नी दोनो नरक मे ?
ब्रह्मदत्त व सम्भूम चक्रवर्त्ती दोनो नरक मे, व
उनकी रानिया भी नरक मे ।

लघु गौतम पृच्छा

मंगलाचरण

मंगलं भगवान् वीरो; मंगलं गौतम प्रभुः ।।
मंगलं स्थूलभद्राद्यो; जैन धर्मस्तु मंगलम् ।। १ ।।

पाठकों ! केवल ज्ञान के धारक श्री भगवान् महावीर स्वामी से श्री गौतम स्वामी ने विनयपूर्वक प्रश्न किये । उन प्रश्नों में से कुछ प्रश्न यहाँ उद्धृत करते हैं ।

(१) प्रश्न—हे प्रभो ! मनुष्य निर्धन और कंगाल किस पाप के उदय से होता है ?

उत्तर—हे गौतम ! जिसने दूसरे के धन को चुराया हो; दान देते हुए को मना किया हो वह मनुष्य निर्धन और कङ्गाल होता है ।

(२) प्रश्न—हे भगवन् ! भोग उपभोग की सामग्रियाँ सभी स्वाधीन होते हुए भी जो मनुष्य उन्हें भोग नहीं सकता यह किस पाप के उदय से ?

उत्तर—हे गौतम ! जो मनुष्य दान पुण्य कर फिर उसका पश्चात्ताप करता है कि मैंने बहुत बुरा

किया है वह नर भोग (वह चीज जो एक वक्त ही काम मे आ सकती हो जैसे भोजन वगैरह) और उपभोग (जो वार वार काम मे आ सकती हो जैसे वस्त्र आभूषण वगैरह की सामग्रियाँ स्वाधीन होते हुए भी उन्हे भोग नहीं सकता हैं।

(३) प्रश्न–हे भगवन् ! किसी-किसी मनुष्य के सन्तान नहीं होती है वह किस पाप के उदय से ?

उत्तर–हे गौतम ! रास्ते पर के हरे भरे वृक्षो को काटने या दूसरो से कटवाने से उस मनुष्य के सन्तान नहीं होती हैं।

(४) प्रश्न–हे भगवन् ! स्त्री जो वध्या होती हैं वह किस पाप से होती हे ?

उत्तर–हे गौतम ! औषधि आदि द्वारा गर्भ गलाने से या सगर्भा मादा (स्त्री जाति) जानवरो को मारने से स्त्री वध्या होती है।

(५) प्रश्न–हे भगवन् ! जिस स्त्री के लडका या लडकी जन्मते ही मर जाते हैं ऐसी मृत वध्या किस पाप के उदय से होती है ?

उत्तर–हे गौतम ! बैंगन ओर कंद को हँस हँस कर खाने से तथा मुर्गी आदि के अंडों के पान करने से स्त्री मृत बंध्या होती है ।

(६) प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य एक आँख से काना किस पाप से होता है ?

उत्तर–हे गौतम ! जो हरी सब्जी (वनस्पति) को शस्त्र आदि से छेदन भेदन करता है । तथा फल फूल बीज आदि में सूई से छेदन भेदन कर उन्हें धागे में पिरो कर गजरा हार बनाता है वह मनुष्य एक आँख से काना होता है ।

(७) प्रश्न–हे भगवन् ! किसी किसी स्त्री के अधूरे गर्भ गिर जाते हैं वह किस पाप से ?

उत्तर–हे गौतम ! वृक्षों के कच्चे फल तोड़ने से और झाड़ों पर पत्थर फेंकने से स्त्रियों के कच्चे ही गर्भ गिर जाते हैं ।

(८) प्रश्न–हे भगवन् ! जो जीव गर्भ में तथा योनी के समीप अटक कर मर जाता है वह किस पाप के उदय से ?

उत्तर–हे गौतम ! दूसरे के अवगुणावाद बोलने से और झूँठ बोलने से तथा निर्दोषयुक्त आहार पानी देने से गर्भ मे तथा योनि के समीप रुक कर जीव मर जाता है। फिर उसके शरीर को शस्त्रादि से काट काट कर बाहर निकालते हैं।

(९) प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य किस पाप से अन्धा होता है ?

उत्तर–हे गौतम ! शहद के छत्ते के नीचे धूम्र वगैरह का प्रयोग करता हुआ मक्षिकाओ को जलाकर छत्ता गिरा देने से मनुष्य अन्धा होता हे।

(१०) प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य किस पाप के उदय से गूंगा होता है ?

उत्तर–हे गौतम ! छिद्रान्वेषी बन कर जो देव, गुरु की निन्दा करता है वह मनुष्य गूंगा होता है।

(११) प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य किस पाप से बहरा होता हे ?

उत्तर–हे गौतम ! जो लुक छिपकर दूसरे की निन्दा

सुनने में रत रहता हो और कपट युक्त मीठे-मीठे शब्द बोल कर दूसरे के हृदय का भेद पा लेने में प्रयत्नशील हो। बस इसी पाप के बोझे से वह बहरा होता है।

(१२) प्रश्न—हे भगवन् ! जो मनुष्य रात दिन आधि-व्याधियों से घिरा रहता हो वह किस पाप के उदय से ?

उत्तर—हे गौतम ! बड़ पीपल के फलों तथा गुलरों को हँस-हँस कर खाने से एवं चूहे आदि जानवर पकड़ने के पींजरों एवं फन्दों को बेचने से वह मनुष्य दिन रात कुछ न कुछ रोग से घिरा ही रहता है।

(१३) प्रश्न—हे भगवन् ! मनुष्य इतना स्थूल शरीर वाला जो कि किसी प्रकार से अपना शारीरिक कार्य भी अपने हाथों से न कर सके ऐसा बे डौल-डौल का शरीर किस पाप से होता है ?

उत्तर—हे गौतम ! अपने सेठ की चोरी करने से तथा अपने आप ही साहुकार बन दूसरे का धन हड़प कर लेने से मनुष्य बे डौलडौल वाला स्थूल शरीरी होता है।

(१४) प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य कुष्ट (कोढ) रोग वाला किस पाप कर्म के फल से होता हे ?

उत्तर–हे गोतम ! मयूर, सर्प, विच्छू आदि के मारने से तथा जगल मे दावाग्नि लगा देने से मनुष्य कोढी होता हे ।

(१५) प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य के शरीर मे जलन ही जलन होती हो ऐसी दाह ज्वर की वीमारी किस पाप से होती है ?

उत्तर–हे गौतम ! घोडे, बैल आदि पशुओ को भूखे और प्यासे रखने से तथा उन पर हैसियत से अधिक बोझा लाद (भर) देने से दाह ज्वर की वीमारो होता है ।

(१६) प्रश्न–हे भगवन् ! किसी-किसी मनुष्य का चित्त भ्रम हो जाता है वह किस पाप से होता है ?

उत्तर–हे गौतम ! अभिमान करने से तथा मदिरा मास और गुप्त रीति से अनाचारो का सेवन करने से मनुष्य का चित्त भ्रम हो जाता है ।

(१७) प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य के पत्थरी की व्याधि किस पाप से होती है ?

उत्तर—हे गौतम ! जो मनुष्य पुत्री, बहन, माता, मासी आदि कहकर उनके साथ गुप्त-रीति से व्यभिचार सेवन करता है उसके पत्थरी की बीमारी होती है।

(१८) प्रश्न—हे भगवन् ! स्त्री, पुरुष, पुत्र और शिष्य आदि किस पाप के फल स्वरूप में कुपात्र होते हैं ?

उत्तर—हे गौतम ! निष्कारण ही सगे स्नेहियों के साथ या दूसरे मनुष्यों के बीच में बैर को खड़ा कर देते हैं अथवा बढ़ा देते हैं वे कुपात्र होते हैं।

(१९) प्रश्न—हे भगवन् ! मनुष्य के बड़े ही लाड़ प्यार से पाला पोषा हुआ पुत्र युवावस्था ही में मर जाता है वह किस पापोदय से ?

उत्तर—हे गौतम ! दूसरों की रखी हुई अमानत को हड़प कर जाने से पाला पोषा हुआ पुत्र मर जाता है।

(२०) प्रश्न—हे भगवन् ! मनुष्य के पेट का रोग किस पाप से होता है ?

उत्तर–हे गौतम ! पंच महाव्रतधारी मुनि को नीरस और असाताकारी आहार देने से मनुष्य के पेट मे रोग उत्पन्न होता है ?

(२१) प्रश्न–हे भगवन् ! कोई-कोई स्त्री वाल विधवा हो जाती है वह किस पाप से होती है ।

उत्तर–हे गौतम ! अपने आपको तो सती कहलाती है पर अपने पति का पूरा-पूरा अपमान करने मे राई रत्ती भर भी कोर कसर नहीं रखती हे । कपट तो उसके जीवन के साथ साथी होकर रहता है और पर पुरुष के साथ व्यभिचार सेवन मे वह कभी चूकती भी नहीं है वही स्त्री वाल विधवा होती है ।

(२२) प्रश्न–हे भगवन् ! वेश्या किस पाप कर्म के फल से होती है ?

उत्तर–हे गौतम ! उत्तम कुल की विधवा स्त्री के दिल मे विषयभोग सेवन करने की तीव्र अभिलाषा होते हुए भी वह अपने माता, पिता, सासु, श्वसुर, पीहर, सासरे की लज्जा से अनिच्छापूर्वक शील को पालन करती है

वह स्त्री मरकर वेश्या होती है। फिर चाहे वह स्वर्ग में भी जावे तो उसी श्रेणी की देवियों में ही उत्पन्न होती है। अगर वह विधवा स्त्री इच्छापूर्वक शील पाले तो इह लोक परलोक दोनों सुधरे।

(२३) प्रश्न—हे भगवन्! किसी-किसी मनुष्य की अल्प समय में ही स्त्रियाँ मर जाया करती हैं। इसका क्या कारण है?

उत्तर—हे गौतम! जिस मनुष्य ने किये हुए त्याग नियमों का भंग किया हो तथा चरती हुई गौ को जोरों से मारी हो उस मनुष्य की स्त्रियाँ थोड़े-थोड़े समय में ही मर जाया करती हैं।

(२४) प्रश्न—हे भगवन्! मनुष्य काला कुवर्ण किस पाप से होता है?

उत्तर—हे गौतम! जो मनुष्य कोतवाल होकर द्रव्यादि की लालसा से लोगों से कहे कि तुम अमुक सरकार के गुनहगार हो ऐसे झूठे इल-जाम उनके सिर लगा के उनके मार्मिक स्थान एवं हाथ, पाँव, नाक, कान आदि अवयवों को छेदन भेदन किया हो तथा जिसने अपने शरीर

के सुन्दर रूप का अभिमान किया हो वह काला कुरूप वाला मनुष्य होता है।

(२५) प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य के शरीर मे कीडे किस पाप से पड जाते हैं ?

उत्तर–हे गौतम ! जिस मनुष्य ने मच्छी, कॅकडे, आदि मूक जीवो को त्रास पूर्वक मारकर खूब खाया हो उस मनुष्य के शरीर मे कीडे पड जाया करते हैं।

(२६) प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य या स्त्री पर मिथ्या कलक किस पाप से आता है ?

उत्तर–हे गौतम ! जिसने दूसरे के सिर पर जैसा मिथ्या कलक दिया हो वैसा मिथ्या कलक उस मनुष्य या स्त्री के सिर पर भी आता है।

(२७) प्रश्न–हे भगवन् ! कोई भी रोजी आदि की प्राप्ति मे बाधा (विघ्न) आकर खड़ी होती है वह किस पाप से है ?

उत्तर–हे गौतम ! अन्य जीवो को भोगोपभोग की सामग्रिया मिलती हो उनमे रोड़े अटका दिये हो तथा रोजी एव व्यापार आदि मे भी

बाधा खड़ी कर दी हो उस मनुष्य के प्रत्येक वस्तु की प्राप्ति में बाधा आ खड़ी होती है।

(२८) प्रश्न—हे भगवन् ! नपुन्सक किस पाप से होता है ?

उत्तर—हे गौतम ! जो बैल, घोड़े, मनुष्य आदि के अंडकोषों को शस्त्र पत्थर आदि से छेदन करता हो तथा औषधि आदि के द्वारा मर्द को नामर्द (नपुन्सक) बनाता हो अथवा कपट सेवन करने में चूर-चूर रहता हो बस वही नपुन्सक होता है।

(२९) प्रश्न—हे भगवन् ! मनुष्य मर कर नरक में किस पाप कर्म के उदय से जाता है ?

उत्तर—हे गौतम ! जुआ खेलने से, मांस खाने से, मदिरा पीने से, वेश्या और पर-स्त्री गमन करने से, मनुष्य नरक में जाता है।

(३०) प्रश्न—हे भगवन् ! लक्ष्मीवान् किस पुण्य के फल से होता है ?

उत्तर—हे गौतम ! सुपात्र (मुनि) पात्र श्रावक अल्पपात्र (सम्यक्‌दर्शी) आदि को साताकारी आहार पानी देने से तथा अनाथ, दीन अना-

श्रितो को समय-समय पर उचित दान देने से मनुष्य लक्ष्मीवान् होता है।

(३१) प्रश्न–हे भगवन्! जिस मनुष्य के सत्य कहने पर भी उसके वचनो पर कोई विश्वास नहीं रखता है इसका क्या कारण है?

उत्तर–हे गौतम! जिस मनुष्य ने झूँठी गवाही (साक्षी) दी हो उस पाप के फलस्वरूप उसके वचनो को न तो कोई सत्य ही समझता है और न उसके वचनो पर विश्वास ही रखता है।

(३२) प्रश्न–हे भगवन्! इच्छित भोगोपभोग की सामग्रियां किस पुण्योदय से मिलती है?

उत्तर–हे गौतम! जिस मनुष्य ने प्राणी दया तथा परोपकार खूब ही किया हो उस मनुष्य को मन इच्छित भोग मिलते है।

(३३) प्रश्न–हे भगवन्! सुन्दर रूप लावण्य, चातुर्य आदि की प्राप्ति किस शुभ करणी से होती है?

उत्तर–हे गौतम! जिनाज्ञा पूर्वक जिसने ब्रह्मचर्य

पाला हो और तपस्या की हो वह सुन्दर रूप सम्पदादि पाता है।

(३४) प्रश्न—हे भगवन् ! स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति किससे होती है ?

उत्तर—हे गौतम ! जिस मनुष्य ने सम्यक् प्रकार से तप संयम की आराधना की हो वह मनुष्य स्वर्ग और मोक्ष के सुखों को प्राप्त करता है।

(३५) प्रश्न—हे भगवन् ! मनुष्य को दुःखमयी दीर्घ जीवन किस दुर्भाग्य से मिलता है ?

उत्तर—हे गौतम ! चलते फिरते त्रस जीवों की हिंसा करने से, मिथ्या भाषण करने से और मुनि को असाताकारी आहार पानी देने से मनुष्य को दुःखमयी दीर्घ जीवन मिलता है।

(३६) प्रश्न—हे भगवन् ! मनुष्य को सुखमयी दीर्घ जीवन किस पुण्य फल से मिलता है ?

उत्तर—हे गौतम ! त्रस जीवों की रक्षा करने से, सत्य भाषण करने से, और मुनियों को निर्दोष साताकारी आहार पानी देने से सुखमयी दीर्घ जीवन मनुष्य को मिलता है।

(३७) प्रश्न–हे भगवन् ! वहुत ऐसे मनुष्य हैं जिनको भय होता ही नहीं है वह किस पुण्योदय के फल-स्वरूप मे ?

उत्तर–हे गौतम ! भय से भयभीत जीवो को निर्भयी किये हो अर्थात् अभयदान देने से मनुष्य निर्भयी होता है।

(३८) प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य ताकतवर किन शुभ कर्मो से होता है ?

उत्तर–हे गौतम ! जिसने वृद्ध, तपस्वी और व्याधि वाले की वैयावृत्य (सेवा) खूब ही जी तोड-कर की हो वह मनुष्य बलवान होता है।

(३९) प्रश्न–हे भगवन् ! जिस के वचनो मे मधुरता टप-कती हो सभी उसके वचनो को सुनकर आनन्द मानते वह किस शुभ कर्म के फल स्वरूप मे ?

उत्तर–हे गौतम ! सारे जीवन मे जिसने सत्य भाषण का ही प्रयोग किया हो वह प्रिय वचनी होता है। उसके वचन श्रवण कर आनन्दित होते हैं।

(४०) प्रश्न–हे भगवन् ! कोई मनुष्य ऐसा होता है जो सभी कोवल्लभ लगता है इसका क्या कारण है ?

उत्तर–हे गौतम ! जिसने खूब ही धर्म आराधना की हो वह मनुष्य सभी को वल्लभ होता है ।

(४१) प्रश्न–हे भगवन् ! सर्व मान्य किस कारण से होता है ?

उत्तर–हे गौतम ! परहित कार्य करने से मनुष्य सर्व प्रिय होता है ।

(४२) प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य नीच जाति में किस पाप से पैदा होता है ?

उत्तर–हे गौतम ! जाति अहंकार करने से नीच जाति में पैदा होता है ।

(४३) प्रश्न–हे भगवन् ! हीन कुल में किस पाप से पैदा होता है ?

उत्तर–हे गौतम ! कुल का अहंकार करने से हीन-कुल होता है ।

(४४) प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य किस पाप से दुर्बल होता है ?

उत्तर—हे गौतम ! वल का घमण्ड करने से दुर्बल होता है ।

(४५) प्रश्न—हे भगवन् ! मनुष्य जन्म किस करणी से मिलता है ?

उत्तर—हे गौतम ! जो जीव प्रकृतिका विनीत हो भद्रिक हो, अमात्सर्य भावी हो और विषम-वाद करके रहित हो वह जीव मनुष्यजन्म पाता है ।

(४६) प्रश्न—हे भगवन् ! किसी मनुष्य के एक पैसे की भी आमदनी न होती हो वह किस पाप कर्म से ?

उत्तर—हे गौतम ! पैसे की खूब आमदनी देखकर जिसने घमण्ड किया हो उसे विशेष आर्थिक प्राप्ति नहीं होती है ।

(४७) प्रश्न—हे भगवन् ! किसी मनुष्य को व्रत उपवास करने मे महान् कष्ट होता है जिससे उपवास व्रत एकासना आदि उससे बिलकुल बन नहीं आते इसका क्या कारण है ?

उत्तर—हे गौतम ! तपस्या का घमण्ड करने से अर्थात् ऐसा विचार करे कि मेरे सात-सात

(४८) प्रश्न–हे भगवन् ! सूत्र सिद्धान्तों का ज्ञान महान् परिश्रम के साथ अभ्यास करने पर भी प्राप्त नहीं होता है इसका क्या कारण ?

उत्तर–हे गौतम ! जिसने बहुत से सिद्धांतों का ज्ञान सम्पादन कर घमण्ड किया हो उस मनुष्य को ज्ञान प्राप्त नहीं होता।

(४९) प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य चाकरपने में किस पाप से पैदा होता है ?

उत्तर–हे गौतम ! ऐश्वर्यता का अर्थात् मैं अरबपति हूं, मैं छत्रपति हूं, मैं पृथ्वीपति हूं, मैं सार्वभौम नरेन्द्र हूं, इस प्रकार ऐश्वर्यता का घमण्ड करने से मनुष्य को चाकरपना (दासवृत्ति) प्राप्त होती है।

(५०) प्रश्न–हे भगवन् ! सुर, असुर, देव, दानव, इन्द्र और पूजनिक किन शुभ कामों से होता है ?

उत्तर–हे गौतम ! जिसने मन, वचन और काया से शुद्धतापूर्वक अखण्ड ब्रह्मचर्य पाला हो वह मनुष्य इन्द्र नरेन्द्रों के द्वारा पूजनीय होता है।

(५१) प्रश्न–हे भगवन् ! चौहद पूर्व का सार क्या है ?

उत्तर–हे गौतम ! चौदह पूर्व का सार नमस्कार मन्त्र है ।

(५२) प्रश्न–हे भगवन् ! बाल वय ही मे माता-पिता किस पापोदय से मरते हैं ?

उत्तर–हे गौतम ! मनुष्य पशु आदि के छोटे-छोटे बच्चो के माताओ को मारने वाले प्राणी के बचपन मे ही माता पिता मर जाते हैं ।

(५३) प्रश्न–हे भगवन् ! स्त्री पुरुष के परस्पर विरोध भाव किस कारण से होता है ?

उत्तर–हे गौतम ! पूर्व भव मे स्त्री-भरतार के परस्पर का प्रेम-भाव तुडा देने से वैर विरोध होता है ।

(५४) प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य पंगुला किस पाप से होता है ?

उत्तर–हे गौतम ! पैरो से प्राणधारी जीवो को मसल (कुचल) कर मार देने से जीव पगुला होता है ।

(५५) प्रश्न–हे भगवन् ! मनुष्य के फोडे फुन्सी आदि किस पाप से होते हैं ?

उत्तर–हे गौतम ! फलों के अन्दर मसाले भर-भर कर भड़ीते किये हों तथा उन्हें तल भूंज कर के हँस-हँस कर खाये हों उस मनुष्य के फोड़े फुन्सी होते हैं ।

(५६) प्रश्न–हे भगवन् ! क्रोड़ों रुपये की सम्पत्ति पाकर के भी उसके द्वारा सुख नहीं भोग सकता इसका क्या कारण है ?

उत्तर–हे गौतम ! जिसने दान देकर पश्चाताप किया हो वह सम्पत्ति मिलने पर भी सुख नहीं भोग सकता ।

(५७) प्रश्न–हे भगवन् ! अनायास लक्ष्मी की प्राप्ति किस पुण्य से होती है ?

उत्तर–हे गौतम ! गुप्त दान देने से अनायास अखूट लक्ष्मी मिलती है ।

—

आनुपूर्वी खण्ड

- तीर्थंकर स्मरणानुपूर्वी
- पंचपदानुपूर्वी

आनुपूर्वी पढ़ने की विधि

इस तीर्थंकर स्मरणानुपूर्वी मे तीर्थंकरो का नाम लिया जायेगा। जहा जो सख्या हो वहा उन्हीं तीर्थंकर का नाम लेवें तथा २५ वीं सख्या मे श्री गौतम स्वामी का नाम लिया जायगा। क्रम संख्या सरलता पूर्वक याद रखिये।

१ श्री ऋषभदेव जी
२ श्री अजितनाथ जी
३ श्री सभवनाथ जी
४ श्री अभिनदन जी
५ श्री सुमतिनाथ जी
६ श्री पदम प्रभु जी
७ श्री सुपारसनाथ जी
८ श्री चन्दाप्रभु जी
९ श्री सुविधिनाथ जी
१० श्री शीतलनाथ जी
११ श्री श्रेयासनाथ जी
१२ श्री वासुपूज्य जी
१३ श्री विमलनाथ जी
१४ श्री अनन्तनाथ जी
१५ श्री धर्मनाथ जी
१६ श्री शान्तिनाथ जी
१७ श्री कुन्थूनाथ जी
१८ श्री अरहनाथ जी
१९ श्री मल्लिनाथ जी
२० श्री मुनिसुव्रत जी
२१ श्री नमिनाथ जी
२२ श्री अरिष्टनेमी जी
२३ श्री पारसनाथ जी
२४ श्री महावीर स्वामी जी

+ २५ श्री गौतम स्वामी जी +

तीर्थंकर स्मरणानुपूर्वी

दोहा १–तीर्थंकर सुमिरण करे, पाप सकल टल जाय ।
तीर्थंकर गुण गावतां, गौत्र तीर्थंकर पाय ॥
२–आरोग्य बोधि लाभ हो, निर्मल चन्द्र समान ।
सागर सम गम्भीर गुण, मिले पलक में आन ॥
३–भूत प्रेत रहते नहीं, ज्वर मिट सोख्य सानन्द ।
जिस घर में जिन जाप हो, ताँ घर परम आनन्द ॥
४–राग द्वेष को छोड़ कर, धरो जिनन्द का ध्यान ।
अष्ट कर्म को नष्ट कर, पावो पद निर्वाण ॥



ग्रहों पर प्रभाव देने वाले यन्त्र

जिस व्यक्ति को जो ग्रह हो, उसी वार को निम्न यन्त्र लिखें या पढ़ें–

रविवार–६
सोमवार–८
मंगलवार–१२
बुधवार–१३–१४–१५–१६–१७–१८–२१–२४
वृहस्पतिवार–१–२–३–४–५–७–१०–११
शुक्रवार–९
शनिवार–२०
शनिवार–राहु के लिये २२
शनिवार–केतु के लिये १९–२३



૧	૭	૧૩	૧૯	૨૫
૧૮	૨૪	૫	૬	૧૨
૧૦	૧૧	૧૭	૨૩	૪
૨૨	૩	૯	૧૫	૧૬
૧૪	૨૦	૨૧	૨	૮

૨	૮	૧૪	૨૦	૨૧
૧૯	૨૫	૧	૭	૧૩
૬	૧૨	૧૮	૨૪	૫
૨૩	૪	૧૦	૧૧	૧૭
૧૫	૧૬	૨૨	૩	૯

३	९	१५	१६	२२
२०	२१	२	८	१४
७	१३	१९	२५	१
२४	५	६	१२	१८
११	१७	२३	४	१०

४	१०	११	१७	२३
१६	२२	३	९	१५
८	१४	२०	२१	२
२५	१	७	१३	१९
१२	१८	२४	५	६

५	६	१२	१८	२४
१७	२३	४	१०	११
९	१५	१६	२२	३
२१	२	८	१४	२०
१३	१९	२५	१	७

६	१२	१८	२४	५
२३	४	१०	११	१७
१५	१६	२२	३	९
२	८	१४	२०	२१
१९	२५	१	७	१३

७	१३	१९	२५	१
२४	५	६	१२	१८
११	१७	२३	४	१०
३	९	१५	१६	२२
२०	२१	२	८	१४

८	१४	२०	२१	२
२५	१	७	१३	१९
१२	१८	२४	५	६
४	१०	११	१७	२३
१६	२२	३	९	१५

९	१५	१६	२२	३
२१	२	८	१४	२०
१३	१९	२५	१	७
५	६	१२	१८	२४
१७	२३	४	१०	११

१०	११	१७	२३	४
२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२

११	१७	२३	४	१०
३	९	१५	१६	२२
२०	२१	२	८	१४
७	१३	१९	२५	१
२४	५	६	१२	१८

१२	१८	२४	५	६
४	१०	११	१७	२३
१६	२२	३	९	१५
८	१४	२०	२१	२
२५	१	७	१३	१९

૧૩	૧૯	૨૫	૧	૭
૫	૬	૧૨	૧૮	૨૪
૧૭	૨૩	૪	૧૦	૧૧
૯	૧૫	૧૬	૨૨	૩
૨૧	૨	૮	૧૪	૨૦

૧૪	૨૦	૨૧	૨	૮
૧	૭	૧૩	૧૯	૨૫
૧૮	૨૪	૫	૬	૧૨
૧૦	૧૧	૧૭	૨૩	૪
૨૨	૩	૯	૧૫	૧૬

१५	१६	२२	३	९
२	८	१४	२०	२१
१९	२५	१	७	१३
६	१२	१८	२४	५
२३	४	१०	११	१७

१६	२२	३	९	१५
८	१४	२०	२१	२
२५	१	७	१३	१९
१२	१८	२४	५	६
४	१०	११	१७	२३

१७	२३	४	१०	११
९	१५	१६	२२	३
२१	२	८	१४	२०
१३	१९	२५	१	७
५	६	१२	१८	२४

१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४
२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५

१९	२५	१	७	१३
६	१२	१८	२४	५
२३	४	१०	११	१७
१५	१६	२२	३	९
२	८	१४	२०	२१

२०	२१	२	८	१४
७	१३	१९	२५	१
२४	५	६	१२	१८
११	१७	२३	४	१०
३	९	१५	१६	२२

२१	२	८	१४	२०
१३	१९	२५	१	७
५	६	१२	१८	२४
१७	२३	४	१०	११
९	१५	१६	२२	३

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	२४

२३	४	१०	११	१७
१५	१६	२२	३	९
२	८	१४	२०	२१
१९	२५	१	७	१३
६	१२	१८	२४	५

२४	५	६	१२	१८
११	१७	२३	४	१०
३	९	१५	१६	२२
२०	२१	२	८	१४
७	१३	१९	२५	१

२५	१	७	१३	१९
१२	१८	२४	५	६
४	१०	११	१७	२३
१६	२२	३	९	१५
८	१४	२०	२१	२

॥ इति ॥

॥ श्री तीर्थङ्कर स्मर्णानुपूर्वी ॥



अनानुपूर्वी गुणवारी विधि

जहां १ है वहां—णमो अरिहंताणं बोलना
जहां २ है वहां—णमो सिद्धाणं बोलना
जहां ३ है वहां—णमो आयरियाणं बोलना
जहां ४ है वहां—णमो उवज्झायाणं बोलना
जहां ५ है वहां—णमो लोए सव्व साहूणं बोलना



अनानुपूर्वी गुणवानों फल

अनानुपूर्वी गुण जे जोय, छमासी तपनो फल होय।
सन्देह मत ना आणो लिगार, निर्मल मन जपो नवकार।
शुद्ध हृदय धरी विवेक, दिन-दिन प्रते गुण णी एक।
एम अनानुपूर्वी जो गुणे, पांच सो सागर नो पाप हणे।
अशुभ कर्म को हरण को, मंत्र बड़ो नवकार।
वाणी द्वादस अंग ने, देख लियो तत्व सार।

	२	३	४	५
२	१	३	४	५
१	३	२	४	५
३	१	२	४	५
२	३	१	४	५
३	२	१	४	५

१	२	४	३	५
२	१	४	३	५
१	४	२	३	५
४	१	२	३	५
२	४	१	३	५
४	२	१	३	५

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१	२	३	५	४
२	१	३	५	४
१	३	२	५	४
३	१	२	५	४
२	३	१	५	४
३	२	१	५	४

१	२	५	३	४
२	१	५	३	४
१	५	२	३	४
५	१	२	३	४
२	५	१	३	४
५	२	१	३	४

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

१	२	५	४	३
२	१	५	४	३
१	५	२	४	३
५	१	२	४	३
२	५	१	४	३
५	२	१	४	३

१	२	४	५	३
२	१	४	५	३
१	४	२	५	३
४	१	२	५	३
२	४	१	५	३
४	२	१	५	३

३	३	३	३	३	३
१	१	१	१	१	१
५	५	४	४	२	२
४	२	५	२	५	४
२	४	२	५	४	५

३	३	३	३	३	३
२	२	२	२	२	२
५	५	४	४	१	१
४	१	५	१	५	४
१	४	१	५	४	५

२	३	४	५	१
३	२	४	५	१
२	४	३	५	१
४	२	३	५	१
३	४	२	५	१
४	३	२	५	१

२	३	५	४	१
३	२	५	४	१
२	५	३	४	१
५	२	३	४	१
३	५	२	४	१
५	३	२	४	१

१	१	१	१	१	१
२	२	२	२	२	२
५	५	४	४	३	३
४	३	५	३	५	४
३	४	३	५	४	५

१	१	१	१	१	१
३	३	३	३	३	३
५	५	४	४	२	२
४	२	५	२	५	४
२	४	२	५	४	५

शान्ति पाठ

२१ बार पढना

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३